रांची से प्रकाशित लोकप्रिय दैनिक

अलग पहचान

सत्य की उड़ान

शुक्रवार
13 नवम्बर -2026
वर्ष 11, अंक 63
पेज 8, मूल्य 2 रुपए
रांची



तेलंगाना में 14 नवंबर को गिग वर्कर्स के लिए कल्याण बोर्ड होगा शुरू

राहुल गांधी हैदराबाद में डिलीवरी बॉय और कैब ड्राइवरों से मिलेंगे

हैदराबाद (एजेंसी)। राहुल गांधी 14 नवंबर को हैदराबाद में गिग और प्लेटफॉर्म वर्कर्स के कार्यक्रम और रैली में शामिल होंगे। इस दौरान डिलीवरी एग्जीक्यूटिव, कैब ड्राइवर और ऐप आधारित सेवाओं से जुड़े अन्य कर्मचारियों से बातचीत करेंगे। वर्कर्स राहुल के सामने अपनी समस्याएं और मांगें रखेंगे। कार्यक्रम हैदराबाद इंटरनेशनल कन्वेंशन सेंटर के पास होगा। इसके साथ गिग वर्कर्स की छोटी रैली भी निकाली जाएगी। इस दौरान वर्कर्स के लिए वेलफेयर बोर्ड की शुरुआत भी होगी, जो राज्य में उनके लिए कानून और



कल्याणकारी योजनाएं लागू करेगा। कार्यक्रम में गिग वर्कर्स की सामाजिक सुरक्षा, दुर्घटना बीमा, स्वास्थ्य सुविधाएं, रोजगार सुरक्षा, रजिस्ट्रेशन और शिकायतों के समाधान पर चर्चा होगी।

तेलंगाना में 2 जून से लागू है गिग वर्कर्स का कानून

तेलंगाना सरकार ने गिग और प्लेटफॉर्म वर्कर्स के लिए तेलंगाना प्लेटफॉर्म-बेस्ड गिग वर्कर्स (रजिस्ट्रेशन, सोशल सिक्योरिटी एंड वेलफेयर) एक्ट, 2026 बनाया है। यह कानून 2 जून से लागू हो चुका है। अब 14 नवंबर को इस कानून के तहत बनाए गए नियमों की अधिसूचना जारी होगी। तेलंगाना गिग एंड प्लेटफॉर्म वर्कर्स यूनियन के संस्थापक और प्रदेश अध्यक्ष शेख सलाउद्दीन के मुताबिक, राहुल गांधी का दौरा गिग वर्कर्स के लिए महत्वपूर्ण है।

पंजाब में बीजेपी वर्सेज आप में बंटे 'डेरे'

● डेरा सचखंड बल्लां के भक्त भी हो गए दो फाड़ ● समरसता संकल्प यात्रा से पहले गरमाई राजनीति

जालंधर (एजेंसी)। पंजाब के जालंधर स्थित डेरा सचखंड बल्लां में प्रबंधन और डेरा प्रमुख संत निरंजन दास के करीबी होने को लेकर विवाद बढ़ता जा रहा है। यहां आम आदमी पार्टी और बीजेपी से जुड़े श्रद्धालुओं के दो गुट आमने-सामने हैं। विवाद की मुख्य वजह बीजेपी की प्रस्तावित 'समरसता संकल्प यात्रा' है। इस यात्रा को डेरे से शुरू करने की योजना बनाई जा रही है। यह यात्रा 18 नवंबर को जालंधर से शुरू होकर 3 दिसंबर को वाराणसी में समाप्त होगी। इसका आयोजन 20 फरवरी 2027 को होने वाली गुरु रविदास जी की 650वीं जयंती के कार्यक्रमों के तहत किया जा रहा है। यह यात्रा पंजाब के अलावा जम्मू-कश्मीर, चंडीगढ़, हरियाणा, राजस्थान और दिल्ली से होकर गुजरेगी। पंजाब में होशियारपुर, पठानकोट, गुरदासपुर, अमृतसर, फिरोजपुर और मुक्तसर जैसे जिलों को शामिल करने की योजना है। बीजेपी समर्थक रविदासिया श्रद्धालु



चाहते हैं कि यात्रा की शुरुआत डेरा बल्लान से हो। इस कार्यक्रम में पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नवीन के शामिल होने की संभावना है। वहीं, आप समर्थक श्रद्धालु इसका विरोध कर रहे हैं। उनका कहना है कि धार्मिक डेरे को राजनीतिक गतिविधियों से दूर रखा जाना चाहिए। विरोधी गुट यात्रा की शुरुआत बूटा मंडी स्थित गुरु रविदास धाम से करना चाहता है।

बल्लान के पास से यात्रा कराने की कोशिश

अंग्रेजी न्यूज वेबसाइट द ट्रिब्यून की रिपोर्ट के अनुसार, पंजाब बीजेपी एससी मोर्चा के अध्यक्ष शीतल अंगुराल ने कहा कि पार्टी यात्रा की शुरुआत बल्लान के पास से करने की कोशिश कर रही है। इसके लिए श्री खुरालगढ़ साहिब के पास कार्यक्रम आयोजित करने पर भी विचार किया जा रहा है। इसी बीच डेरे के प्रबंधन को लेकर भी आरोप-प्रत्यारोप शुरू हो गए हैं। वकील एलएम गुलाटी और सोनिया तंवर ने आरोप लगाया कि ट्रस्टी हरदेव हीर और बब्बू डेरे के वित्तीय मामलों पर नियंत्रण करने की कोशिश कर रहे हैं और संत निरंजन दास को अहम जानकारियों से दूर रखा जा रहा है। उन्होंने श्रद्धालुओं को डेरा प्रमुख से मिलने में परेशानी होने का दावा भी किया।

संक्षिप्त समाचार

उत्तराखंडवासियों को घुसपैठिया कहना छोटी सोच

देहरादून (एजेंसी)। उत्तराखंड के लोगों को घुसपैठिया कहने वाले बयान पर सीएम योगी आदित्यनाथ ने अखिलेश यादव को करारा जवाब दिया है। लखनऊ में उत्तराखंड महोत्सव के दौरान योगी ने अखिलेश का नाम लिए बिना कहा, अगर उत्तराखंड की बेटी नहीं होती तो तुम सैफई में कहीं भैंस चरा रहे होते। योगी ने कहा कि उत्तराखंड के लोगों को घुसपैठिया कहना छोटी सोच है। उन्होंने उत्तर प्रदेश के पहले मुख्यमंत्री पंडित गोविंद बल्लभ पंत, पूर्व मुख्यमंत्रियों हेमवती नंदन बहुगुणा और नारायण दत्त तिवारी का जिक्र किया। साथ ही वीर चंद्र सिंह गढ़वाली, जनरल



बिपिन रावत, जनरल अनिल चौहान और अजीत डोभाल के नाम लेकर उत्तराखंड के योगदान को बताया। योगी ने कहा कि उत्तराखंड ने देश को सैनिक, बड़े नेता और देश की सुरक्षा करने वाले अधिकारी दिए हैं। उन्होंने मड़वा, झंगोरा और कुल्थ की दाल जैसे पहाड़ी खाने की तारीफ की। साथ ही उत्तराखंड महापरिषद को भरोसा दिया कि लखनऊ के पंडित गोविंद बल्लभ पंत उपवन में हर साल उत्तराखंड महोत्सव आयोजित किया जाएगा। योगी आदित्यनाथ ने कहा कि पिछले दिनों उन्होंने एक व्यक्ति का बयान सुना, जिसमें उत्तराखंड के लोगों को घुसपैठिया कहा गया था। इस पर उन्होंने अखिलेश यादव का नाम लिए बिना कहा, उत्तर प्रदेश के पहले मुख्यमंत्री पंडित गोविंद बल्लभ पंत उत्तराखंड से थे। अगर उत्तराखंड की बेटी नहीं होती तो तुम सैफई में कहीं भैंस चरा रहे होते।

शीतकालीन यात्रा में भी रजिस्ट्रेशन करवाने की तैयारी

देहरादून (एजेंसी)। चारधाम यात्रा का मुख्य सीजन अब समाप्त होने जा रहा है, लेकिन श्रद्धालु सर्दियों में भी चारों धामों के दर्शन कर सकेंगे। इसके लिए उन्हें ऊंचाई पर स्थित मंदिरों तक जाने की जरूरत नहीं होगी। शीतकाल में चारों धामों की उत्सव डोलियां अपने-अपने प्रवास स्थलों पर पहुंचेंगी, जहां अगले छह महीने तक पूजा-अर्चना और दर्शन होंगे। इधर, उत्तराखंड सरकार शीतकालीन यात्रा को व्यवस्थित करने के लिए पहली बार पंजीकरण व्यवस्था लागू करने की तैयारी कर रही है। चारधाम यात्रा की तरह ही शीतकाल में आने वाले श्रद्धालुओं का भी रिकॉर्ड



तैयार किया जाएगा। इससे पर्यटन विभाग और जिला प्रशासन के पास यह जानकारी रहेगी कि किस प्रवास स्थल पर कितने श्रद्धालु पहुंच रहे हैं। हालांकि, शीतकालीन यात्रा में चारधाम यात्रा की तुलना में भीड़ कम रहती है। इसलिए रजिस्ट्रेशन अनिवार्य नहीं होगा। पर्यटन विभाग इस व्यवस्था को सुरक्षा के लिहाज से लागू करने पर विचार कर रहा है। पर्यटन सचिव धीराज गर्ब्याल के मुताबिक, इससे शीतकालीन यात्रा पर आने वाले श्रद्धालुओं की जानकारी और डाटा तैयार करने में मदद मिलेगी। चारधाम यात्रा में गंगोत्री के कपाट 10 नवंबर को अन्नकूट पर्व पर दोपहर 12.05 बजे बंद हुए। इसके बाद 11 नवंबर को भाई दूज पर केदारनाथ के कपाट सुबह 8.30 बजे बंद किए गए।

न्यूज की तरह जिंदगी में भी डेडलाइन जरूरी

● मोदी बोले-न्यूजरूम में कुछ भी असंभव नहीं माना जाता ● पीएम बोले-सीएम बना तो मुझसे पहले मीडिया को पता था

नई दिल्ली (एजेंसी)। पीएम नरेंद्र मोदी गुरुवार को दिल्ली स्थित भाजपा मुख्यालय में दीपावली मिलन कार्यक्रम में शामिल हुए। उन्होंने पत्रकारों को संबोधित करते हुए कहा कि न्यूजरूम में कुछ भी असंभव नहीं माना जाता। मोदी ने कहा कि भूकंप हो या बाढ़, जब लोग जान बचाकर भाग रहे होते हैं, तब रिपोर्टर अपनी जान जोखिम में डालकर और परिवार की चिंता छोड़कर खबर की कवरेज करते हैं। न्यूज की दुनिया में डेडलाइन सबसे जरूरी होती है। उसी तरह जिंदगी में भी डेडलाइन जरूरी होती है। मोदी ने कहा- मैं 11 अशोका रोड पर पड़ा रहता था।



भारत की सफलता की कहानियां दुनिया तक पहुंचाएं

21वीं सदी में कम्युनिकेशन सबसे बड़ी ताकत है। भारत के पास सस्ता डेटा और दुनिया को सुनाने के लिए उपलब्धियों की कई कहानियां हैं। मीडिया भारतीय प्रतिभाओं, सफलताओं और प्रेरणादायक लोगों को अधिक जगह दे। देश की उपलब्धियों को दुनिया तक पहुंचाना भी देश सेवा का माध्यम है। मीडिया युवाओं को नशे की लत से बचाने और इसके खिलाफ जागरुकता फैलाने में भूमिका निभाए।

पत्रकारों के साथ पुराने रिश्ते और मीडिया में बदलाव

फैक्स से लेकर इंस्टाग्राम रील तक मीडिया का स्वरूप बदल चुका है। पहले खबरों की कवरेज ओबी वैन से होती थी, अब मोबाइल ही ओबी वैन बन गया है। 2001 में गुजरात का मुख्यमंत्री बनने की खबर पत्रकारों को उनसे पहले मिल गई थी। पत्रकारों ने उन्हें मिठाई खिलाने को कहा। कई पत्रकार अपने खर्चे पर शपथ ग्रहण समारोह में भी पहुंचे थे। पत्रकारिता में डेडलाइन से काम की प्राथमिकताएं तय होती हैं और रफ्तार बढ़ती है। देश के सामने भी 2047 तक विकसित राष्ट्र बनने की डेडलाइन है। इस लक्ष्य को हासिल करने के लिए छोटे-बड़े चरणों में काम करना होगा, 2047 तक इंतजार नहीं करना है। भारत दुनिया के बड़े मोबाइल फोन निर्माता देशों में शामिल है। चिनाब नदी पर दुनिया का सबसे ऊंचा रेलवे पुल बना है।

बंटवारे के बाद पोता दादा की संपत्ति का दावेदार नहीं

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने साफ कर दिया है कि अगर दादा की संपत्ति उनके कानूनी वारिसों में बंट चुकी है, तो पोता जन्म के आधार पर उसमें अपना हिस्सा नहीं मांग सकता। जस्टिस ऑगस्टीन जॉर्ज मसीह और जस्टिस सुनीता अग्रवाल की बेंच ने 1997 में एक नाबालिग पोते की तरफ से दायर बंटवारे का मुकदमा खारिज कर दिया। फैसला 6 नवंबर को सुनाया गया, जिसकी जानकारी 11 नवंबर को सामने आई। मामला चेन्नई के 1,811 स्क्वायर फीट के एक मकान / प्लॉट का था। पोते का दावा था कि उसे जन्म से ही दादा की संपत्ति में कोपार्सनरी हक मिला है, इसलिए उसे भी हिस्सा मिलना चाहिए। यह मुकदमा नाबालिग पोते की ओर से दायर किया गया था। सुप्रीम कोर्ट बोला- ऐसा नहीं होगा, क्योंकि हिंदू उत्तराधिकार अधिनियम, 1956 की धारा 8 के तहत पिता को मिला हिस्सा पहले ही उसकी व्यक्तिगत संपत्ति बन गया था। 1811 स्क्वायर फीट की यह संपत्ति चेन्नई में थी। मूल मालिक पोते के दादा थे। दादा की बेटी (पोते की बुआ) ने 1993 में बंटवारे का मुकदमा किया। फरवरी 1994 में समझौते से बंटवारा हो गया, पोते के पिता को हिस्सा मिला। पिता ने अप्रैल 1997 में दो सेल डीड से अपना हिस्सा बेच दिया।

यूपी में चंद्रशेखर-ओवैसी की पार्टियों में गठबंधन

● सभी 403 सीटों पर लड़ेंगे चुनाव, चंद्रशेखर सीएम फेस ● प्रदेश में 40 फीसदी दलित-मुस्लिम वोट, दोनों की नजर



लखनऊ (एजेंसी)। यूपी विधानसभा चुनाव से पहले एआईएमआईएम प्रमुख असदुद्दीन ओवैसी और आजाद समाज पार्टी (कांशीराम) के अध्यक्ष चंद्रशेखर आजाद ने गठबंधन का ऐलान किया है। इसका नाम सामाजिक परिवर्तन मोर्चा रखा गया है। गठबंधन यूपी की सभी 403 विधानसभा सीटों पर चुनाव लड़ेगा। गुरुवार को लखनऊ में संयुक्त प्रेसवार्ता में ओवैसी ने कहा कि चंद्रशेखर यूपी में सीएम का चेहरा होंगे। भाजपा को रोकने के लिए हमारा मोर्चा मजबूत विकल्प बनेगा।

भाजपा को रोकने के लिए एक मजबूत विकल्प बनेगा

असदुद्दीन ओवैसी ने कहा कि यह मोर्चा भाजपा को रोकने के लिए एक मजबूत विकल्प बनेगा। साथ ही दलितों और मुस्लिमों को राजनीतिक भागीदारी में बराबर का हक दिलाने की कोशिश करेगा। वहीं, चंद्रशेखर आजाद ने इसे तीसरा नहीं, बल्कि पहला मजबूत मोर्चा बताते हुए कहा कि अब राजनीतिक अपमान बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। चंद्रशेखर ने घोषणा की कि 26 नवंबर को बहुजन समाज महासम्मेलन महारैली आयोजित की जाएगी।

घर में सोना कहां से आया महिलाओं को बताना होगा

नई दिल्ली (एजेंसी)। देश में कई सालों से यह नियम चला आ रहा है कि अगर आयकर विभाग की छापेमारी हो, तो शादीशुदा महिला के पास 500 ग्राम तक सोना होने पर अधिकारी उसे जब्त नहीं कर सकते। इसी नियम का फायदा उठाकर कई लोग मान लेते थे कि 500 ग्राम तक सोना रखने पर किसी को कोई जवाब नहीं देना होगा, लेकिन सुप्रीम कोर्ट ने अब एक बड़ा स्पष्टीकरण दिया है। जस्टिस केवी विश्वनाथन और जस्टिस अरुण पल्ली की बेंच ने कहा- सोना जब्त न होना और उसका मालिक होना दो अलग बातें हैं। यह फैसला बिहार की एक पूर्व अफसर के मामले में आया, जिन पर भ्रष्टाचार का आरोप था। उन्होंने 500 ग्राम सोना होने का हवाला देकर बचने की कोशिश की थी। बिहार की पूर्व बाल विकास परियोजना पदाधिकारी फूलपरी कुमारी के खिलाफ आय से अधिक संपत्ति का मामला था। 2015 में बिहार विजिलेंस ने उनके खिलाफ केस दर्ज किया था। जांच में उनके पास 646.400 ग्राम सोने के आभूषण मिले।

लापता दोनों स्पेशल पुलिस ऑफीसर के शव मिले

शरीर गोलियों से छलनी, हथियार भी गायब; सेना के साथ जंगल में सर्चिंग पर गए थे

श्रीनगर (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर के किश्तवाड़ जिले के मारवाह के जंगल में बुधवार शाम को लापता हुए जम्मू-कश्मीर पुलिस के दो एसएचओ के शव मिले हैं। दोनों शव गोलियों से छलनी हैं। उनके पास 60 राउंड वाली एक इंसास राइफल और 50 राउंड वाली एक 303 राइफल थी। दोनों के ही हथियार गायब हैं। दोनों आर्मी के साथ इलाके में सर्चिंग के लिए गए थे। जब वे लापता हुए थे, तब जंगल से फायरिंग की आवाजें भी सुनाई दी थीं। मृतकों की पहचान रशपाल कुमार और बाबी चंद के रूप में हुई है। दोनों एसएचओ के लापता होने के दौरान इसी इलाके में एयरटेल नेटवर्क सेवाएं बाधित होने की जानकारी भी सामने आई थी। एयरटेल कंपनी ने इसी साल 10 मार्च को मरवाह इलाके में पहली बार मोबाइल नेटवर्क



सेवा शुरू की थी। 15 अक्टूबर 2026 को एसएचओ बशीर अहमद किश्तवाड़ के त्रिगाम स्थित पुलिस पिकेट से सर्विस राइफल के साथ लापता हुए थे। अगले दिन 16 अक्टूबर को उनका शव त्रिगाम के जंगल में एक नाले के पास गड्ढे में दबा मिला। पुलिस ने इस हत्या के मामले में दो आरोपियों को गिरफ्तार किया था।

बारामूला के जंगल में 2 हैंड ग्रेनेड मिले संदिग्ध गिरफ्तार

सुरक्षाबलों ने गुरुवार को बारामूला जिले में तलाशी अभियान के दौरान दो हैंड ग्रेनेड बरामद किए हैं। पुलिस ने इस मामले में एक संदिग्ध को गिरफ्तार किया है। बारामूला पुलिस ने सेना के साथ मिलकर तंगमर्ग के बदरकोट जंगल में एरिया से बदरकोट निवासी गुलाम जिलानी रेशी को पकड़ा गया। उसके पास से हैंड ग्रेनेड थे।

केजरीवाल को लॉरेंस गैंग से मिली धमकी फर्जी

मोहाली (एजेंसी)। दिल्ली में तिलक नगर से आम आदमी पार्टी के विधायक जरनैल सिंह ने पुलिस को शिकायत दी है कि लॉरेंस गैंग ने अरविंद केजरीवाल से 7 करोड़ रुपए की रंगदारी मांगी है। खुद को लॉरेंस गैंग का सदस्य बताने वाले एक अज्ञात व्यक्ति ने उनके फोन और वॉट्सऐप मैसेज के जरिए यह धमकी दी है। दिल्ली के तिलक नगर से एएपी विधायक जरनैल सिंह ने कहा- 6 नवंबर 2026 को शाम करीब 6 बजे उनके निजी मोबाइल नंबर पर एक अज्ञात नंबर से कॉल और वॉट्सऐप मैसेज आया। वॉट्सऐप प्रोफाइल पर 9 -2 नाम प्रदर्शित हो रहा था। आरोपी ने मैसेज में लिखा, लॉरेंस गैंग से हूं, अरविंद केजरीवाल को बोल दे 7 करोड़ दे दो नहीं तो अरविंद केजरीवाल और उसकी बेटी हर्षिता केजरीवाल को जान से मार दूंगा।

कर्नल राजेन्द्र सिंह शेखावत की बिटिया दीया - जो बुझ गई थी, अब प्रेरणा बनकर जल रही : हुसैन साजिद

दैनिक अलग पहचान,अन्नपूर्णा गुप्ता, मुख्य संपादक, नई दिल्ली

दिवंगत दीया शेखावत की जयंती परिवार के द्वारा वर्षों से मनाई जा रही है, 27 मई 2026 को भी भावपूर्ण ढंग से मनाई गई, जिससे बच्चे भी प्रेरणा ले रहे हैं। उनका जन्म 27 मई 2003 को हुआ था। 15 वर्ष की आयु में 10 नवंबर 2018 को एक स्कूल टूर के दौरान सड़क दुर्घटना में उनका असामयिक निधन हो गया। दीया भद्रावती (शिवमोग्गा जिला, कर्नाटक) स्थित पूर्णप्रज्ञा एजुकेशन सेंटर की कक्षा 10 की छात्रा थीं। स्कूल की वार्षिक शैक्षिक यात्रा के अंतर्गत कक्षा 10 के लगभग 90-94 छात्र दो प्राइवेट बसों में होरनाडु के अन्नपूर्णेश्वरी मंदिर तथा आगे उडुपी, मालपे आदि स्थानों के लिए निकले थे। 10 नवंबर 2018 की सुबह करीब 6 बजे चिक्कमगलुरु जिले के एन.आर. पुरा तालुक के साउथिकेरे/सवतिकेरे गांव के पास एक बस कर्व



लेते समय पलट गई। ड्राइवर का नियंत्रण छूट गया और बस बिजली के खंभे से टकराकर पलट गई। दीया, जो ड्राइवर के ठीक पीछे बैठी थीं, मौके पर ही मारी गईं। उनकी सहेली नंदिनी का एक हाथ कट गया। लगभग 20-25 छात्र और तीन शिक्षक घायल हुए। घायलों को एन.आर. पुरा में प्राथमिक



इलाज के बाद शिवमोग्गा के अस्पतालों में भर्ती कराया गया।दुर्घटना के बाद गहरे शोक की घड़ी में भी दीया के माता-पिता ने मानवता का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया। उन्होंने अपनी बेटी की आँखें दीं। इससे कई जरूरतमंद लोगों को नई दृष्टि और नया जीवन मिला। उनके पिता कर्नल राजेन्द्र सिंह शेखावत पूर्व सेना अधिकारी हैं और परिवार मूल रूप से राजस्थान से जुड़ा है। कोऑपरेटिव कॉलोनी और चंदनकियारी में लोग सड़क सुरक्षा को लेकर जागरूकता फैलाने का काम कर रहे हैं। एक क्षण की लापरवाही किसी घर का दिया बुझा देती है - यही संदेश बार-बार दिया जा रहा है। इसी कड़ी में दीया के छोटे भाई माधवादित्य सिंह शेखावत ने अपनी बहन के नाम पर पौधा लगाया। माधवादित्य चिन्मय विद्यालय में कक्षा 2 के विद्यार्थी हैं। दीया चली गई, परंतु मरी नहीं। उनके नाम पर लगाया गया यह पौधा ही उनकी शुद्ध साँस है, जो निरंतर प्रवाहित है। सड़क पर अनुशासन ही जीवन की रक्षा है और एक पौधा आने वाली पीढ़ियों के लिए शुद्ध वायु, छाया और जीवन का आधार है। यदि हर व्यक्ति अपने किसी प्रियजन की स्मृति में एक पौधा लगाए और उसकी रक्षा करे, तो न केवल पर्यावरण सुरक्षित होगा, बल्कि वह स्मृति भी सदैव जीवित रहेगी। दीया के नाम पर लगाया गया यह पौधा इसी संकल्प का प्रतीक है।दीया से प्रेरणा लेकर दैनिक अलग पहचान के राज्य ब्यूरो चीफ हुसैन साजिद (साजिद अंसारी हसनैन) ने अपना शरीर दान करने का संकल्प लिया है। वे मानव अधिकार के क्षेत्र में कार्य करते हैं, समाजसेवी हैं और झारखंड में अपराध के खिलाफ सक्रिय एक्टिविस्ट के रूप में जाने जाते हैं।उन्होंने कहा, 'हम जीते जी अपना जीवन समाज के लिए समर्पित कर चुके हैं। मरने के बाद भी लोगों के काम आ सकें, यही इच्छा है।

कर्नल शेखावत साहब ने जब मुझे दीया का संदेश बताया, तो मैं बहुत मोटिवेट हुआ। ' कर्नल राजेन्द्र सिंह शेखावत बोकारो स्टील प्लांट में सुरक्षा विभाग के उप महाप्रबंधक (डीजीएम-सुरक्षा) के पद पर सेवारत हैं। पूर्व सेना कर्नल होने के नाते वे अनुशासन और ईमानदारी के साथ प्लांट की भूमि, संपत्ति और टाउनशिप की सुरक्षा में सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं। अतिक्रमण हटाने और कंपनी के हितों की रक्षा के उनके प्रयासों को लोग आज भी याद रखते हैं।

संक्षिप्त समाचार

झारखंड दौरे पर राष्ट्रीय महिला आयोग अध्यक्ष विजया किशोर रहाटकर, निशा भगत मौत पर जताई चिंता

रांची, एजेंसी। राष्ट्रीय महिला आयोग ने झारखंड में महिला उत्पीड़न की बढ़ रही घटनाओं पर चिंता जताया है। झारखंड दौरे पर पहुंचीं राष्ट्रीय महिला आयोग की अध्यक्ष विजया किशोर रहाटकर ने रांची बिरसा मुंडा एयरपोर्ट पर मीडियाकर्मियों से बात करते हुए कहा कि निशा भगत की मौत बेहद ही दुखद है। उनके परिवार के प्रति मेरी पूरी संवेदना है। जिसे जानने के लिए मैं यहां आई हूं। उन्होंने कहा कि निशा भगत के अलावे झारखंड में कई घटनाएं हो रही हैं, जो बेहद ही चिंताजनक है। इसके बारे में वो गुमला और रांची में बैठक कर जानकारी लेंगी। रांची एयरपोर्ट से राष्ट्रीय महिला आयोग अध्यक्ष गुमला के लिए रवाना हुई, जहां वह निशा भगत के परिवार वालों से मिलेंगी। राष्ट्रीय महिला आयोग की अध्यक्ष स्थानीय गुमला जिला प्रशासन के साथ भी बैठक कर निशा भगत मामले में जानकारी हासिल करेंगी। तत्पश्चात रांची के स्टेट गेस्ट हाउस में राज्य के डीजीपी के साथ बैठक कर अब तक की गई कार्रवाई से अवगत होंगी। निशा भगत मौत मामले में झारखंड सरकार ने सीबीआई से जांच कराने की घोषणा की है। वहीं राष्ट्रीय महिला आयोग भी इस घटना को लेकर गंभीर है। झारखंड दौरे पर आईं आयोग की अध्यक्ष विजया किशोर रहाटकर का रांची एयरपोर्ट पर जमकर स्वागत किया गया। रांची एयरपोर्ट पर स्वागत करने पहुंचनेवालों में भाजपा महिला मोर्चा की अध्यक्ष सीमा सिंह, आरती कुजूर समेत भाजपा के कई कार्यकर्ता शामिल थे। गौरतलब है कि सामाजिक कार्यकर्ता निशा भगत ने बीते 06 नवंबर को फेसबुक लाइव आईं और फिर उसके बाद उन्होंने आत्महत्या कर ली। इस दौरान उन्होंने प्रशासन और जमीन दलालों का नाम लेते हुए उन्हें प्रताड़ित करने का आरोप लगाया था, जिसके बाद से सियासत गर्म है और आंदोलन का दौर जारी है। हालांकि, मुख्यमंत्री ने सोशल मीडिया एक्स पर इस मामले की सीबीआई जांच की घोषणा बीती रात कर मामले को शांत करने की कोशिश जरूर की है।

साहिबगंज में झामुमो को झटका, वरिष्ठ नेता राजाराम मरांडी ने थामा भाजपा का हाथ

साहिबगंज, एजेंसी। जिले के बरहेट विधानसभा क्षेत्र में झामुमो को बड़ा झटका लगा है, जबकि भाजपा को मजबूती मिली है. झामुमो के वरिष्ठ नेता राजाराम मरांडी ने अपने सैकड़ों समर्थकों एवं कार्यकर्ताओं के साथ भाजपा का दामन थाम लिया है. बरहेट विधानसभा क्षेत्र अंतर्गत झबरी में आयोजित मिलन समारोह में पूर्व सीएम बाबूलाल मरांडी की उपस्थिति में उन्होंने भाजपा की सदस्यता ग्रहण की. इस अवसर पर बाबूलाल मरांडी ने पार्टी में शामिल होने वाले सभी नए सदस्यों का स्वागत किया. कार्यक्रम के दौरान बाबूलाल मरांडी ने कहा कि हेमंत सरकार से जनता का मोहभंग होता जा रहा है. सरकार की नीतियों और कार्यशैली से निराश होकर अब लोग बदलाव की उम्मीद में भाजपा से जुड़ रहे हैं. इसकी झलक मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन के निर्वाचन क्षेत्र बरहेट में भी दिखने लगी है. बरहेट में झामुमो का किला दरकना शुरू हो गया है. झामुमो के वरिष्ठ नेता राजाराम मरांडी का अपने सैकड़ों समर्थकों के साथ भाजपा में शामिल होना, इसी बदलते राजनीतिक माहौल का संकेत है. पूर्व सीएम ने आगे कहा कि भाजपा कार्यकर्ता यदि सरकार के खिलाफ यदि बोले तो झूठे केस में फंसाने का काम किया जाता है, यहां के पुलिस को चेताया है. मिलन समारोह में राजमहल के पूर्व विधायक अनंत ओझा, बोरियो के पूर्व विधायक लोबिन हेम्ब्रम, लिट्टीपाड़ा के पूर्व विधायक दिनेश विलियम मरांडी, भाजपा जिला अध्यक्ष सहित पार्टी के कई वरिष्ठ नेता, पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता उपस्थित रहे. दरअसल, बुधवार सुबह वनांचल ट्रेन से बाबूलाल मरांडी बरहड़वा पहुंचे थे. वहां से वे बरहेट के कार्यक्रम में शामिल हुए. शाम को साहिबगंज मुख्यालय आए और सर्किट हाउस में विश्राम किया और रात 9 बजे पुनः वनांचल ट्रेन से रांची रवाना हो गए.

झारखंड बीजेपी किसान मोर्चा ने जारी की पदाधिकारियों की सूची

रांची, एजेंसी। झारखंड में किसानों से जुड़ी समस्या और मुद्दों को लेकर भाजपा किसान मोर्चा ने सांगठनिक रुप से तैयारी शुरू कर दी है. इसके तहत बीजेपी के प्रदेश अध्यक्ष आदित्य साहू के निर्देशानुसार, झारखंड भाजपा किसान मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष अर्जुन सिंह के द्वारा मोर्चा के प्रदेश पदाधिकारियों की घोषणा की गई है. नवगठित प्रदेश भाजपा किसान मोर्चा में 22 नेताओं को जगह मिली है, जिसमें 8 उपाध्यक्ष, 2 प्रदेश महामंत्री, 8 प्रदेश मंत्री, एक प्रदेश कार्यालय मंत्री, एक प्रदेश सह कार्यालय मंत्री, एक प्रदेश कोषाध्यक्ष, एक प्रदेश सह कोषाध्यक्ष शामिल है. प्रदेश बीजेपी किसान मोर्चा के प्रदेश पदाधिकारी की सूची में अजय मुंडा प्रदेश उपाध्यक्ष, राजेश कुशवाहा प्रदेश उपाध्यक्ष, इंद्रजीत कुमार प्रदेश उपाध्यक्ष, सुबोध राय प्रदेश उपाध्यक्ष, प्रभात रंजन प्रदेश उपाध्यक्ष, विष्णु मंडल प्रदेश उपाध्यक्ष, सज्जन पंकज प्रदेश उपाध्यक्ष, मनोज तिवारी प्रदेश उपाध्यक्ष, विक्रांत उपाध्याय प्रदेश महामंत्री, डॉ. विनोद ठाकुर प्रदेश महामंत्री, उषा देवी प्रदेश मंत्री, राणा ऋषिकेश सिंह प्रदेश मंत्री, सुरेश महतो प्रदेश मंत्री, शुभम सिंह प्रदेश मंत्री, निशांत कुमार प्रदेश मंत्री, कुसुमाकर तिवारी प्रदेश मंत्री, सन्नी कुशवाहा प्रदेश मंत्री, तूफान महथा प्रदेश मंत्री, वृंद कुमार राम प्रदेश कार्यालय मंत्री, नीरज कुमार प्रदेश सह कार्यालय मंत्री, जितेंद्र जैन प्रदेश कोषाध्यक्ष और मूलचंद साव प्रदेश कोषाध्यक्ष बनाए गए हैं. प्रदेश पदाधिकारी की यह सूची भाजपा किसान मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष अर्जुन सिंह ने जारी की है. प्रदेश पदाधिकारी की सूची जारी होने के बाद किसान मोर्चा के कार्य समिति सदस्यों के नाम की भी जल्द ही घोषणा की जाएगी. इसके साथ ही पार्टी द्वारा नवगठित अन्य मोर्चा की भी नई टीम खड़ा करने की तैयारी की जा रही है, जिसकी भी घोषणा जल्द ही होगा इसके लिए विभिन्न मोर्चा के नव मनोनीत प्रदेश अध्यक्ष के द्वारा नामों को अंतिम रूप दिया जा रहा है.

छठ घाटों पर सुरक्षा के होंगे पुख्ता इंतजाम

संवेदनशील घाटों पर तैनात रहेगी एनडीआरएफ की टीम

रांची, एजेंसी। लोक आस्था के महापर्व छठ को लेकर राजधानी रांची में तैयारियां जोरों पर हैं। छठ व्रतियों और श्रद्धालुओं की सुविधा को ध्यान में रखते हुए जिला प्रशासन और रांची नगर निगम की टीम लगातार छठ घाटों का निरीक्षण कर रही है। इस बार छठ महापर्व के दौरान घाटों पर सुरक्षा के विशेष इंतजाम किए जा रहे हैं।



रांची के उपायुक्त मंजूनाथ भजंत्री खुद विभिन्न छठ घाटों का जायजा ले रहे हैं। निरीक्षण के दौरान उन्होंने घाटों की मौजूदा स्थिति, साफ-सफाई, पानी की गहराई और सुरक्षा व्यवस्था का आकलन किया। साथ ही छठ पूजा समितियों के सदस्यों से बातचीत कर उनकी समस्याओं और आवश्यकताओं की जानकारी भी ली।

इस बार जिला प्रशासन ने छठ घाटों पर सुरक्षा व्यवस्था को लेकर विशेष तैयारी की है। खासकर वैसे घाट, जिन्हें दुर्घटना की दृष्टि से संवेदनशील जोन के रूप में चिह्नित किया गया है, वहां अतिरिक्त सतर्कता बरती जाएगी। इन घाटों पर एनडीआरएफ की टीम तैनात रहेगी, ताकि किसी भी आपात स्थिति में तत्काल राहत और बचाव कार्य शुरू किया जा सके। इसके अलावा घाटों पर पुलिस बल की भी तैनाती की जाएगी। भीड़ को नियंत्रित करने और श्रद्धालुओं की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए प्रशासन की ओर से विशेष व्यवस्था की जा रही है।

निरीक्षण के दौरान घाटों पर बैरिकेडिंग की स्थिति और पानी की गहराई पर भी विशेष ध्यान दिया जा रहा है। जिन घाटों पर पानी अधिक गहरा है या जहां डूबने की आशंका बनी रहती है, वहां सुरक्षा के अतिरिक्त इंतजाम किए जाएंगे। घाटों के प्रवेश और निकास मार्ग, श्रद्धालुओं के आने-जाने की व्यवस्था और आसपास की साफ-सफाई को लेकर भी संबंधित अधिकारियों को जरूरी निर्देश दिए जा रहे हैं।

नगर निगम की टीम घाटों की सफाई, कचरा हटाने, पहुंच पथ को दुरुस्त करने और अन्य नागरिक सुविधाओं को बेहतर बनाने में जुटी है। प्रशासन का प्रयास है कि छठ व्रतियों को अर्घ्य देने के दौरान किसी तरह की परेशानी का सामना नहीं करना पड़े। इसके लिए जिला प्रशासन और नगर निगम के बीच समन्वय बनाकर लगातार काम किया जा रहा है।

राजधानी रांची में इस बार 74 प्राकृतिक छठ घाटों के अलावा विभिन्न स्थानों पर बनाए गए कृत्रिम छठ घाटों पर भी श्रद्धालु भगवान सूर्य को अर्घ्य दे सकेंगे। ऐसे में प्राकृतिक और कृत्रिम दोनों तरह के घाटों पर व्यवस्था दुरुस्त करने की तैयारी है। उपायुक्त खुद निरीक्षण कर व्यवस्थाओं की समीक्षा कर रहे हैं, ताकि छठ महापर्व शांतिपूर्ण और सुरक्षित माहौल में संपन्न हो सके।

धनबाद में छठ पूजा को लेकर प्रशासन अलर्ट, उपायुक्त ने जारी किए सख्त सुरक्षा निर्देश

दैनिक अलग पहचान, डेस्क संवाददाता, रांची/

धनबाद । लोक आस्था के महापर्व छठ पूजा के सफल, सुरक्षित और शांतिपूर्ण आयोजन को लेकर धनबाद जिला प्रशासन पूरी तरह सतर्क है। उपायुक्त श्री आदित्य रंजन ने सभी संबंधित पदाधिकारियों और छठ पूजा समितियों के लिए विस्तृत दिशा-निर्देश जारी किए हैं।



मुख्य निर्देश - खतरनाक घाटों की बैरिकेडिंगः सभी खतरनाक घाटों और जलाशयों की पहचान कर मजबूत बैरिकेडिंग और सुरक्षा-चिन्ह लगाने का निर्देश। समितियों के माध्यम से पर्याप्त संख्या में वालंटियर्स तैनात किए जाएंगे।

● साफ-सफाई और रास्ताः सभी घाटों की समुचित साफ-सफाई होगी। हर घाट पर सामान्य प्रवेश-निकास मार्ग के साथ एक आपातकालीन वैकल्पिक मार्ग भी चिन्हित करना अनिवार्य होगा।

● पटाखों पर पूर्ण प्रतिबंधः नदी घाटों और जलाशयों के आसपास पटाखों की बिक्री पर पूरी तरह से रोक लगा दी गई है।

● गोताखोर और मेडिकल टीमः सभी प्रमुख घाटों पर मत्स्य मित्र और कुशल गोताखोर तैनात रहेंगे। घाटों पर एंबुलेंस और मेडिकल टीमों की भी तैनाती की जाएगी।

● प्रकाश व्यवस्था और कंट्रोल रूमः घाटों और वहां तक जाने वाले सभी मार्गों पर पर्याप्त रोशनी की व्यवस्था होगी। जिला स्तर पर 24 घंटे नियंत्रण कक्ष का संचालन किया जाएगा।

● यातायात और भीड़ नियंत्रणः अत्यधिक भीड़ वाले घाटों पर पर्याप्त पुलिस बल तैनात रहेगा, यातायात और भीड़ नियंत्रण के लिए विशेष प्रबंध किए जाएंगे।उपायुक्त ने सभी पदाधिकारियों और पूजा समितियों को इन निर्देशों का शत-प्रतिशत अनुपालन सुनिश्चित करने का सख्त आदेश दिया है, ताकि श्रद्धालु सुरक्षित और सौहार्दपूर्ण वातावरण में छठ महापर्व मना सकें।

SIR में तेजीः नो मैपिंग के 56%, लॉजिकल डिस्क्रिपेंसी के 79% और अन्य के 98% मामलों की सुनवाई पूरी



दैनिक अलग पहचान, डेस्क संवाददाता, रांची /

रांची। मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (SIR) के तहत राज्यभर में नो मैपिंग, लॉजिकल डिस्क्रिपेंसी एवं अन्य श्रेणी के मामलों की सुनवाई तेजी से चल रही है। 12 नवंबर तक के आंकड़ों के अनुसार -

श्रेणी कुल मामले निपटाए गए प्रतिशत-नो मैपिंग-
14,04,033
7,91,959 56.41%
लॉजिकल डिस्क्रिपेंसी-
45,49,961
36,23,189 79.63%
अन्य 1,61,65,853
1,59,50,081 98.67%

कौन जिला आगे, कौन पीछे -नो मैपिंग में सबसे आगेः पश्चिमी सिंहभूम 99.97%, लोहरदगा 98.54%, देवघर 86.36% सबसे पीछेः साहिबगंज 35.26%, पलामू 36.05%, जामताड़ा 37.81%लॉजिकल डिस्क्रिपेंसी में सबसे आगेः पश्चिमी सिंहभूम 100%, लोहरदगा 99.99%, गुमला 93.32%सबसे पीछेः पलामू 61.45%, साहिब गंज 63.47%, पाकुड़ 64.96%अन्य श्रेणी मेंः सिमडेगा और लोहरदगा ने 100% मामले निपटा लिए हैं। मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी ने सभी जिलों को लंबित मामलों के निष्पादन में तेजी लाने का निर्देश दिया है। उन्होंने कहा कि कम प्रगति वाले जिलों को निर्धारित समय-सीमा के भीतर काम पूरा करने पर विशेष ध्यान देना होगा, ताकि मतदाता सूची अधिक शुद्ध, त्रुटिरहित और समावेशी बन सके।

झरिया पुनर्वास को लेकर समीक्षा बैठक, उपायुक्त ने दिए समय पर काम पूरा करने के सख्त निर्देश

दैनिक अलग पहचान, डेस्क संवाददाता,रांची/

धनबाद। समाहरणालय स्थित सभागार में उपायुक्त आदित्य रंजन की अध्यक्षता में झरिया पुनर्वास एवं विकास प्राधिकार (ह्ळत्रष्ट) की समीक्षा बैठक आयोजित की गई।बैठक में संशोधित झरिया मास्टर प्लान (ऋछ्रस्क्क) के तहत चल रही विभिन्न परियोजनाओं की अद्यतन प्रगति की बिंदुवार समीक्षा की गई।



इन कामों की हुई समीक्षा – ● बेलगड़िया में अप्रोच रोड, बाउंड्री वॉल, सिविल कार्य, विद्युत एवं पावर इंफ्रास्ट्रक्चर ● शिक्षा, स्वास्थ्य, आंगनबाड़ी केंद्र, जलापूर्ति, सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट (STP), सुरक्षा व्यवस्था और कौशल विकास कार्यक्रम ● प्रभावित परिवारों की शिफ्टिंग, भूमि से जुड़े मुद्दे, निविदाओं की स्थितिउपायुक्त ने सभी विभागों, वेंडरों और कार्यकारी एजेंसियों को आपसी समन्वय के साथ हर परियोजना को तय टाइमलाइन के अनुसार पूरा करने का सख्त निर्देश दिया। उन्होंने कहा कि जनहित से जुड़ी योजनाओं में किसी भी तरह की शिथिलता या अनावश्यक देरी बर्दाश्त नहीं की जाएगी।

18 नवंबर को सभी मतदान केंद्रों पर लगेगा 'एक और अवसर' कैंप, छूटे हुए मतदाता करा सकेंगे नाम शामिल

दैनिक अलग पहचान, डेस्क संवाददाता,रांची/

रांची। मतदाता सूची में नाम जुड़वाने से छूटे पात्र नागरिकों के लिए चुनाव आयोग ने एक और मौका दिया है। 18 नवंबर को राज्य के सभी मतदान केंद्रों पर सुबह 11 बजे से शाम 4 बजे तक 'एक और अवसर' कैंप आयोजित किया जाएगा। इसके साथ ही बीएलओ-बीएलए-2 की छठवीं और अंतिम बैठक भी होगी।मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी के. रवि कुमार ने सभी मान्यता प्राप्त राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों के साथ बैठक में यह जानकारी दी। उन्होंने कहा कि इस कैंप का उद्देश्य एक भी पात्र भारतीय नागरिक को मतदाता सूची से वंचित न रहने देना है।



कैंप में इन 3 बातों पर रहेगा विशेष ध्यान -1. ASDD सूची को सभी मतदान केंद्रों पर फिर से प्रकाशित किया जाएगा। इस सूची में शामिल पात्र नागरिक फॉर्म-6 या इन्यूमरेशन फॉर्म जमा कर सकेंगे। 2. जिन मतदाताओं ने अभी तक दस्तावेज नहीं दिए हैं, उनकी सूची भी मतदान केंद्र पर उपलब्ध रहेगी। 3. जो नागरिक 1 अक्टूबर 2026 तक 18 वर्ष के हो चुके हैं, लेकिन नाम नहीं जुड़ा है, उनसे भी फॉर्म-6 लेकर नाम शामिल किया जाएगा।मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी ने राजनीतिक दलों से अपील की है कि वे अपने बीएलए-2 की उपस्थिति सुनिश्चित करें और छूटे हुए पात्र मतदाताओं की सूची 18 नवंबर को बीएलओ को दें।

गोड्डा में मेले से बाइक चुराते युवक रंगे हाथ गिरफ्तार, चोरी की बाइक बरामद

दैनिक अलग पहचान, डेस्क संवाददाता, रांची /

गोड्डा। गोड्डा पुलिस ने चोरी की घटनाओं पर लगाम लगाते हुए महज कुछ ही घंटों में बाइक चोर को रंगे हाथ पकड़ लिया। मामला राजाभीठा थाना क्षेत्र के ग्राम तेतरिया मेला का है। 11 नवंबर को वादी ब्रह्मदेव मांझी की ग्रीन कलर की हीरो सुपर मोटरसाइकिल (छ॥17ङ्क-8128) मेला से चोरी कर ली गई थी। पीड़ित के आवेदन पर राजाभीठा थाना में कांड संख्या-27/26 दर्ज कर पुलिस ने त्वरित कार्रवाई की और चोरी करते हुए अभियुक्त को पकड़ लिया। गिरफ्तार अभियुक्तः जलालुद्दीन अंसारी, ग्राम खैरीबारी, थाना सुंदरपहाड़ी, जिला गोड्डा



बरामदगीः चोरी की गई ग्रीन कलर की हीरो सुपर मोटरसाइकिल गिरफ्तार अभियुक्त को न्यायिक अभिरक्षा में भेजा जा रहा है।गोड्डा पुलिस द्वारा संपत्ति संबंधी अपराधों के खिलाफ लगातार अभियान चलाया जा रहा है। अपराध की रोकथाम के साथ-साथ अपराधियों की पहचान, गिरफ्तारी और संपत्ति की बरामदगी को प्राथमिकता दी जा रही है।

बांस से बने सूप-दउरा के लिए बड़ी चुनौती बने पीतल और प्लास्टिक के उत्पाद!

धनबाद, एजेंसी। लोक आस्था के महापर्व छठ में सूप और दउरा का विशेष महत्व है. छठ की तैयारियों के बीच बाजारों में इनकी मांग बढ़ गई है, लेकिन इन पारंपरिक सामानों को तैयार करने वाले कारीगरों की जिंदगी में खुशहाली नहीं है. धनबाद के बलियापुर प्रखंड स्थित महली टोला में कई पीढ़ियों से परिवार बांस के सूप, दउरा और दूसरे सामान बनाकर अपना जीवन यापन कर रहे हैं. इनका कहना है कि बांस की बढ़ती कीमत और ढुलाई के खर्च ने लागत बढ़ा दी है, लेकिन तैयार सामान का उचित मूल्य नहीं मिल रहा.

ऊपर से पीतल और प्लास्टिक के सामान ने भी इनके कारोबार को प्रभावित किया है. आर्थिक तंगी के बीच कई परिवारों को अब भी सरकारी योजनाओं का इंतजार है. तस्वीरों में दिख रही ये महिलाएं और पुरुष अपने हाथों से बांस को आकार देकर सूप और दउरा तैयार कर रहे हैं. यही इनका पुश्तैनी पेशा है और इसी से परिवार का भरण-पोषण होता है, लेकिन इनकी परेशानी यह है कि कच्चा माल महंगा होने के बावजूद तैयार सामान की कीमत बाजार में नहीं मिलती. दूर-दराज के इलाकों से बांस खरीदकर लाना पड़ता है. ढुलाई का खर्च अलग से उठाना पड़ता है. इसके बाद दिनभर की मेहनत से तैयार सामान जब बाजार पहुंचता है, तो खरीदार लागत के हिसाब से कीमत देने को तैयार नहीं होते.

संजोती देवी बताती है कि बांस खरीदने से लेकर उसे टोला तक लाने में काफी खर्च हो जाता है. एक बांस की कीमत और ढुलाई मिलाकर लागत काफी बढ़ जाती है, लेकिन तैयार सूप और दूसरे सामान का उचित दाम नहीं मिलता. कई बार 30 से 40 रुपये में ही सामान बेचने की मजबूरी होती है. इतनी मेहनत के बाद भी सही कमाई नहीं हो पाती.

महली टोला की महिलाओं का कहना है कि कारोबार से होने वाली कमाई परिवार की जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त नहीं है. कारीगरों की शिकायत है कि बाजार में उनके उत्पादों का मूल्य तय करने में उनकी कोई भूमिका नहीं रहती. वहीं, सरकारी योजनाओं का लाभ नहीं मिलने से उनकी आर्थिक स्थिति और कमजोर बनी हुई है.

रोहिणी महली ने कहा कि बांस की कीमत लगातार बढ़ रही है, लेकिन तैयार सामान का भाव नहीं बढ़ रहा है. मेहनत के हिसाब से 40 से 50 रुपये भी नहीं मिल पाते. उनका कहना है कि उन्हें न मंईयां सम्मान योजना का लाभ मिल रहा है और न ही आवास योजना का. कई बार अपनी समस्या सरकार तक पहुंचाने की कोशिश की, लेकिन अब तक कोई फायदा नहीं हुआ.



बांस से बने पारंपरिक सामान के सामने अब बाजार में नए विकल्प भी मौजूद हैं. पीतल और प्लास्टिक के सूप की उपलब्धता ने इन कारीगरों की चिंता बढ़ा दी है. हालांकि छठ के दौरान बांस के सूप और दउरा की मांग रहती है, लेकिन दूसरी सामग्रियों के बढ़ते चलन से बिक्री प्रभावित हो रही है. कारीगरों का कहना है कि कच्चे माल की लागत और तैयार उत्पाद की कीमत के बीच बड़ा अंतर है.

सुनील महली ने बताया कि पीतल और प्लास्टिक के सूप बाजार में आने से बांस के सामान की बिक्री पर असर पड़ रहा है. लोग दूसरे विकल्प भी खरीद रहे हैं. इसके बावजूद बांस खरीदने और सामान तैयार करने में काफी मेहनत और पैसा लगता है, लेकिन बाजार में सही कीमत नहीं मिल पाती.

महली टोला में यह कारोबार किसी एक परिवार तक सीमित नहीं है. कई परिवार पीढ़ियों से इसी काम से जुड़े हुए हैं. पुरुषों के साथ महिलाएं भी दिनभर मेहनत कर सूप, दौरा और दूसरे सामान तैयार करती हैं, लेकिन सालभर काम करने के बावजूद इनकी आमदनी नियमित नहीं है. छठ जैसे पर्व के दौरान ही कारोबार में कुछ तेजी आती है, ऐसे में परिवारों की उम्मीदें त्योहार के बाजार पर टिकी रहती हैं.

पवन महली ने कहा कि यह उनका खानदानी पेशा है. बांस खरीदने के लिए 6 से 7 चरू दूर तक जाना पड़ता है. कई बार बांस को सिर पर उठाकर लाना पड़ता है. गाड़ी से लाने पर ढुलाई का खर्च देना पड़ता है. इसके बावजूद तैयार सामान का उचित मूल्य नहीं मिलता. उनका कहना है कि सरकार की ओर से प्रशिक्षण तो दिया गया, लेकिन उसके बाद कारोबार को आगे बढ़ाने के लिए कोई विशेष सहायता नहीं मिली. एक तरफ बांस से बने सूप और दउरा का बाजार है, तो दूसरी तरफ पीतल से बने पूजा के सामान की भी मांग बढ़ रही है. पीतल के सूप, बरगुना और टोपिया जैसे सामान छठ पूजा में इस्तेमाल किए जाते हैं. कुछ कारीगरों का कहना है कि इनकी बिक्री अच्छी है, लेकिन पीतल की बढ़ती कीमत के कारण आम लोगों का बजट प्रभावित हो रहा है.

कमलेश कुमार ने बताया कि पीतल से बने सूप और पूजा के दूसरे सामान की बाजार में अच्छी मांग है. छठ के समय इनकी बिक्री बढ़ जाती है, हालांकि पीतल महंगा होने के कारण ग्राहकों को भी परेशानी होती है. बांस के सूप और दउरा की तुलना में पीतल के सामान का इस्तेमाल लंबे समय तक किया जा सकता है.

कारोबार की परेशानी के साथ-साथ महली टोला में रहने वाले कई परिवारों के सामने आवास और बुनियादी सुविधाओं की भी चुनौती है. कुछ लोगों का कहना है कि उनके मकान जर्जर हैं और वे आज भी झोपड़ियों में रहने को मजबूर हैं. कई परिवार पेंशन और दूसरी सरकारी योजनाओं का लाभ नहीं मिलने की शिकायत कर रहे हैं. वहीं, उनका कहना है कि कई बार आवेदन देने के बाद भी उन्हें राहत नहीं मिली.

संक्षिप्त समाचार

मंईयां सम्मान योजना के पैसों से पति ने खरीद ली मोबाइल तो पत्नी ने दे दी जान!

गोड्डा, एजेंसी। जिले के महगामा थाना क्षेत्र में मंईयां सम्मान योजना की राशि के विवाद में एक महिला द्वारा आत्महत्या करने का मामला सामने आया है। हालांकि, मृतका के पिता ने इसे हत्या करार दिया है और ससुराल वालों पर आरोप लगाए हैं। यह घटना मोहानी गांव में हुई। जहां एक विवाहिता का शव घर के अंदर से मिला। मृतका की पहचान 28 वर्षीय प्रियंका कुमारी के रूप में हुई है, जो सुनील साह की पत्नी थी। घटना के बाद गांव में सनसनी फैल गई। मृतका के तीन छोटे बच्चे हैं। जानकारी के अनुसार, प्रियंका ने घर के कमरे में आत्महत्या कर ली। घटना के समय उनका पति सुनील साह खेत में धान की कटाई कर रहा था, जबकि घर में बच्चे मौजूद थे। आत्महत्या से पहले घर के अंदर कपड़ा जलाने की बात भी सामने आई है। घटना के बाद मृतका के पिता बिट्टू साव ने अपने दामाद सुनील साह और समधी पर गंभीर आरोप लगाए हैं। उनका कहना है कि प्रियंका और उनके पति के बीच मंईयां सम्मान योजना की राशि को लेकर विवाद हुआ था। पिता के अनुसार, योजना की राशि से सुनील साह ने मोबाइल खरीद लिया था, जिसको लेकर बुधवार को भी विवाद हुआ था। मृतका के पिता ने आरोप लगाया कि पति और सास ने मिलकर उनकी बेटी के साथ मारपीट की और फिर उसे फंदे से लटका दिया। पुलिस सभी आरोपों की जांच में जुट गई है। प्रियंका अपने पीछे दो बेटे और एक बेटी छोड़ गई हैं। मां की मौत के बाद तीनों बच्चों का रो-रोकर बुरा हाल है। ये सभी छह वर्ष से कम आयु के हैं। सूचना मिलते ही महगामा थाना की पुलिस मौके पर पहुंची और शव को अपने कब्जे में ले लिया।

इथेनॉल मिलावट की जांच कराए हेमंत सरकार', भाकपा माले ने की मांग

रांची, एजेंसी। भाकपा माले राज्य कमिटी की ओर से राज्य सचिव मनोज भक्त ने मांग की है कि हेमंत सरकार झारखंड में विभिन्न कंपनियों द्वारा आपूर्ति किए जा रहे पेट्रोल की स्वतंत्र जांच की व्यवस्था करे और उसमें इथेनॉल की वास्तविक मात्रा को सार्वजनिक करे। उन्होंने कहा कि कर्नाटक में हुई जांच से यह स्पष्ट हुआ है कि कुछ कंपनियां पेट्रोल में निर्धारित मानक से अधिक इथेनॉल की मिलावट कर रही हैं, जिससे वाहनों और इंजनों को नुकसान पहुंच रहा है। झारखंड सरकार को राज्यहित में विभिन्न क्षेत्रों में आपूर्ति किए जा रहे पेट्रोल की जांच कराने में विलंब नहीं करना चाहिए। कर्नाटक के बाद अब केरल ने भी ईंधनों की जांच शुरू कर दी है। उन्होंने कहा कि झारखंड जैसे राज्य में लाखों लोग परिवहन, कृषि, छोटे कारोबार और रोजगार के लिए दोपहिया तथा चारपहिया वाहनों पर निर्भर हैं। पेट्रोल की गुणवत्ता में किसी भी प्रकार की गड़बड़ी का सीधा आर्थिक बोझ आम जनता, ऑटो चालकों, टैक्सी चालकों, किसानों और छोटे कारोबारियों पर पड़ता है। खनिज समृद्ध झारखंड को निम्न गुणवत्ता वाले ईंधन का बाजार नहीं बनने दिया जा सकता। भाकपा माले ने कहा कि केंद्र और राज्य सरकारें पेट्रोल पर कर वसूलती हैं, इसलिए यह उनकी जिम्मेदारी है कि वे वाहन इंजनों के लिए संभावित रूप से हानिकारक इथेनॉल मिश्रण की निगरानी करें और उपभोक्ताओं को मानक गुणवत्ता वाला ईंधन सुलभ कीमतों पर उपलब्ध कराएं। साथ ही, सही सूचना और पारदर्शिता उपभोक्ताओं का बुनियादी अधिकार है। जनता को यह जानने का अधिकार है कि उसे किस गुणवत्ता का पेट्रोल बेचा जा रहा है और उसमें कितना इथेनॉल मिश्रित है। इसलिए सरकार को जांच रिपोर्ट सार्वजनिक करनी चाहिए तथा पेट्रोल पंपों पर ईंधन में इथेनॉल की वास्तविक मात्रा की स्पष्ट सूचना प्रदर्शित करानी चाहिए। भाकपा माले ने मांग की कि सरकारें पेट्रोल कंपनियों को जवाबदेह बनाएं, ताकि मानक से अधिक इथेनॉल मिश्रण अथवा मिलावट के कारण इंजनों को हुए नुकसान की भरपाई कंपनियां करें, न कि उपभोक्ताओं को अकेले पूरी क्षति का बोझ उठाना पड़े।

छठ में यात्रियों की सुविधा के लिए कई स्पेशल ट्रेनों के फेरे बढ़े

रांची, एजेंसी। छठ महापर्व के बाद ट्रेनों में यात्रियों की बढ़ती भीड़ को देखते हुए दक्षिण पूर्व रेलवे ने कई पूजा स्पेशल ट्रेनों के परिचालन की अवधि बढ़ाने के साथ नई स्पेशल ट्रेनें चलाने का निर्णय लिया है। इससे रांची और आसपास के यात्रियों को बिहार सहित दूसरे राज्यों की यात्रा में सुविधा मिलेगी। रेलवे ने रांची-पूर्णिया कोर्ट, राउरकेला-झंझारपुर और रांची-अलीपुरद्वार स्पेशल के फेरे बढ़ाए हैं। वहीं, गोंदिया-पटना, दुर्ग-बरौनी और टाटानगर-छपरा के बीच भी स्पेशल ट्रेनों का परिचालन किया जाएगा। दक्षिण पूर्व रेलवे की ओर से 10 नवंबर को जारी सूचना के अनुसार, ट्रेन संख्या 08105 राउरकेला-झंझारपुर स्पेशल 26 नवंबर को राउरकेला से रवाना होगी। यह ट्रेन रांची होकर चलेगी, वापसी में ट्रेन संख्या 08106 झंझारपुर-राउरकेला स्पेशल 27 नवंबर को रवाना होगी। इसी तरह ट्रेन संख्या 08625 रांची-पूर्णिया कोर्ट स्पेशल 27 नवंबर को और ट्रेन संख्या 08626 पूर्णिया कोर्ट-रांची स्पेशल 28 नवंबर को चलेगी। रांची-अलीपुरद्वार साप्ताहिक पूजा स्पेशल के परिचालन में भी विस्तार किया गया है। ट्रेन संख्या 08661 रांची-अलीपुरद्वार स्पेशल 16 और 23 नवंबर को प्रत्येक सोमवार को रांची से रवाना होगी। वापसी में ट्रेन संख्या 08662 अलीपुरद्वार-रांची स्पेशल 18 और 25 नवंबर को प्रत्येक बुधवार को चलेगी। दोनों ट्रेनों के समय, ठहराव और कोच संयोजन में कोई बदलाव नहीं किया गया है। रेलवे ने यात्रियों की सुविधा के लिए कुछ अन्य स्पेशल ट्रेनों की भी घोषणा की है। ट्रेन संख्या 08895 गोंदिया-पटना स्पेशल 13 और 20 नवंबर को चलेगी। वापसी में ट्रेन संख्या 08896 पटना-गोंदिया स्पेशल 14 और 21 नवंबर को रवाना होगी। इन ट्रेनों का ठहराव झारसुगुड़ा, राउरकेला, हटिया, रांची, मूरी और बोकारो स्टील सिटी में होगा। इसके अलावा ट्रेन संख्या 08755 दुर्ग-बरौनी स्पेशल 11 और 18 नवंबर को तथा 08766 बरौनी-दुर्ग स्पेशल 12 और 19 नवंबर को चलेगी। ट्रेन संख्या 08185 टाटानगर-छपरा स्पेशल 12 और 17 नवंबर को और 08186 छपरा-टाटानगर स्पेशल 13 और 18 नवंबर को चलेगी।वहीं, दक्षिण पूर्व रेलवे ने कोयंबटूर के पोदानूर से रक्सौल और एमजीआर चेन्नई सेंट्रल से बरौनी के बीच भी स्पेशल ट्रेनें चलाने का निर्णय लिया है। पोदानूर-रक्सौल स्पेशल 10 नवंबर को रवाना होगी, जबकि वापसी ट्रेन 14 नवंबर को चलेगी। चेन्नई-बरौनी स्पेशल भी 10 नवंबर को और वापसी में 13 नवंबर को रवाना होगी।

जमीन की रजिस्ट्री पर लगी रोक का आधार खत्म

हाईकोर्ट ने रजिस्ट्रेशन एक्ट की धारा 22 को बताया असंवैधानिक

रांची, एजेंसी। झारखंड में जमीन की रजिस्ट्री को लेकर लंबे समय से चल रहे विवाद पर हाईकोर्ट ने एक महत्वपूर्ण फैसला सुनाया है। अदालत ने रजिस्ट्रेशन एक्ट, 1908 की धारा 22 को असंवैधानिक करार देते हुए रद्द कर दिया है। इसी धारा के आधार पर राज्य सरकार को यह अधिकार मिला हुआ था कि वह किसी जमीन या दस्तावेज की रजिस्ट्री को पब्लिक पॉलिसी के खिलाफ बताकर उस पर रोक लगा सके।

हाईकोर्ट ने इस प्रावधान के तहत झारखंड सरकार की ओर से 26 अगस्त 2015 को जारी अधिसूचना को भी निरस्त कर दिया है। इतना ही नहीं, इस अधिसूचना के आधार पर सब-रजिस्ट्रार और निबंधन विभाग के अधिकारियों की ओर से जारी सभी आदेशों को भी रद्द कर दिया गया है। इस फैसले से उन जमीन मालिकों को राहत मिलने की उम्मीद है, जिनकी जमीन की रजिस्ट्री सरकारी प्रतिबंधों के कारण नहीं हो पा रही थी।

यह फैसला झारखंड हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश जस्टिस एमएस सोनक और जस्टिस मनोज प्रसाद की खंडपीठ ने सुनाया है। मामला चतरा जिले के हंटरगंज थाना क्षेत्र के हेरिंग गांव निवासी कौशलेंद्र कुमार सिंह की याचिका से जुड़ा है। उन्होंने वर्ष 2016 में हाईकोर्ट में याचिका दाखिल कर रजिस्ट्रेशन एक्ट की धारा 22 की संवैधानिक वैधता को चुनौती दी थी।

याचिकाकर्ता की ओर से अधिवक्ता इंद्रजीत सिन्हा और अधिवक्ता अंकित विशाल ने अदालत में पक्ष रखा। सुनवाई के दौरान उन्होंने बताया कि इसी तरह के मामले में हाईकोर्ट की दूसरी खंडपीठ पहले ही एक मई 2025 को फैसला सुना चुकी है। लिहाजा, वर्तमान मामले में भी उसी फैसले के



आधार पर निर्णय लिया जाना चाहिए।

सुनवाई के दौरान राज्य सरकार की ओर से अदालत को बताया गया कि एक मई 2025 के फैसले को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी गई है। हालांकि, सरकार ने यह भी स्वीकार किया कि सुप्रीम कोर्ट से इस मामले में अब तक कोई अंतरिम राहत नहीं मिली है। इसके बाद हाईकोर्ट ने अपने पूर्व के फैसले और सुप्रीम कोर्ट के एक महत्वपूर्ण निर्णय को आधार बनाते हुए इस मामले में भी धारा 22 को असंवैधानिक घोषित कर दिया।

सुप्रीम कोर्ट का कहना था कि सार्वजनिक नीति यानी पब्लिक पॉलिसी एक ऐसा विषय है, जिसकी कोई निश्चित और सर्वमान्य परिभाषा तय करना आसान नहीं है। ऐसे अस्पष्ट आधार पर सरकार की कार्यपालिका को यह अधिकार नहीं दिया जा सकता कि वह अपनी मर्जी से किसी दस्तावेज की रजिस्ट्री पर रोक लगा दे। अदालत ने यह भी स्पष्ट किया था कि सार्वजनिक नीति की व्याख्या न्यायिक प्रक्रिया के दायरे में आती है। कार्यपालिका को बिना स्पष्ट कानूनी दिशा-निर्देशों के ऐसे अधिकार देना संविधान के अनुरूप नहीं है।

हाईकोर्ट के इस फैसले का सबसे महत्वपूर्ण पहलू यह है कि अब केवल सार्वजनिक नीति का हवाला देकर धारा 22 और 26 अगस्त 2015 की अधिसूचना के आधार पर जमीन की रजिस्ट्री रोकने का कानूनी आधार समाप्त हो गया है। अदालत ने इस प्रावधान के तहत जारी सभी आदेशों को भी निरस्त कर दिया है। इसमें याचिकाकर्ता के मामले में 17 फरवरी 2016 को पारित आदेश भी शामिल है।

इससे उन लोगों को राहत मिलने की संभावना है, जिनकी जमीन प्रतिबंधित सूची में शामिल होने के कारण रजिस्ट्री नहीं हो पा रही थी। हालांकि, इसका मतलब यह नहीं है कि अब हर जमीन की रजिस्ट्री बिना किसी जांच या कानूनी प्रक्रिया के हो जाएगी। जमीन की रजिस्ट्री के लिए दूसरे लागू कानूनों और वैधानिक शर्तों का पालन करना अब भी जरूरी होगा।

जस्टिस राजेश शंकर की एकल पीठ ने कहा था कि जब धारा 22 और उसके तहत जारी अधिसूचना पहले ही रद्द की जा चुकी है, तो प्रतिबंधित जमीनों की सूची को पोर्टल पर बनाए रखने का कोई औचित्य नहीं है। अदालत ने राज्य के सभी सब-रजिस्ट्रारों को भी निर्देश दिया था कि कानून की निर्धारित शर्तें पूरी करने वाले दस्तावेजों की रजिस्ट्री की जाए।

रांची में 12 लोगों ने दो भाइयों को घेरकर किया जानलेवा हमला, लोहे की रॉड से सिर फोड़ा, एफआईआर दर्ज

रांची, एजेंसी। राजधानी रांची के एयरपोर्ट थाना क्षेत्र में आपसी विवाद को लेकर हिंसक झड़प का एक गंभीर मामला सामने आया है। हुंडरू के हरिजन मोहल्ले में 12 लोगों पर दो सगे भाइयों को घेरकर जानलेवा हमला करने का आरोप लगा है। आरोप है कि हमलावरों ने दोनों भाइयों पर लाठी-डंडे और लोहे की रॉड से ताबड़तोड़ हमला किया।

मारपीट में एक भाई का सिर फट गया और उसके चेहरे से काफी खून बहने लगा। वहीं, दूसरे भाई की छाती, पीठ और शरीर के अन्य हिस्सों पर बेरहमी से वार किया गया। आरोप है कि मारपीट के दौरान एक आरोपी ने रिवॉल्वर निकालकर दोनों भाइयों पर गोली भी चलाई, लेकिन गोली मिसफायर हो गई। इसके बाद दोनों भाई किसी तरह अपनी जान बचाकर वहां से भागे और पुलिस के पास पहुंचे।

इस मामले में मनीष लोहरा ने एयरपोर्ट थाना में लिखित शिकायत दर्ज कराई है। पुलिस ने 9 नवंबर 2026 को प्राथमिकी दर्ज कर मामले की जांच शुरू कर दी है। प्राथमिकी में 12 लोगों को नामजद आरोपी बनाया गया है।

प्राथमिकी में मनीष लोहरा ने बताया है कि 4 नवंबर 2026 को वह अपने भाई संजय लोहरा के साथ हुंडरू स्थित हरिजन मोहल्ले में एक दुकान पर बैठकर चाउमिन खा रहे थे। यह दुकान एसटीएस मिशन स्कूल के ठीक बगल में बबलू राशन दुकान के पास स्थित है। इसी दौरान उनके गांव के रहने वाले कुछ लोग वहां पहुंच गए। आरोप है कि सभी ने दोनों भाइयों को चारों तरफ से घेर लिया। उन्हें संभलने या कुछ समझने तक का मौका नहीं दिया गया। सभी आरोपी एकजुट होकर दोनों भाइयों पर हमला करने लगे।

शिकायत के अनुसार, सुमित नायक ने अन्य



आरोपियों को ललकारते हुए कहा कि दोनों को जान से मार डालो। इसके बाद सभी आरोपियों ने अपने हाथों में लिए लोहे की रॉड और लाठी-डंडे से दोनों भाइयों पर हमला शुरू कर दिया। आरोप है कि सुमित नायक ने संजय लोहरा को पकड़ लिया। इसके बाद राजकुमार नायक, लुलु नायक, अभिषेक नायक और प्रिंस नायक ने लाठी-डंडे से हमला किया।

वहीं विशाल नायक और साहिल नायक समेत अन्य आरोपियों ने लोहे की रॉड से संजय की छाती, पीठ और शरीर के दूसरे हिस्सों पर लगातार वार किए। मारपीट के दौरान संजय जमीन पर गिर गए। आरोप है कि जमीन पर गिरने के बाद भी हमलावरों ने उन्हें नहीं छोड़ा। उनके ऊपर चढ़कर लात-घूंसे और रॉड से हमला करते रहे। इस दौरान आरोपियों ने गाली-गलौज करते हुए पूरे परिवार को जान से मारकर खत्म करने की धमकी भी दी।

प्राथमिकी में मनीष लोहरा ने आगे बताया है कि इसी दौरान सुमित नायक ने उनके सिर पर लोहे की रॉड से जोरदार हमला किया। इससे वह जमीन पर गिर पड़े। इसके बाद राजकुमार, अभिषेक, अजीत, सुजीत, मनोज, प्रिंस, विशाल, वीरेन और साहिल समेत अन्य आरोपियों ने उनके सिर पर लोहे की रॉड से लगातार कई वार किए। हमले में उनका सिर फट गया और दाहिनी आंख के सामने भी चोट लगी। सिर से काफी खून बहने लगा। शिकायतकर्ता के अनुसार, आरोपियों ने शरीर के महत्वपूर्ण अंगों को निशाना बनाकर जानलेवा हमला किया, जिससे दोनों भाई गंभीर रूप से घायल हो गए।

दुमका में दो दिवसीय प्रशिक्षण सह नारियल पौधा वितरण कार्यक्रम का शुभारंभ, 5000 किसानों को मिलेगा लाभ

दैनिक अलग पहचान, डेस्क संवाददाता, रांची /

दुमका। कृषि विभाग, प्रदान एवं जेएसएलपीएस के संयुक्त तत्वावधान में जिला स्तरीय दो दिवसीय प्रशिक्षण सह नारियल पौधा वितरण कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया।इस कार्यक्रम के तहत जिले के 5,000 चिन्हित लाभुक किसानों एवं महिला कृषकों के बीच नारियल पौधों का वितरण किया जाएगा।कार्यक्रम में किसानों को पारंपरिक खेती के साथ-साथ नारियल की खेती अपनाने के लिए प्रेरित किया गया।





किसानों से घरों के आसपास, खेतों की मेड़ों और अनुपयोगी भूमि पर पौधारोपण करने की अपील की गई।बताया गया कि नारियल की खेती किसानों के लिए दीर्घकालिक आय का बेहतर माध्यम बन सकती है। संबंधित विभागों को किसानों को तकनीकी प्रशिक्षण एवं आवश्यक मार्गदर्शन देने के साथ खेतों में पौधारोपण सुनिश्चित करने का निर्देश दिया गया, ताकि इस पहल का लाभ धरातल पर दिखे और किसानों की आय में वृद्धि हो।

झारखंड में बोर्ड-निगम और आयोग में हिस्सेदारी पर इंडिया ब्लॉक में हलचल तेज

रांची, एजेंसी। झारखंड में खाली पड़े बोर्ड, निगम और आयोग के गठन को लेकर सत्तारूढ़ इंडिया गठबंधन में सियासी सरगर्मी तेज हो गई है। राज्य सत्ता में शामिल सहयोगी दलों के बीच हिस्सेदारी का सवाल उठने लगा है। झारखंड राजद ने गठबंधन में पिछली बार अपनी अनदेखी पर नाराजगी जताते हुए इस बार सम्मानजनक हिस्सेदारी की मांग की है। वहीं, सीपीआई-माले ने भी राजनीतिक प्रतिनिधित्व का सवाल उठाते हुए बोर्ड निगम में भागीदारी की इच्छा जताई है। इस बीच झामुमो ने सभी सहयोगी दलों को साथ लेकर चलने और आपसी सहमति से फैसला लेने की बात कही है।

झारखंड में हेमंत सोरेन के नेतृत्व वाली महागठबंधन की सरकार में बोर्ड-निगम और



आयोग के गठन को लेकर सहयोगी दलों की दावेदारी सामने आने लगी है। झारखंड राजद के प्रदेश सचिव रामकुमार यादव ने गठबंधन में पार्टी की बोर्ड, निगम और आयोग में अब तक की नगण्य हिस्सेदारी को लेकर नाराजगी जताई है। उन्होंने कहा कि राजद का संगठन सभी जिलों में है और पार्टी को उसके राजनीतिक प्रभाव के अनुरूप सम्मान और अधिकार मिलना चाहिए। राजद नेता यहां तक बोल गए कि बिना राजद के झारखंड में महागठबंधन की सरकार नहीं बन सकती है। इसका ख्याल सभी को रखना चाहिए। रामकुमार यादव ने कहा कि प्रदेश अध्यक्ष को इस मुद्दे पर पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष लालू प्रसाद यादव के समक्ष अपनी बात रखनी चाहिए। साथ ही मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन के सामने भी राजद की मांगों को रखना चाहिए। उन्होंने कहा कि यदि पार्टी को अधिकार और सम्मान नहीं मिलता है तो राजद अपने राजनीतिक रास्ते पर विचार कर सकता है।

रामकुमार यादव ने कहा कि राजद को गठबंधन में लगातार नजरअंदाज किया जा रहा है। पहले भी हिस्सेदारी के नाम पर पार्टी को केवल राज्य पिछड़ा आयोग एक सदस्य दिया गया था, जबकि हमारा संगठन सभी जिलों में मौजूद है। उन्होंने कहा कि बोर्ड और निगम के अलावा जिला और प्रखंड स्तर की कमेटियों में भी राजद के कार्यकर्ताओं को प्रतिनिधित्व मिलना चाहिए। पार्टी की दावेदारी केवल बड़े पदों तक सीमित नहीं है, बल्कि संगठन के विभिन्न स्तरों पर भागीदारी होनी चाहिए। सीपीआई-माले के झारखंड समिति सदस्य शुभेन्दु सेन ने भी गठबंधन में राजनीतिक हिस्सेदारी के सवाल को अहम बताया। उन्होंने स्पष्ट किया कि इंडी गठबंधन में शामिल होने और उसका समर्थन करने के पीछे केवल बोर्ड-निगम में पद हासिल करना उद्देश्य नहीं रहा है। इसके बावजूद उनकी पार्टी एक राजनीतिक दल है और जनता के एक हिस्से का प्रतिनिधित्व करती है।

प्रोफेशनल कांग्रेस की ओर रांची में थिंक 2029-प्रोफेशनल्स फॉर इकोनॉमिक ट्रांसफॉर्मेशन का आयोजन

रांची, एजेंसी। झारखंड के आर्थिक विकास को लेकर अलग-अलग क्षेत्रों के प्रख्यात प्रोफेशनल्स का महत्वपूर्ण संवाद आज राजधानी रांची के होटल बीएनआर चाणक्य में 'थिंक 2029-प्रोफेशनल्स फॉर इकोनॉमिक ट्रांसफॉर्मेशन' का आयोजन किया गया। ऑल इंडिया प्रोफेशनल्स कांग्रेस, झारखंड द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रदेश महासचिव सह प्रोफेशनल्स प्रभारी आदित्य विक्रम जायसवाल ने की।

इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में झारखंड कांग्रेस प्रभारी के।राजू, प्रोफेशनल्स कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मधु यास्की गौड़, लेखक, स्तंभकार व सार्वजनिक वक्ता सुवीर सरन और प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष केशव महतो कमलेश उपस्थित हुए। वहीं विशिष्ट अतिथियों में झारखंड की कृषि मंत्री शिल्पी नेहा तिर्की व पूर्व केंद्रीय मंत्री सुबोधकांत सहाय, पूर्व मंत्री बंधु तिर्की, कांग्रेस नेता आलोक दुबे, लाल किशोर नाथ शाहदेव, डॉ राजेश गुप्ता, शशि भूषण, राजीव रंजन प्रसाद, सतीश पॉल, डॉ। एम तौसीफ, महानगर अध्यक्ष डॉ। कुमार राजा, सुरेंद्र सिंह, राजन वर्मा, सुरेन राम, अभिजीत राज, सूर्यकांत शुक्ला आदि उपस्थित रहे।

इस सम्मेलन में देश और झारखंड के प्रतिष्ठित प्रोफेशनल्स, डॉक्टर, इंजीनियर, शिक्षाविद्, चार्टर्ड अकाउंटेंट, कानून विशेषज्ञ, उद्यमी व सामाजिक कार्यकर्ता पैनल डिस्कशन में शामिल हुए। इस दौरान झारखंड की आर्थिक संभावनाओं, विकास की चुनौतियों और भविष्य



की नीतिगत दिशा पर विचार-विमर्श किया गया।

इस मौके पर प्रोफेशनल्स कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मधु यास्की गौड़ ने कहा कि देश के जननेता राहुल गांधी ने हमेशा कहा है कि 1885 में कांग्रेस को प्रोफेशनल्स ने ही बनाया था। डॉक्टर, वकील, इंजीनियर, आर्किटेक्ट उन्हीं की एक्सपर्टीज से देश को आजादी मिली और देश का निर्माण हुआ। आज भी प्रोफेशनल्स ही राष्ट्र का निर्माण करेंगे। पिछले 12 वर्षों में संवैधानिक संस्थाओं को कमजोर किया गया है। इसलिए हमें रिपब्लिक को फिर से रीबिल्ड करना है।

मधु यास्की गौड़ ने कहा कि यूपीए सरकार ने शिक्षा का अधिकार, रोजगार का अधिकार दिया। झारखंड ने देश को जल, जंगल, जमीन दिया है। झारखंड ह्यूमन रिच है, रिसोर्स रिच है। उन्होंने उपस्थित प्रोफेशनल्स को संबोधित करते हुए कहा कि मैं आपको विश्वास दिलाता हूं, ये सिर्फ शुरुआत है, आपकी भागीदारी से ही नया झारखंड बनेगा। झारखंड प्रोफेशनल कांग्रेस स्टेट यूनिट का काम देखकर मैं सच में सरप्राइज हूं। हर पैनलिस्ट के सुझावों को नोट किया गया है। एजुकेशन सिस्टम, सिंगल विंडो सिस्टम पर हम काम करेंगे।' जल जंगल जमीन पर प्रोफेशनल पैनल बनाएंगें।

वहीं झारखंड कांग्रेस प्रभारी के। राजू ने कहा कि प्रोफेशनल कांग्रेस झारखंड ने ऐसे प्रोफेशनल्स की पहचान करेगी, जो सिर्फ प्रोफेशनल ही नहीं, बल्कि लोगों की जिंदगी में बदलाव लाना चाहते हैं, जो वंचित वर्ग को सशक्त करना चाहते हैं, हर वर्ग तक शिक्षा पहुंचाना चाहते हैं और सबको गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य देना चाहते हैं। झारखंड प्रोफेशनल कांग्रेस ऐसे लोगों को पहचान करेगी, जो सिर्फ विकास की बात नहीं, समानता और बराबरी की बात भी करते हैं।

उन्होंने आदित्य विक्रम जायसवाल को बधाई देते हुए कहा कि आपका जुड़ाव सिर्फ 2-3 घंटे के इस फोरम तक सीमित नहीं रहेगा। अगले 2 सालों में हम हर विषय पर आपसे जुड़ेंगे, जहां आपकी समझ, अनुभव और जुनून है-आप झारखंड के विजन को आकार देने में मदद करेंगे। हम झारखंड की चुनौतियों को पहचानेंगे और उसे एक मॉडल राज्य बनाएंगे-सिर्फ रिसोर्स रिच नहीं, बल्कि ऐसा राज्य जहां हर परिवार को अच्छी शिक्षा, अच्छा स्वास्थ्य और विकास का अधिकार मिले। इसके लिए हम लंबी-लंबी चर्चाएं करेंगे, सिर्फ 5-10 मिनट की नहीं। '3

निशा भगत मौत मामले पर बीजेपी के प्रदर्शन को लेकर जेएमएम का पलटवार

रांची, एजेंसी। राज्य में जनजाति समुदाय से जुड़े मुद्दों को मजबूती से उठने वाली सामाजिक कार्यकर्ता निशा भगत की मौत मामले में भाजपा मुखर होकर सरकार को घेरने में लगी है। वहीं झामुमो ने बीजेपी की ओर से इस मुद्दे को लेकर किये जा रहे प्रदर्शन पर तीखा हमला बोला है।

भाजपा के केंद्रीय प्रवक्ता मनोज पांडेय ने कहा कि इस मामले में भाजपा पूरी तरह एक्सपोज हो चुकी है। निशा भगत की मौत की सीबीआई जांच की मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन द्वारा अनुशंसा किया जाना पीड़ित परिवार की भावनाओं का सम्मान बताता है। झामुमो के केंद्रीय प्रवक्ता ने कहा कि यह तो उनके नेता और राज्य की अबुआ सरकार के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन की संवेदनशीलता को दर्शाता है, लेकिन भाजपा के, जो नेता एक आदिवासी बेटी की मौत पर राजनीति कर रहे हैं, उन्हें यह बताना चाहिए कि उत्तराखंड की बेटी अंकिता भंडारी मामले में उत्तराखंड की भाजपा सरकार और दिल्ली पुलिस ने अंकिता भंडारी के माता-पिता के साथ कैसा व्यवहार किया।

संक्षिप्त समाचार

बिहार में एक साथ कई आईएएस अधिकारियों का हुआ प्रमोशन

पटना, एजेंसी। बिहार सरकार की ओर से बड़े पैमाने पर आईएएस अधिकारियों को प्रमोशन दिया गया है। सामान्य प्रशासन विभाग ने इसकी अधिसूचना भी जारी कर दी है। दो को अपर मुख्य सचिव सहित 30 से अधिक आईएएस अधिकारियों को प्रमोशन मिला है। जिसमें समस्तीपुर गया और नालंदा के जिलाधिकारी भी शामिल हैं। साथ ही पटना के नगर आयुक्त को भी प्रमोशन मिला है।संतोष कुमार मल्लऔर पंकज कुमार को अपर मुख्य सचिव बनाया गया है। आपदा प्रबंधन विभाग के प्रधान सचिव संतोष कुमार मल्ल और गृह विभाग के प्रधान सचिव पंकज कुमार को शीर्ष वेतनमान यानी अपर मुख्य सचिव स्तर में प्रोन्नति दी गई है। यह प्रोन्नति पहली जनवरी 2027 या फिर उसके बाद पदग्रहण की तिथि से प्रभावी होगी।पथ निर्माण विभाग के सचिव पंकज कुमार पाल को पहली जनवरी 2027 से उच्च प्रशासनिक ग्रेड प्रधान सचिव में प्रोन्नति दी गई है। विज्ञान, प्राविधिकी एवं तकनीकी शिक्षा विभाग के विशेष सचिव हिमांशु शर्मा को सचिव स्तर पर प्रोन्नति दी गई है। कॉन्फेड के प्रबंध निदेशक शीर्षत कपिल को सचिव स्तर में प्रोन्नत किया गया है। डॉ। निलेश रामचंद्र देवरे को भी सचिव स्तर में प्रमोशन दिया गया है।ग्रामीण विकास विभाग के विशेष सचिव उज्जवल कुमार, कटिहार के बंदोबस्त अधिकारी नरेश झा को सचिव के स्तर के ग्रेड में प्रमोशन मिला है। मधेपुरा के बंदोबस्त अधिकारी ब्रजेश कुमार को भी सचिव के ग्रेड में प्रमोशन मिला है। मद्य निषेध, उत्पाद एवं निबंधन विभाग के विशेष सचिव नवीन कुमार को सचिव के ग्रेड में प्रमोशन मिला है। पर्यटन विभाग के विशेष सचिव उदयन मिश्रा को सचिव स्तर के ग्रेड में प्रमोशन मिला है।

भीषण सड़क हादसा, ट्रक की टक्कर से बाइक सवार तीन किशोर की मौत

दरभंगा, एजेंसी। बिहार के दरभंगा में भीषण सड़क हादसे में तीन किशोर की दर्दनाक मौत हो गयी। चौथा गंभीर रूप से घायल हो गया है। जिसका इलाज किया जा रहा है। घटना जिले के मब्बी थाना क्षेत्र के बाजार समिति-27 के पास हुई। इस घटना के बाद पूरे इलाके में शोक की लहर दौड़ गई है।मृतक के चाचा मो। अकील ने बताया कि, मृतक और घायल चारों युवक दरभंगा शहर के बाकरगंज स्थित मोमिन टोला, वार्ड संख्या 39 के रहने वाले थे। मोहल्ले की एक मस्जिद में धार्मिक कार्यक्रम चल रहा था। बताया जाता है कि चारों दोस्त रात करीब तीन बजे अपने-अपने घरों से निकले थे। परिजनों को उन्होंने मस्जिद में नमाज पढ़ने जाने की बात बताई थी।हालांकि, इसके बाद चारों युवक गाड़ी लेकर हाईवे की ओर निकल गए। बताया जा रहा है कि इसी दौरान मब्बी थाना क्षेत्र के बाजार समिति-27 के पास सुबह करीब चार बजे उनकी गाड़ी दुर्घटनाग्रस्त हो गई। हादसा इतना भीषण था कि तीन किशोरों ने दम तोड़ दिया, जबकि चौथा युवक गंभीर रूप से जख्मी हो गया। इस हादसे में 15 वर्षीय फारिश, 15 वर्षीय मोहम्मद इस्तेखार और 16 वर्षीय अल्ताफ नियाज की मौत हो गई है। वहीं, 16 वर्षीय मोहम्मद तल्फ गंभीर रूप से घायल है। उसे दिल्ली मोड़ स्थित एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया है। परिजनों के मुताबिक, घायल किशोर कोमा में है और उसकी हालत नाजुक बनी हुई है।मृतक के चाचा मो। अकील ने बताया कि, चारो मोमिन टोला के रहने वाले हैं। घर में किसी को जानकारी नहीं थी कि बच्चा कहां गया है। अब कैसे कहां घटना हुई, किसी को जानकारी नहीं है। घटना के बाद से परिजनों में कोहराम मचा हुआ है।इधर, घटना की जानकारी को लेकर मब्बी थानाध्यक्ष रौशन कुमार ने बताया कि, तीनों शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। इसके बाद शव को परिजनों को हवाले कर दिया गया है। एक जख्मी का इलाज चल रहा है। थानाअध्यक्ष ने बताया कि मामले की ट्रक के टक्कर से हादसा हुआ है।

बिहार में नहीं थम रहा जाली नोटों का कारोबार, नकली करेंसी के साथ तस्कर गिरफ्तार

मुजफ्फरपुर, एजेंसी। बिहार में इन दिनों जाली नोटों का कारोबार खूब फल-फूल रहा है। इसी क्रम में साहेबगंज थाना क्षेत्र के हुस्सेपुर जोड़ाकांही गांव से पुलिस ने एक तस्कर को गिरफ्तार किया है। आरोपी के कब्जे से 500 रुपये के 28 जाली नोट बरामद हुए हैं। बरामद नोटों की कुल कीमत 14 हजार रुपये है।पुलिस के अनुसार, आरोपित करीब 20 हजार रुपये के जाली नोट लेकर आया था। इसमें से 6 हजार रुपये के नोट वह स्थानीय बाजार में खपा चुका था, जबकि शेष 14 हजार रुपये पुलिस ने बरामद कर लिए। आरोपित साहेबगंज थाना क्षेत्र के मुशहरी का रहने वाला है। ग्रामीण एसपी राजेश सिंह प्रभाकर ने बताया कि सूचना मिली थी कि हुस्सेपुर जोड़ाकांही गांव में एक व्यक्ति जाली नोटों का इस्तेमाल कर स्थानीय लोगों को भुगतान कर रहा है। सूचना का सत्यापन करने के बाद एसडीपीओ सरैया के नेतृत्व में साहेबगंज थाना पुलिस ने छापेमारी की। इसके बाद आरोपी को जाली नोटों के साथ गिरफ्तार किया गया। एसपी ने आगे बताया कि साहेबगंज थाना में प्राथमिकी दर्ज की गई है। साथ ही प्रारंभिक पूछताछ में जाली नोटों की आपूर्ति करने वाले अन्य लोगों की संलिप्तता की जानकारी मिली है। ऐसे में पुलिस को आशंका है कि इस कारोबार के पीछे एक संगठित गिरोह सक्रिय है। ग्रामीण एसपी राजेश सिंह प्रभाकर ने बताया कि गिरोह के तार नेपाल और बांग्लादेश से जुड़े कुछ लोगों तक पहुंचने की आशंका है। हालांकि, इन सभी तथ्यों का सत्यापन किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि पूछताछ के दौरान आरोपी ने स्थानीय और दूसरे राज्यों के कुछ लोगों के नाम बताए हैं। एसपी ने बताया कि पुलिस अब तकनीकी जांच के जरिए गिरोह के नेटवर्क और जाली नोटों की सप्लाई चेन का पता लगाने में जुटी है। साथ ही यह भी जांच की जा रही है कि आरोपी ने बाजार में खपाए 6 हजार रुपये के जाली नोट किन लोगों को दिए और उनका इस्तेमाल कहां-कहां किया गया।

छठ मईया के अर्घ्य और परिवार के साथ की चाह के आगे हर मुश्किल फीकी,

महापर्व पर घर लौट रहा बिहारी, सड़कों पर दिख रही रौनक

पटना, एजेंसी। दीपावली का त्योहार बीत चुका है, और घरों में जलते दीयों की रोशनी अब धीरे-धीरे छठ महापर्व की तैयारियों में बदलने लगी है।बाजारों में छठ की खरीदारी शुरू हो गई है। कहीं सूप और दउरा सजने लगे हैं तो कहीं मिट्टी के चूल्हे और आम की लकड़ियों की व्यवस्था की जा रही है। इसके साथ ही अपने घर लौटने वाले प्रवासियों की भीड़ भी बढ़ने लगी है।

बिहार की सड़कों और रेलवे स्टेशनों पर छठ की रौनक दिखने लगी है। दिल्ली, मुंबई, बेंगलुरु और दूसरे प्रदेशों से लोग बिहार लौट रहे हैं। इस सफर के लिए तीन-चार महीने पहले टिकट कराने के बावजूद भी लोगों को कई सारी परेशानियों से दो-चार होना पड़ रहा है।।लेकिन, छठी मैया के अर्घ्य और परिवार के साथ त्योहार मनाने की चाह के आगे हर मुश्किल हार जा रही।

रेलवे स्टेशनों पर यात्रियों की आवाजाही बढ़ गई है। प्लेटफॉर्म पर बड़े-बड़े बैग, गठरियां, बच्चों के साथ सफर करते परिवार और अपनों से मिलने की उत्सुकता लिए चेहरे दिखाई देने लगे हैं। यह सिर्फ एक सामान्य यात्रा नहीं है। यह घर वापसी का वो सफर है जो साल भर की यंत्रणाओं से आजाद होकर अपने घर का सुकून ढूंढता है।

वो लोग जो साल के बाकी दिनों में रोजगार, नौकरी और रोजी-रोटी के लिए अपने परिवार से दूर दिल्ली-मुंबई जैसे दूसरे प्रदेशों में रहते हैं। अपनों की खातिर ही अपनों से दूर रहते हैं वे इन्हीं दिनों का इंतजार करते हैं। छठ का नाम आते ही इनके मन में अपने गांव और घर लौटने की इच्छा जागने लगती है।

बिहार के लाखों लोगों के जीवन में छठ महापर्व का



एक अलग स्थान है। लोगों के लिए यह त्योहार सिर्फ धार्मिक आस्था का विषय नहीं, बल्कि परिवार के साथ मिलने, पुराने रिश्तों को फिर से जीने और अपनी मिट्टी से जुड़ने का अवसर है।

सालभर काम की जिम्मेदारियों में उलझे रहने वाले लोग छठ के आने का इंतजार करते हैं। साल के दूसरे दिन फोन पर बातचीत और वीडियो कॉल से भले ही दूरियां कुछ कम हो जाती हों, लेकिन छठ के घाट पर परिवार के साथ खड़े होकर भगवान भास्कर को अर्घ्य देने का अनुभव अलग होता है।

यही वजह है कि लोग अपनी नौकरी, कामकाज और दूसरी व्यस्तताओं के बीच समय निकालकर घर आने की तैयारी करते हैं। किसी को छुट्टी के लिए पहले से आवेदन करना पड़ता है तो कोई कई महीने पहले से ही अपनी यात्रा की योजना बनाता है। टिकट की व्यवस्था, घर पहुंचने का रास्ता और परिवार के लिए खरीदारी, इन सबकी तैयारी पहले से शुरू हो जाती है।

छठ के मौके पर बिहार लौटने वाले लोगों के लिए घर आने की तैयारी कई महीने पहले शुरू हो जाती है। सामान्य दिनों में जहां यात्री कुछ दिन पहले टिकट लेकर यात्रा कर सकते हैं, वहीं इस दौरान टिकट की मांग बढ़ने के कारण लोगों को तीन से चार महीने पहले ही बुकिंग करानी पड़ती है, इसके बावजूद कन्फर्म टिकट मिलना आसान नहीं होता।

कई यात्रियों को एक ही यात्रा के लिए बार-बार टिकट बुक कराना पड़ता है। कोई तत्काल टिकट का इंतजार करता है तो कोई दूसरी ट्रेन और दूसरे रास्ते से घर पहुंचने की योजना बनाता है। कई बार टिकट कन्फर्म होने के बावजूद ट्रेन में इतनी भीड़ होती है कि सीट तक पहुंचना मुश्किल हो जाता है। इसके बावजूद लोगों के मन में एक ही बात रहती है कि किसी तरह छठ से पहले घर पहुंच जाएं।

बेंगलुरु से छठ पूजा के लिए बिहार पहुंचीं अनामिका की कहानी इसी भावनात्मक जुड़ाव को बयां करती है। उनके लिए इस बार दीपावली का त्योहार घर पर मनाना संभव नहीं हो सका। उन्होंने ट्रेन में ही दीपावली बिताई, लेकिन छठ महापर्व को छोड़ने के लिए तैयार नहीं हुईं। उनका कहना है कि छठ के मौके पर घर पहुंचना उनके लिए बेहद जरूरी है।

बिहार में रहने वाले लोगों को भी इस दौरान सफर की परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। शहरों से गांव लौटने वाले लोगों को भी सफर की चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। शंकर सिंह भी उन्हीं में से एक हैं। वे बताते हैं कि छठ उनके जीवन का बेहद महत्वपूर्ण पर्व है। पहले जब वे दिल्ली और दूसरे राज्यों में रहते थे, तब भी छठ के मौके पर घर लौटना नहीं भूलते थे।

उन्होंने बताया कि उनकी पत्नी और बेटी छठ पूजा करती हैं। इस बार भी वे अपनी पत्नी और बेटी को छठ करवाने के लिए मुजफ्फरपुर जा रहे हैं। फिलहाल वे दानापुर में रहते हैं, लेकिन उन्हें भी यात्रा के लिए परेशान होना पड़ रहा है। ट्रेन में जगह नहीं मिलने और दानापुर से मुजफ्फरपुर के लिए सीधे ट्रेन उपलब्ध नहीं होने के कारण उन्हें अपना रास्ता बदलना पड़ा।

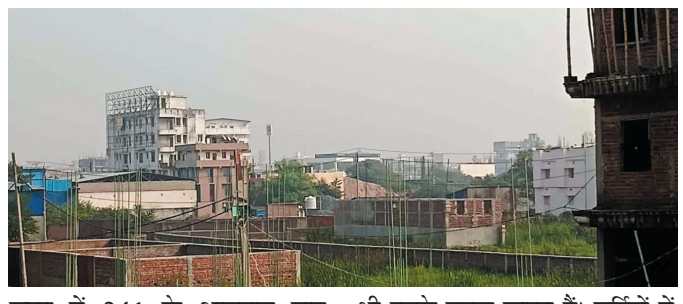
शंकर सिंह बताते हैं कि अब वे ऑटो से पाटलिपुत्र स्टेशन जाएंगे और वहां से ट्रेन पकड़कर मुजफ्फरपुर पहुंचेंगे। इस पूरी प्रक्रिया में समय और अतिरिक्त पैसे दोनों खर्च होंगे। शंकर कहते हैं कि छठ महापर्व के लिए घर पहुंचना जरूरी है। ट्रेन मिले या नहीं मिले, किसी भी तरह उन्हें अपने परिवार के साथ छठ मनाने पहुंचना ही है। 'छठ जीवन का बेहद महत्वपूर्ण पर्व है पहले जब दिल्ली में रहते थे, तब भी छठ के मौके पर घर लौटते थे। फिलहाल दानापुर में रहते हैं अपनी पत्नी और बेटी को छठ करवाने के लिए मुजफ्फरपुर जा रहे हैं लेकिन सीधे ट्रेन नहीं मिली अब ऑटो से पाटलिपुत्र जाएंगे और वहां से ट्रेन पकड़कर मुजफ्फरपुर पहुंचेंगे।समय और पैसा दोनों ज्यादा लगेगा पर घर तो जाना ही हैं। '- शंकर सिंह, दानापुर निवासी

दिवाली के 3 दिन बाद भी बिहार की हवा में घुल रहा 'जहर', खतरनाक स्तर पर आईक्यू

पटना, एजेंसी। दीपावली का त्योहार बीत चुका है और छठ महापर्व की तैयारियों के बीच बिहार में प्रदूषण का स्तर लगातार चिंता बढ़ा रहा है। पर्व-त्योहारों के दौरान हुई आतिशबाजी के बाद उम्मीद थी कि धीरे-धीरे हवा की गुणवत्ता में सुधार होगा लेकिन इसके उलट राज्य के कई जिलों में वायु प्रदूषण का स्तर अब भी खराब से बेहद खतरनाक स्थिति में बना हुआ है।

ठंड बढ़ने और हवा की रफ्तार कम होने के कारण प्रदूषित कण वातावरण में लंबे समय तक बने हुए हैं। इसका असर राजधानी पटना समेत राज्य के कई प्रमुख शहरों में देखने को मिल रहा है। 12 नवंबर की सुबह उपलब्ध रियल टाइम मॉनिटरिंग आंकड़ों के मुताबिक बिहार के कई शहरों में प्रदूषण का स्तर काफी बढ़ा हुआ है।

बक्सर में आईक्यू 368 दर्ज किया गया है, जो खतरनाक श्रेणी में आता है। वहीं मुजफ्फरपुर में 300, सिवान में 291, दरभंगा में 276 और समस्तीपुर में 268 आईक्यू दर्ज किया गया। आरा में 250, गया में 244 और



छपरा में 241 के आसपास वायु गुणवत्ता सूचकांक बना हुआ है।

राजधानी पटना की बात करें तो यहां भी अलग-अलग मॉनिटरिंग स्टेशनों पर आईक्यू 208 से 239 के बीच दर्ज किया गया है। ये आंकड़े बताते हैं कि प्रदूषण अब केवल राजधानी तक सीमित नहीं है, बल्कि बिहार के दूसरे शहरों में भी तेजी से पैर पसार रहा है। दरअसल, वायु प्रदूषण के पीछे केवल दीपावली के पटाखे ही जिम्मेदार नहीं हैं। सड़कों पर लगातार बढ़ती गाड़ियों की संख्या, उनसे निकलने वाला धुआं, निर्माण कार्यों से उड़ने वाली धूल, औद्योगिक गतिविधियां और पेड़ों की घटती संख्या भी इसके प्रमुख कारण हैं। सर्दियों में हवा की गति कम होने और वातावरण में नमी बढ़ने के कारण प्रदूषक कण जमीन के आसपास जमा हो जाते हैं। यही वजह है कि सुबह और शाम के समय प्रदूषण का असर अधिक महसूस किया जा रहा है।

बढ़ते प्रदूषण को लेकर आम लोगों में भी चिंता देखी जा रही है। पटना के रहने वाले धीरेंद्र कुमार सिंह का कहना है कि बिहार हो या राजधानी पटना, प्रदूषण का स्तर लगातार बना हुआ है। इसका असर आम लोगों की जिंदगी पर पड़ रहा है। सड़कों पर निकलने पर कई जगह इतनी धूल उड़ती है कि लोगों को सांस लेने में परेशानी होती है। सड़क पर चलने वाले लोगों को धूल और वाहनों से निकलने वाले धुएं का सामना करना पड़ता है।

धीरेंद्र कुमार सिंह का कहना है कि सरकार और संबंधित विभागों को इस दिशा में गंभीरता से काम करना चाहिए। सड़कों पर उड़ने वाली धूल को रोकने के लिए नियमित सफाई और पानी का छिड़काव होना चाहिए। अधिक से अधिक पेड़ लगाने की जरूरत है, ताकि पर्यावरण को संतुलित रखा जा सके। इसके अलावा गाड़ियों से निकलने वाले धुएं पर भी नियंत्रण करना होगा। बहरहाल, बिहार में प्रदूषण का बढ़ता स्तर अब एक बड़ी चुनौती बनता जा रहा है। इसका सीधा असर लोगों की सेहत पर पड़ सकता है। खासकर बच्चे, बुजुर्ग और सांस संबंधी बीमारियों से परेशान लोगों के लिए स्थिति अधिक चिंताजनक है। ऐसे में जरूरत है कि सरकार, प्रशासन और आम लोग मिलकर प्रदूषण नियंत्रण की दिशा में प्रयास करें, क्योंकि साफ हवा केवल पर्यावरण का मुद्दा नहीं, बल्कि हर व्यक्ति की जिंदगी और स्वास्थ्य से जुड़ा सवाल है।

बिहार में सामूहिक दुष्कर्म की पीड़िता को छत से फेंका, केस वापस लेने की दे रहे धमकी

बेगूसराय, एजेंसी। बिहार के बेगूसराय में सामूहिक दुष्कर्म की पीड़िता ने केस वापस नहीं लिया तो बदमाशों ने उसे छत से नीचे फेंक दिया। छत से 15 फीट नीचे गिरने के कारण उसकी हालत गंभीर हो गयी है, जिसका इलाज स्थानीय सदर अस्पताल में चल रहा है। यह शर्मसार करने वाली घटना चकिया थाना क्षेत्र की है।

दरअसल, घटना 5 महीने पहले 11 जून की रात की है। पांच आरोपियों ने महिला के साथ सामूहिक दुष्कर्म की घटना को अंजाम दिया था। घटना के दौरान आरोपियों ने दरिंदगी की सारी हदें पार कर दी थी। पहले आरोपियों ने महिला को सुनसान जगह ले गए और उसके ही कपड़े से हाथ पैड़ बांध दिये और सभी ने मिलकर दुष्कर्म की घटना को अंजाम दिया।

11 जून की रात ही परिजनों ने महिला को अस्पताल में भर्ती कराया था। हालांकि इलाज के बाद 12 जून को महिला को डिस्चार्ज कर दिया गया था, लेकिन 5 दिनों के बाद महिला के प्राइवेट पार्ट में दर्द हुआ। जब फिर से अस्पताल जाकर अल्ट्रासाउंड कराया तो उसके प्राइवेट पार्ट में लकड़ी, कंकड़ पाया गया। कई दिनों तक पीड़िता अस्पताल में भर्ती रही थी। पीड़िता ने आरोप लगाया था कि, इस मामले में जब परिजन थाना पहुंची थी तो थाना प्रभारी ने डांट कर उसे भगा दिया था। जब अल्ट्रासाउंड में मामला गंभीर लगा तो सिविल सर्जन ने पुलिस को सूचना दी। मौके पर पहुंची पुलिस ने पीड़िता का बयान लिया और केस दर्ज किया। पूरे केस में डीआईजी के नेतृत्व में जांच टीम बनायी गयी और आरोपियों को गिरफ्तार किया गया। थाना प्रभारी को लापरवाही के मामले में सस्पेंड भी किया गया था।इस मामले में केस दर्ज होने के बाद पुलिस ने पांच आरोपियों में से चार आरोपियों को पहले ही गिरफ्तार कर जेल भेज दिया था, जबकि पांचवां आरोपी फरार था। मामले में पीड़िता के पति का आरोप है कि, घटना के बाद से ही आरोपी पक्ष के लोग लगातार मुकदमा वापस लेने का दबाव बना रहे थे।

1.39 करोड़ की चांदी लूटकांड का खुलासा, बीजेपी नेता समेत 5 आरोपी गिरफ्तार

दरभंगा, एजेंसी। बिहार की दरभंगा पुलिस ने एक करोड़ 39 लाख रुपये की चांदी लूट का खुलासा कर लिया है। इस मामले में पुलिस ने पांच आरोपियों को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार आरोपियों के पास से 62 किलो 195 ग्राम चांदी के 56 बिस्कुट बरामद किए गए हैं। बरामद चांदी की कीमत करीब 1 करोड़ 39 लाख रुपये आंकी गई है।

दरभंगा के सिमरी थाना क्षेत्र के शोभन-एकमी रोड पर पश्चिम बंगाल के एक सर्राफा कारोबारी से हथियार के बल पर चांदी की लूट की गई थी। इस दौरान बदमाशों ने कारोबारी के ड्राइवर को गोली भी मार दी थी। घटना के बाद से ही पुलिस लगातार मामले की जांच और अपराधियों की गिरफ्तारी के लिए छापेमारी कर रही थी।

पुलिस जांच में सामने आया है कि



लूटकांड की साजिश दरभंगा के रामबाग स्थित कुशल रेस्टोरेंट में रची गई थी। इस साजिश में दरभंगा भाजपा दक्षिणी मंडल के महामंत्री विशाल महासेठ उर्फ निक्की की संलिप्तता भी सामने आई है। पुलिस ने उसे भी गिरफ्तार कर लिया है।

गिरफ्तार आरोपितों के पास से चांदी के अलावा 5 लाख 94 हजार रुपये नकद, मोबाइल फोन और वाहन भी जब्त किए गए हैं। साथ ही घटनास्थल से पुलिस ने एक खोखा भी बरामद किया है। इस लूटकांड में कुल 12 लोगों को नामजद किया गया है। शेष आरोपितों की गिरफ्तारी के लिए लगातार छापेमारी की जा रही है।

दरभंगा के वरीय पुलिस अधीक्षक जगुनाथ रेड्डी ने प्रेसवार्ता कर बताया कि 7 नवंबर को रात्रि करीब 21:30 बजे सभी अपराधकर्मी शोभन चौक के पास एकत्रित हुए। निक्की ने व्यापारी के वाहन का लोकेशन उपलब्ध कराया। इसके बाद दो मोटरसाइकिल पर सवार पांच अपराधियों ने वाहन का पीछा किया और एम्स मुख्य द्वार से कुछ दूरी पहले सुनसान स्थान देखकर उसे रोक कर फायरिंग की। जिससे वाहन चालक के हाथ में गोली लग गई। इसके बाद वाहन में रखे चांदी के बिस्कुट, नकद राशि से भरा बैग और बोरा लूट लिया।

एसएसपी ने बताया कि गुप्त सूचना एवं तकनीकी अनुसंधान के आधार पर पुलिस द्वारा कैदराबाद स्थित छोटू कुमार यादव के घर पर छापेमारी की गई। पुलिस बल को देखकर भागने का प्रयास कर रहे छोटू कुमार यादव को पकड़ लिया गया। उसकी निशानदेही पर घर की विधिवत तलाशी लेने पर ड्रेसिंग टेबल के ड्रॉअर में काले प्लास्टिक में छिपाकर रखे गये 5,94,100 रुपये बरामद हुए।

वहीं, गहन पूछताछ के क्रम में छोटू यादव ने बताया कि मेरे दोस्त निक्की कुमार और अन्य दोस्तों ने कहा कि बंगाल का एक सर्राफा व्यापारी है, जो भारी मात्रा में चांदी और पैसे लेकर बाराबर बंगाल से दरभंगा आता जाता रहता है। जिसके पास कोई कागजात नही है, उसका ड्राइबर कौशिक मेरा दोस्त है, अगर हमलोग बंगाल के सर्राफा व्यवसायी के साथ लूटपाट करते है तो इसमें कोई रिस्क नहीं है और फायदा भी करोड़ों का होगा।

225 साल पहले लंदन पहुंच गई थी छठ पूजा की महिमा, पढ़िए बिहार के महापर्व की अनोखी कहानी

पटना, एजेंसी। छठ महापर्व सिर्फ बिहार का महापर्व नहीं, बल्कि बिहार की कला और सांस्कृतिक विरासत का भी हिस्सा रहा है। लोक आस्था के इस महान पर्व को आज अंतरराष्ट्रीय पहचान मिल चुकी है। विदेशों में भी लोग छठ मना रहे हैं। लेकिन 'पटना कलम' शैली ने दो सदियों पहले ही छठ की सांस्कृतिक पहचान को चित्रों में दर्ज कर इसे दुनिया भर में पहचान दिलाने का काम किया था।

पटना के गंगा घाट पर छठ का दृश्य, नदी किनारे सूर्य को अर्घ्य देती महिलाएं, पूजा की तैयारियां और लोक आस्था की झलक आज की तस्वीर नहीं, बल्कि करीब 225 साल पुरानी कला की विरासत है। लगभग 1795 से 1800 के बीच बनाई गई इस ऐतिहासिक पेंटिंग में पटना के गंगा तट पर छठ मनाते लोगों को दिखाया गया है। यह पेंटिंग आज भी लंदन की ब्रिटिश लाइब्रेरी के संग्रह में मौजूद है।

उस दौर में न कैमरे थे और न आज की तरह डिजिटल माध्यम हुआ करते थे। कलाकार अपनी तूलिका से छठ की पूरी परंपरा को कैनवास पर उतारते थे। पटना कलम की यह पेंटिंग इस बात का प्रमाण है कि, 18वीं और 19वीं सदी में भी बिहार में छठ पर्व का व्यापक सांस्कृतिक महत्व था। यह पेंटिंग आज इतिहास



का एक महत्वपूर्ण दस्तावेज बन चुकी है।

पटना कलम का विकास 18वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में लगभग 1760 से 1770 के बीच शुरू हुआ था। मुगल दरबार का संरक्षण कमजोर होने के बाद कई चित्रकार मुर्शिदाबाद (पश्चिम बंगाल) से पटना पहुंचे। यहां मुगल और यूरोपीय चित्रकला के संगम से एक नई शैली विकसित हुई, जिसे पटना कलम के नाम से पहचान मिली। सेवक राम इस कला के शुरुआती और प्रमुख संस्थापक कलाकारों में गिने जाते हैं, जबकि शिवलाल और शिवदयाल लाल ने बाद में इसे आगे बढ़ाने का काम किया।

कला और संस्कृति के विशेषज्ञ और लेखक अनीश अंकुर बताते हैं कि, 18वीं और 19वीं सदी में अंग्रेजों ने पटना कलम के चित्रकारों से यहां के जनजीवन को लेकर पेंटिंग बनवाई ताकि इंग्लैंड में वहां के लोगों को भारतीय समाज दिखा सकें। भारत की इस महान परंपरा को अंग्रेजों ने अपने देश तक ले जाने का काम किया। एक तरह से अंग्रेजों ने पेंटिंग के माध्यम से भारतीय संस्कृति का दस्तावेजीकरण कराया था।

अनीश अंकुर बताते हैं कि, पटना कलम ने मुगल चित्रकला की बारीकियों को यूरोपीय शैली के रंगों और तकनीक के साथ मिलाकर एक अलग पहचान बनाई। इस कला की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि इसमें राजमहलों और राजाओं के बजाय आम लोगों की जिंदगी को जगह दी गई। बाजार, किसान, मजदूर, कारीगर, त्योहार और सामाजिक परंपराएं इसके प्रमुख विषय रहे। पुरानी पेंटिंग्स में धोबी घाट, उस समय के पहनावे-ओढ़ावे और चमड़े के बैग में पानी ढोने वाले भिस्ती तक को बखूबी दिखाया गया है।

छठ पर्व भारत के सबसे प्राचीन लोकपर्वों में से एक है, जिसकी जड़ें वैदिक काल और सूर्य उपासना की परंपरा से जुड़ी मानी जाती हैं। ऋग्वेद में सूर्य और उषा की उपासना के मंत्र मिलते हैं, जबकि पुराणों और महाभारत में भी सूर्य पूजा तथा छठ से जुड़ी मान्यताओं का उल्लेख है। धार्मिक मान्यता के अनुसार, महाभारत काल में कुंती और कर्ण सूर्य की उपासना करते थे, वहीं द्रौपदी द्वारा भी छठ व्रत किए जाने की कथा प्रचलित है।

बिहार, झारखंड और पूर्वी उत्तर प्रदेश में इस पर्व की विशेष सांस्कृतिक पहचान विकसित हुई। इसमें भगवान सूर्य को संध्याकालीन अर्घ्य और उदीयमान सूर्य को प्रातःकालीन अर्घ्य देकर परिवार की सुख-समृद्धि, आरोग्य और संतान की मंगलकामना की जाती है।

अनीश अंकुर कहते हैं, 'छठ बहुत ही प्राचीन परंपरा है और माना जाता है कि शकों के साथ इसका आविर्भाव हुआ। इसकी सबसे अच्छी बात यह है कि इसमें कोई बीच में बिचौलिया नहीं है और ईश्वर व भक्त के बीच सीधा कनेक्शन है। छठ महापर्व आम आदमी का पर्व माना जाता है, इसलिए आम आदमी की चित्रकला मानी जाने वाली पटना कलम में छठ को बहुत अच्छे से दर्शाया गया है। '

लंदन की ब्रिटिश लाइब्रेरी के अलावा 225 साल पुरानी एक तस्वीर बिहार में भी मौजूद है, जिसे प्रदीप जैन नाम के कलाकार ने संजोकर रखा है। इस तस्वीर की चमक आज भी उसी तरीके से बरकरार है। बिहार की चर्चित चित्रकार स्मिता पाराशर बताती हैं कि पहले पटना कलम को बनाने के लिए कठिन परिश्रम करना पड़ता था।स्मिता पाराशर कहती हैं, 'पुरानी पेंटिंग में जो रंग इस्तेमाल किए गए हैं, वे पूरी तरह प्राकृतिक हैं। गर्मियों में धूल बहुत उड़ती थी, इसलिए कलाकार गर्मियों में सिर्फ रेखांकन का काम करते थे और जाड़े के मौसम में रंग भरते थे। ठंड के मौसम में हरसिंगार के फूल, सेम के पत्ते और अन्य फूल-पत्तियों से रंग तैयार किए जाते थे। आज की तरह कृत्रिम रंगों का इस्तेमाल नहीं होता था। '

संक्षिप्त समाचार

एक माह से पेयजल संकट झेल रहे गुजैनी के लोग

कानपुर , एजेंसी। गुजैनी के जी ब्लॉक स्थित गली नंबर-730 में पेयजल संकट से लोग परेशान हैं। करीब एक माह से जलापूर्ति व्यवस्था चरमराई हुई है। कहीं नलों से पानी नहीं आ रहा तो कहीं झागयुक्त, बदबूदार और काला पानी लोगों की परेशानी बढ़ा रहा है। दूषित पानी से बीमारियों का खतरा भी बना हुआ है।दिवाली पर भी लोगों को पानी की किल्लत से जूझना पड़ा। स्थानीय निवासियों का कहना है कि जलकल विभाग के अधिकारियों से कई बार शिकायत की गई, लेकिन स्थायी समाधान नहीं हुआ। शिकायत पर कुछ दिन आपूर्ति सुधरती है और फिर वही स्थिति बन जाती है। मजबूरी में लोग आसपास के घरों में लगे सबमर्सिबल से पानी लेकर दैनिक जरूरतें पूरी कर रहे हैं।

बिजली चोरी रोकने के लिए केस्को चलाएगा महाभियान

कानपुर। बिजली चोरी पर अंकुश लगाने और लाइन लॉस कम करने के लिए केस्को जल्द ही शहर में महाभियान शुरू करेगा। इसके तहत बिजली चोरों के खिलाफ बड़े स्तर पर धरपकड़ अभियान चलाया जाएगा। शहर के कई इलाकों से लगातार बिजली चोरी की शिकायतें मिल रही हैं।रंजीतनगर, पुराना आरपीएच, आचार्यनगर और आलूमंडी सबस्टेशन व फीडर से जुड़े क्षेत्रों में बिजली चोरी की समस्या अधिक है। इससे विभाग को हर माह लाखों रुपये के राजस्व का नुकसान हो रहा है और लाइन लॉस भी बढ़ रहा है। अभियान के दौरान केस्को की टीमें इन क्षेत्रों के संदिग्ध घरों और प्रतिष्ठानों की जांच करेंगी।बिजली कनेक्शन, मीटर और लोड का सत्यापन किया जाएगा। अनियमितता मिलने पर संबंधित उपभोक्ताओं के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कराकर नियमानुसार कार्रवाई होगी। अधिकारियों के मुताबिक, अभियान का उद्देश्य बिजली चोरी रोकना, राजस्व वसूली बढ़ाना और लाइन लॉस कम करना है। इसके लिए विभाग समय-समय पर अभियान चलाता है।

विरासत गलियारा भगवा रंग से निखरने लगा, एकरूपता से बदलेगी बाजार की सूरत

गोरखपुर , एजेंसी। शहर का विरासत गलियारा अब भगवा रंग में निखरने लगा है। पांडेयहाता से धर्मशाला ओवरब्रिज तक करीब 3.5 किलोमीटर लंबे गलियारे में मकानों और दुकानों के बाहरी हिस्सों का एक समान रंगरोगन कराया जा रहा है। भगवा रंग से रंगी इमारतों के कारण गलियारे की सूरत बदलने लगी है। नगर निगम और गोरखपुर विकास प्राधिकरण की ओर से कराए जा रहे इस कार्य का उद्देश्य पूरे मार्ग को एकरूपता के साथ आकर्षक स्वरूप देना है।गलियारे में पेंटिंग का काम तेजी से चल रहा है। पांडेयहाता पुलिस चौकी से घंटाघर, रेती चौक, नखास चौक, आर्यनगर चौक और जटाशंकर चौराहा होते हुए धर्मशाला ओवरब्रिज तक मकानों और दुकानों को निर्धारित रंग में रंगा जा रहा है। अधिकारियों ने स्पष्ट निर्देश दिए हैं कि पेंटिंग में तय रंग का ही इस्तेमाल हो और गुणवत्ता से कोई समझौता न किया जाए। कार्य पूरा होने के बाद पूरा गलियारा एक समान रंग और आकर्षक स्वरूप में नजर आएगा। नगर निगम के मुख्य अभियंता अमित शर्मा ने बताया कि विरासत गलियारे के मकान व दुकानों को एक रंग में रंगा जा रहा है। इससे इस बाजार की भव्यता और बढ़ेगी।

चुनाव में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले नेताओं का हुआ सम्मान

वाराणसी , एजेंसी। देश के प्रथम शिक्षा मंत्री, महान स्वतंत्रता सेनानी मौलाना अबुल कलाम आजाद की जयंती पर शिक्षक एमएलसी लाल बिहारी यादव के कैंप कार्यालय पैगंबरपुर में कार्यक्रम हुआ। इस अवसर पर शिक्षक एमएलसी चुनाव में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले सपा के नेताओं, वित्तविहीन शिक्षक संघ के पदाधिकारियों, शिक्षकों व प्रबंधकों को लाल बिहारी यादव ने अंगवस्त्रम, पेन, डायरी और माला पहनाकर सम्मानित किया। उन्होंने कहा कि प्रदेश के पढ़े-लिखे शिक्षक मतदाताओं ने भाजपा की तानाशाही नीतियों के खिलाफ मतदान कर एक साधारण व्यक्ति को पांच गुना अधिक मतों से पुनः विजयी बनाकर विधान परिषद में भेजने का काम किया। यह जीत किसी एक व्यक्ति की नहीं, बल्कि शिक्षकों, कर्मचारियों, समाजवादी साथियों व उन सभी संघर्षशील लोगों की जीत है, जिन्होंने पूरी निष्ठा और समर्पण के साथ हमारा साथ दिया। इस ऐतिहासिक जीत में आप सभी का महत्वपूर्ण योगदान है। अध्यक्षता शिक्षक एमएलसी चुनाव के प्रभारी प्रदीप कुमार मौर्य ने की। संचालन जिला प्रवक्ता संतोष यादव ने किया। इस अवसर पर रूपनारायण पटेल, भीष्म नारायण सिंह, जगदीश यादव, चंद्र शेखर सिंह, जैन कुशवाहा, अभिषेक यादव, प्रताप गौतम आदि मौजूद रहे।

सीटी स्कैन यूनिट में फिर बिजली संकट, जांच के बिना लौटे मरीज

बरेली, एजेंसी। तीन सौ बेड अस्पताल के सीटी स्कैन यूनिट में बिजली संकट थम नहीं रहा। वैकल्पिक व्यवस्था न होने से दूर-दराज से आए मरीजों को जांच कराए बिना ही लौटना पड़ रहा है। बुधवार को फिर बिजली गुल रही। जांच के लिए आए आठ मरीज इंतजार के बाद लौट गए। पिछले माह भी बिजली संबंधी कार्य के लिए शटडाउन होने से मरीजों की जांच नहीं हो सकी थी। यही स्थिति कमोबेश प्रतिमाह दो से तीन बार होती है। इससे स्वास्थ्य विभाग की छवि धूमिल हो रही है। दोपहर एक बजे नकटिया निवासी मरीज की परिजन हमीदन ने बताया कि वह सुबह नौ बजे अस्पताल पहुंच गई थीं, लेकिन बिजली नहीं थी। स्टाफ ने बिजली आने पर ही जांच की बात कही। दोपहर 12 बजे के बाद भी लाइट नहीं आई तो आधे दिन की ओपीडी बताकर स्टाफ ने कल आने के लिए कहा। पुराना शहर के इकरार ने कहा कि सीटी स्कैन जांच के लिए आए मरीज की हालत पहले ही खराब होती है। लंबे समय तक इंतजार से उनकी हालत बिगड़ने की आशंका होती है। उन्होंने स्वास्थ्य विभाग की व्यवस्थाओं पर नाराजगी जाहिर की।

किरावली आईटीआई का गजब हाल, मशीनें हैं न प्रशिक्षक ; फिर भी हो रहे धड़ाधड़ दाखिले

आगरा , एजेंसी। किरावली में करोड़ों रुपये खर्च कर आईटीआई की आलीशान बिल्डिंग तो बना दी गई लेकिन विद्यार्थियों को तकनीकी प्रशिक्षण देने की व्यवस्था नहीं हो सकी। न किसी ट्रेड की मशीनें इंस्टॉल हुई और न ही प्रशिक्षकों की नियुक्ति। जिस परिसर में हुनर सिखाया जाना था, वहां थाने के कबाड़ रखे जा रहे हैं।

वर्ष 2024 में बनकर तैयार हुई इस बिल्डिंग में फिटर, आरएसी, वेल्डर, कोपा और इलेक्ट्रीशियन समेत छह-सात ट्रेड संचालित होने की बात कागजों में है। संस्थान में कुल 196 सीटें हैं और अब तक 70 से अधिक विद्यार्थियों के दाखिले हो चुके हैं। उन्हें प्रशिक्षण के लिए आगरा आईटीआई में भेजा जा रहा है। नोडल अधिकारी एवं राजकीय आईटीआई के प्रधानाचार्य शैलेंद्र प्रताप सिंह ने 2 सितंबर 2026 को अभ्यर्थियों को सलाह दी थी कि किसी भी निजी आईटीआई में प्रवेश लेने से पहले उसकी बिल्डिंग, लैब और कार्यशाला का भौतिक निरीक्षण जरूर करें। संस्थान धरातल पर नहीं मिलने पर प्रवेश न लें। अब वही हाल सरकारी आईटीआई में दिख रहा है। राजकीय आईटीआई फतेहपुर सीकरी (किरावली) में प्रवेश लेने वालों के प्रशिक्षण बल्केश्वर स्थित राजकीय आईटीआई में कराए जा रहे हैं। करीब 12 करोड़ 33 लाख 87 हजार रुपये की लागत से बनी इस बिल्डिंग का शिलान्यास एक जून 2021 को किया गया था। फिलहाल यहां थाने के क्षतिग्रस्त वाहन खड़े हैं। क्षेत्रीय विधायक चौधरी बाबूलाल ने भी कुछ महीने पहले प्रमुख सचिव को पत्र लिख चुके हैं। (सहायक प्रवेश प्रभारी) आईटीआई संकल्प दीक्षित ने बताया कि राजकीय आईटीआई फतेहपुर सीकरी (किरावली) के प्रवेश बल्केश्वर आईटीआई में अभी चल रहे हैं। अब तक 70 प्रवेश हो चुके हैं।

---

400 करोड़ का बाईपास,

फिर भी शहर में मौत बनकर दौड़ रहे ट्रक

आगरा , एजेंसी। आगरा-फिरोजाबाद राजमार्ग पर मौत बनकर आबादी के बीच से निकल रहे भारी वाहनों का आवागमन रोकने के लिए जनप्रतिनिधि सख्त रुख अपनाएंगे। 400 करोड़ रुपये की लागत से बने उत्तरी बाईपास से ट्रक, ट्रेलर, ट्रॉला और टैंकरों को निकालने के लिए सांसद-विधायक पुलिस-प्रशासनिक अधिकारियों को निर्देशित करेंगे। उनका कहना है कि शहर से होकर इन वाहनों के आवागमन के लिए अधिकारी ही जिम्मेदार हैं। आगरा की नौकरशाही की मनमानी नहीं रुकी तो मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी से शिकायत करेंगे। लोगों की जान से खिलवाड़ नहीं होने दिया जाएगा।

वाहनों को डायवर्ट कराने के लिए करेंगे निर्देशित : केंद्रीय राज्य मंत्री एसपी सिंह बघेल ने कहा कि उत्तरी बाईपास बनने के बाद शहर से भारी वाहन नहीं निकलने चाहिए। इस संबंध में अधिकारियों से वार्ता की जाएगी। जल्द ही एक बैठक बुलाई जाएगी। इसमें आगरा और मथुरा के अधिकारी शामिल किए जाएंगे। भारी वाहनों को डायवर्ट करने के लिए क्या समाधान होने चाहिए, इस पर चर्चा की जाएगी। भारी वाहनों के उत्तरी बाईपास से आवागमन कराने के लिए निर्देशित करेंगे।

नया शहर बनाने की योजना थी : राज्यसभा सांसद नवीन जैन ने बताया कि न्यू दक्षिण बाईपास, उत्तरी बाईपास बनाने का उद्देश्य शहर में भारी वाहनों का आवागमन रोकना था। इससे नया शहर बनाने की योजना थी। इसके लिए राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण को कार्य करना



था। एक अलग शाखा बनाई जानी थी। शहर के अंदर से भारी वाहनों के निकलने से हादसे हो रहे हैं। इस संबंध में अधिकारियों के साथ ही मुख्यमंत्री से भी बात कर वाहनों के आवागमन पर रोक लगवाई जाएगी।

पुलिस से सख्ती कराई जाएगी : फतेहपुर सीकरी सांसद राजकुमार चाहर ने कहा कि भारी वाहनों के आवागमन के मुद्दे पर प्रशासनिक अधिकारियों से पत्राचार किया जाएगा। पूर्व में भी इस संबंध में वार्ता की जा चुकी हैं। भारी वाहनों को उत्तरी बाईपास से निकालने के लिए पुलिस से सख्ती कराई जाएगी। मथुरा और आगरा के जिलाधिकारी, एसएसपी, पुलिस आयुक्त और मंडलायुक्त को पत्र लिखकर निर्देशित किया जाएगा। मनमानी नहीं रुकी तो मामला मुख्यमंत्री के समक्ष ले जाएंगे।

हाईवे पर जाम नहीं लगना चाहिए : एत्मादपुर विधायक डॉ. धर्मपाल सिंह का कहना है कि मथुरा की ओर से आने वाले भारी वाहन फिरोजाबाद की तरफ जाने के लिए आगरा शहर के बीच से निकलते हैं। इससे हाईवे पर जहां जाम लगता है, वहीं हादसे भी होते हैं। उत्तरी बाईपास पर भारी वाहनों के आवागमन को बढ़ाने के लिए ठोस प्रयास किए जाएंगे। जिलाधिकारी से कहा जाएगा कि वह भारी वाहनों पर रोक लगवाने के लिए कदम उठाएं।

सख्ती न होने से बढ़ रहे हादसे : फतेहपुर सीकरी विधायक चौधरी बाबूलाल ने कहा कि जनता के पैसे से बना उत्तरी बाईपास तभी सार्थक होगा जब कानपुर और इटावा जाने वाले भारी वाहन शहर से बाहर होकर गुजरेंगे। दिशा की बैठकों में यह मुद्दा कई बार उठा चुके हैं। संकेतक लगने के बावजूद सख्ती न होने से हादसे बढ़ रहे हैं। पुलिस आयुक्त से व्यक्तिगत मिलकर प्रवेश पूरी तरह रुकवाएंगे।

टोल टैक्स खत्म कराएंगे : उत्तर विधानसभा से विधायक पुरुषोत्तम खंडेलवाल ने कहा कि टोल टैक्स के कारण भारी वाहन चालक उत्तरी बाईपास का इस्तेमाल करने से बच रहे हैं। शहर के अंदर जाम लगा रहे हैं। इस मामले में जल्द ही केंद्रीय सड़क परिवहन मंत्री नितिन गडकरी से मुलाकात की जाएगी। उत्तरी बाईपास का टोल समाप्त करने की मांग करेंगे। टोल खत्म होते ही चालक खुद इस मार्ग से निकलेंगे। पुलिस आयुक्त और मंडलायुक्त से भी मुलाकात करेंगे।

करोड़ों खर्च के बाद भी वाहन क्यों नहीं निकाल रहे : प्रदेश मंत्री एवं विधान परिषद सदस्य विजय शिवहरे का कहना है कि बाईपास लोगों की सुविधा के लिए बनाया गया है मगर वाहनों का नहीं निकलना चिंता का विषय है। उत्तरी बाईपास से वाहन नहीं निकलने के कारण शहर में हादसे बढ़ रहे हैं। इसके लिए ब्यूरोक्रेसी की मनमानी जिम्मेदार है। इन पर सख्ती से रोक लगाई जानी चाहिए। इसके लिए एनएचएआई के अधिकारियों से पत्राचार किया जाएगा।

आम जनता को फायदा होगा : भाजपा प्रदेश महामंत्री और ज्यसभा सांसद राम प्रताप चौहान ने बताया कि हाईवे पर बड़े शैक्षणिक संस्थान और बड़े निजी अस्पताल भी हैं। इनमें रोजाना सैकड़ों विद्यार्थियों और मरीज व तीमारदारों का आना-जाना रहता है। इसके अलावा आसपास की कॉलोनी के लोग भी निकलते हैं। भारी वाहनों पर रोक लगने से आम जनता को फायदा होगा। उत्तरी बाईपास पर भारी वाहनों का आवागमन बढ़ाने के लिए सख्त कदम उठाने के लिए अधिकारियों के साथ बैठक कर ठोस कार्य योजना तैयार कराई जाएगी।

शहर की हवा जहरीली, सांस के 19 मरीज अस्पताल में भर्ती

गोरखपुर , एजेंसी। दिवाली के बाद शहर की हवा में बढ़े प्रदूषण का असर अब लोगों की सेहत पर दिखने लगा है। जिला अस्पताल की इमरजेंसी में सांस फूलने, खांसी और सीने में दर्द की शिकायत लेकर पहुंचने वाले मरीजों की संख्या में तीन गुना इजाफा हुआ है। दिवाली से पहले जहां रोजाना तीन से चार मरीज पहुंचते थे, वहीं अब यह संख्या बढ़कर 10 से 15 हो गई है। अस्पताल में सांस संबंधी परेशानी के फिलहाल 19 मरीज भर्ती हैं। इनमें 11 अस्थमा के मरीज हैं। भर्ती मरीजों में बुजुर्गों की संख्या अधिक है।पटाखों के धुएं और मौसम में बदलाव के बीच सांस संबंधी परेशानियों से जूझ रहे मरीजों की मुश्किलें बढ़ गई हैं। अस्पताल पहुंचने वाले मरीजों में सांस फूलने, सूखी खांसी, गले में खराश, सीने में जकड़न और सांस लेते समय घरघराहट की शिकायत प्रमुख है। कुछ मरीजों को शुरुआत में हल्की खांसी हुई लेकिन धीरे-धीरे सांस लेने में दिक्कत बढ़ने पर अस्पताल पहुंचना पड़ा। वहीं, कुछ मरीजों को सीने में तेज दर्द और सांस फूलने की शिकायत के बाद भर्ती करना पड़ा। मरीजों को उपचार देने के लिए जिला अस्पताल की चेस्ट और मेडिसिन ओपीडी में परामर्श दिया जा रहा है। इमरजेंसी में जरूरत के अनुसार नेबुलाइजेशन और ऑक्सीजन की सुविधा उपलब्ध कराई जा रही है। मरीजों की स्थिति के अनुसार चेस्ट एक्स-रे और ब्लड टेस्ट जैसी जांचें भी कराई जा रही हैं। गंभीर मरीजों को वार्ड में भर्ती कर उपचार दिया जा रहा है जबकि अति गंभीर मरीजों को मेडिकल कॉलेज रेफर करने के लिए एंबुलेंस की व्यवस्था है। जिला अस्पताल के आपात चिकित्सा अधिकारी डॉ. मनोज ने बताया कि पटाखों के धुएं में मौजूद सल्फर डाइऑक्साइड, नाइट्रोजन डाइऑक्साइड और कार्बन मोनोऑक्साइड जैसे प्रदूषक सांस की नलियों में जलन और सूजन पैदा कर सकते हैं।

आंगनबाड़ी के 70 पद रिक्त, केंद्रों का संचालन प्रभावित

लखनऊ, एजेंसी। आंगनबाड़ी कार्यकर्ता के पद रिक्त होने से जिले में करीब 70 केंद्रों का संचालन प्रभावित हो रहा है। इन केंद्रों की जिम्मेदारी नजदीकी केंद्रों की कार्यकर्ता या सहायिका के पास है।

लखनऊ में करीब 2,730 आंगनबाड़ी केंद्र हैं। इनका संचालन आंगनबाड़ी कार्यकर्ता के जिम्मे रहता है। पोषण अभियान, पंजीकृत बच्चों की पढ़ाई, पंजीकृत गर्भवती और किशोरियों की देखभाल एवं अन्य विभागीय काम भी संभालती हैं। प्रत्येक केंद्र पर एक सहायिका की तैनाती भी होती है। मौजूदा समय में जिले में आंगनबाड़ी के करीब 70 पद रिक्त हैं। कुछ माह पूर्व 150 से अधिक पदों पर भर्ती के बाद भी यह पद खाली रह गए। अब विभाग इन पदों पर जल्द ही भर्ती प्रक्रिया शुरू करने की बात कह रहा है। जिला कार्यक्रम अधिकारी



डीपीओ श्रेयस कुमार ने बताया कि रिक्त पदों का विवरण जुटाया जा चुका है। शीघ्र ही इन्हें भरने की प्रक्रिया शुरू की जाएगी। सहायिका के रिक्त पद भी जल्द भरे जाएंगे।

आंगनबाड़ी केंद्रों में सहायिका के भी 300 से अधिक पद खाली हैं। इनकी कमी का असर भी संबंधित केंद्रों के कामकाज पर पड़ रहा है। मार्च-अप्रैल में सहायिका के करीब 1,198 पदों पर भर्ती प्रक्रिया पूरी की गई थी। उस समय 200 से अधिक पद रिक्त रह गए थे। भर्ती प्रक्रिया में भाग लेने वाली 100 से ज्यादा सहायिका ने जॉइन नहीं किया था।

दीवाली के बाद अब वापस जाने में परेशानी, तत्काल का टिकट नहीं सिर्फ इंतजार, कोटा खुलते ही हैंग हुआ सर्वर

लखनऊ, एजेंसी। दीपावली और भैया दूज के बाद दिल्ली-मुंबई लौटने वाले यात्रियों की मुश्किलें बढ़ गई हैं। नियमित ट्रेनों में लंबी वेटिंग के चलते यात्रियों को तत्काल कोटे से कन्फर्म टिकट मिलने की उम्मीद थी, लेकिन बुधवार सुबह बुकिंग शुरू होते ही सर्वर हैंग हो गया। यात्री मोबाइल और कंप्यूटर पर वेबसाइट रिफ्रेश करते रहे, लेकिन टिकट नहीं मिल सके। तत्काल कोटे में करीब 750 सीटें थीं, जिसमें से स्लीपर की महज 48 सीटें ही यात्रियों के हाथ आईं।

बृहस्पतिवार से ट्रेनों में यात्रियों की भीड़ और बढ़ने की संभावना है। इसे देखते हुए लखनऊ से दिल्ली जाने वाली लखनऊ मेल, एसी एक्सप्रेस, गोरखधाम, वैशाली, अयोध्या-दिल्ली और गोमती एक्सप्रेस के अलावा मुंबई रूट की पुष्पक, अवध, कुशीनगर और गोरखपुर-एलटीटी एक्सप्रेस में तत्काल टिकट के लिए यात्रियों ने सुबह से ही प्रयास शुरू कर दिए थे।

तत्काल कोटे की बुकिंग सुबह 10 बजे शुरू हुई तो सर्वर हैंग हो गया। करीब तीन मिनट बाद स्थिति सामान्य हुई, लेकिन तब तक कई ट्रेनों में वेटिंग शुरू हो चुकी थी। रेलवे सूत्रों के मुताबिक, तत्काल कोटे में 750 से



अधिक सीटें उपलब्ध थीं, लेकिन तकनीकी दिक्कत के चलते यात्रियों को इसका पूरा लाभ नहीं मिल सका।

नियम बदले, फिर भी कोई राहत नहीं : रेलवे ने तत्काल टिकट बुकिंग में एजेंटों की टाइमिंग आधा घंटा घटाकर यात्रियों को प्राथमिकता देने की व्यवस्था की है। इसके बावजूद कन्फर्म टिकट मिलना मुश्किल बना हुआ है। दैनिक यात्री एसोसिएशन के अध्यक्ष एसएस उप्पल ने आशंका जताई है कि एजेंट प्रतिबंधित सॉफ्टवेयर के जरिये तत्काल कोटे की सीटें बुक कर रहे हैं।

केस-1 : टिकट नहीं मिला तो विमान से जाएंगी मुंबई : नेहा सिंह ने पुष्पक एक्सप्रेस में थर्ड एसी का तत्काल टिकट बुक करने का प्रयास किया। सर्वर हैंग होने के बाद दोबारा बुकिंग की कोशिश की तो 31 वेटिंग हो गई। अब उन्होंने विमान से मुंबई जाने का फैसला किया है।

केस-2: लखनऊ मेल में नहीं मिला टिकट : इंजीनियर राजीव उपाध्याय त्योहार मनाने लखनऊ आए थे। उन्हें वापस दिल्ली जाना था। इसके लिए उन्होंने लखनऊ मेल की सेकंड एसी में तत्काल टिकट बुक कराने की कोशिश की, लेकिन सर्वर की समस्या के चलते टिकट नहीं मिल सका।

हाईवे से एक्सप्रेसवे तक वाहनों की कतारें, घंटों जाम में कराहते रहे लोग

आगरा , एजेंसी। भाई दूज पर घरों से निकले लोगों को पहले शहर के जाम से जूझना पड़ा। इसके बाद हाईवे और एक्सप्रेसवे पर घंटों लगे जाम से कराह उठे।एत्मादपुर में तीन किमी. लंबी लाइन लग गई। पुलिस को सर्विस रोड पर वाहन रोकने पड़े। लखनऊ एक्सप्रेसवे पर फतेहाबाद में टोल पार करने में एक घंटे लग गया। हाईवे पर सिकंदरा, अरतौनी तक फंसे रहे। सैंया और किरावली में भी यही हाल रहा।

शहर में हाईवे के भगवान टाकीज, वाटर वर्क्स चौराहे और रामबाग पर ट्रैफिक घंटों तक फंसा रहा। रोडवेज बसें भी जाम का कारण बनी रहीं। बिजलीघर, साकेत कॉलोनी रोड, यमुना किनारा रोड, बल्केश्वर, पंचकुइयां, लोहामंडी रोड पर भी घंटों तक लोग जाम में फंसे। सुबह 11 बजे से ही आगरा-फिरोजाबाद हाईवे पर वाहनों का दबाव बढ़ने लगा। आगरा की तरफ आने वाले मार्ग पर टूंडला स्थित एफएच मेडिकल कॉलेज से तहसील चौराहे तक करीब दो



किमी. तक वाहनों की लाइन लग गई। बुढ़िया के ताल से बरहन तिराहे तक जाम लगा। बरहन तिराहे पर एसीपी देवेश सिंह और तहसील चौराहे पर पुलिस ने फिरोजाबाद रोड की सर्विस लेन पर तीन और चार पहिया वाहनों के आवागमन पर रोक लगा दी।

लखनऊ एक्सप्रेसवे पर फतेहाबाद क्षेत्र में दोपहर 1 बजे से लाइन लगने लगीं। टोल प्लाजा-21 पर आधा किलोमीटर तक कतारें लग गईं। टोल प्रबंधन ने सामान्य 7 लेन के साथ विशिष्ट अतिथि लेन भी खोल दी, फिर भी चालकों को आधा घंटे तक इंतजार करना पड़ा। प्रोजेक्ट मैनेजर प्रमोद धनगर ने बताया कि तीन दिन के बराबर वाहन एक ही दिन में आने से दबाव बढ़ा। ग्वालियर हाईवे पर जाम से बचने के लिए गांव बाद स्थित न्यू दक्षिणी बाईपास से मालवाहक वाहनों को डायवर्ट किया गया। रोहता, मलपुरा, इटौरा, धनौली, बाद और ककुआ चौराहों पर भी जाम के हालात रहे। सैंया चौराहे पर आगरा, धौलपुर, खेरागढ़ और इरादतनगर की ओर जाने वाले वाहनों की कतारें रहीं।

किरावली में भी वाहनों के दबाव के कारण ट्रैफिक धीमी गति से चला। एसीपी अछनेरा शैलेंद्र सिंह ने बाईपास चौराहे पर रस्सी बांधकर यातायात संचालित कराया। रायभा पर भारी वाहनों को डायवर्ट किया गया। किरावली थाना प्रभारी मदन सिंह, अछनेरा थाना प्रभारी कुलदीप, 12 उपनिरीक्षक, 2 महिला उपनिरीक्षक और 28 पुलिसकर्मी तैनात रहे।

दिल था छाती के दाईं ओर, डॉक्टरों ने सफल सर्जरी कर बदला वाल्व

लखनऊ, एजेंसी। दिल अपनी सामान्य जगह के बजाय छाती के दाईं ओर हो और शरीर के बाकी आंतरिक अंग सामान्य स्थिति में हों तो हृदय की सर्जरी डॉक्टरों के लिए बड़ी चुनौती बन जाती है। डॉ. राम मनोहर लोहिया आयुर्विज्ञान संस्थान के डॉक्टरों ने ऐसी ही दुर्लभ शारीरिक स्थिति वाले मरीज का सफल माइट्रल वाल्व रिप्लेसमेंट किया है। ऑपरेशन के बाद मरीज की हालत स्थिर है और उसे आईसीयू में रखा गया है।

श्रावस्ती निवासी विनोद कुमार (39) के दिल के वाल्व में खराबी आ गई थी और सांस लेने में दिक्कत हो रही थी। इलाज के लिए वह लोहिया संस्थान पहुंचे थे। यहां जांच कराने पर दिल के दाईं ओर होने की बात पता चली। यह स्थिति डेक्स्ट्रोकार्डिया कहलाती है। साइटस सोलिटस नामक दुर्लभ बीमारी के कारण उनका वाल्व खराब हो गया था।

संस्थान के कार्डियोथोरेसिक व वैस्कुलर सर्जरी विभाग में प्रो. डॉ. डीके श्रीवास्तव के नेतृत्व में विशेषज्ञों की टीम ने यह ऑपरेशन किया। ऑपरेशन आयुष्मान योजना के तहत पूरी तरह निशुल्क हुआ। सर्जरी में डॉक्टर तिरना मंडल, विवेक कुंवर, शरण्या रे, जूही श्रीवास्तव, शौर्य भटनागर के अलावा एनेस्थीसिया, नर्सिंग और परफ्यूजन टीम ने भी सहयोग किया।

चार घंटे तक भूखे-प्यासे भटकते रहे,

एसी का लिया था टिकट, स्लीपर में ठूंसकर भेजे गए 301 यात्री

कानपुर , एजेंसी। चौरीचौरा एक्सप्रेस के चार एसी कोच के पटरी से उतरने के बाद यात्रियों की मुश्किलें कम करने के बजाय रेलवे ने उन्हें और परेशानी में डाल दिया। हादसे के बाद एसी कोच में सफर कर रहे करीब 301 यात्रियों को उनके हाल पर छोड़ दिया गया। सुविधा और आराम के लिए यात्रियों ने एसी कोच का टिकट लिया था लेकिन हादसे के बाद उन्हें स्लीपर कोच में ठूंसकर भेजा गया। रेलवे ने विशेष ट्रेन चलाने की बात कहकर रात करीब नौ बजे सात स्लीपर कोच की ट्रेन में यात्रियों को बैठा दिया। छोटे बच्चों और महिलाओं समेत यात्रियों को ठंड में सफर करने के लिए मजबूर होना पड़ा।

यात्रियों का आरोप है कि हादसे के बाद रेलवे की ओर से न तो खाने का इंतजाम किया गया। न ही ठंड से बचने की कोई व्यवस्था। करीब चार घंटे तक उन्हें प्लेटफॉर्म पर ही भटकना पड़ा। इस दौरान घर से लगातार फोन आते रहे। परिवार के लोग उनकी सलामती और घर पहुंचने की जानकारी लेते रहे,



लेकिन यात्रियों को खुद नहीं पता था कि उन्हें कब और कैसे रवाना किया जाएगा। भूख-प्यास और अनिश्चितता ने उनकी परेशानी और बढ़ा दी।

एडवोकेट रोहित ने बताया कि यात्रियों को केवल बिस्कुट और पानी देकर जिम्मेदारी पूरी कर ली गई। प्रयागराज तक जाने वाले यात्रियों को तो किसी तरह राहत मिल सकती है। हालांकि, इससे आगे जाने वालों को खाना मिलेगा या नहीं इसकी कोई जानकारी नहीं दी गई। उन्होंने कहा कि एसी का टिकट लेने के बाद स्लीपर में सफर करना यात्रियों के साथ अन्याय है। रेलवे को हादसे के बाद यात्रियों के लिए बेहतर वैकल्पिक व्यवस्था करनी चाहिए थी।

यात्री गोविंद कुमार ने कहा कि जब टिकट एसी का लिया था तो स्लीपर में क्यों भेजा गया। रेलवे को कम से कम यात्रियों की सुविधाओं और उनकी मजबूरी का ध्यान रखना चाहिए था। विशेष ट्रेन के नाम पर उन्हें दूसरी व्यवस्था में भेज दिया गया जबकि चार घंटे तक प्लेटफॉर्म पर इंतजार करना पड़ा।

महिला यात्री शबाना ने बताया कि घर तो जाना ही है। रेलवे जो व्यवस्था करे उसी में सफर करना पड़ेगा लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि यात्रियों को बुनियादी सुविधाएं भी न दी जाएं। हादसे के बाद रेलवे को महिलाओं और बच्चों के लिए खाने, पानी और ठंड से बचाव का उचित इंतजाम करना चाहिए था।

संक्षिप्त समाचार

नमो भारत ने रचा इतिहास

5 करोड़ के पार पहुंची यात्रियों की संख्या; 93 दिन में जुड़ा एक करोड़



नई दिल्ली, एजेंसी। नमो ट्रेन से यात्रा करने वाले यात्रियों की संख्या पांच करोड़ पहुंच गई है। 21 अक्टूबर, 2023 को साहिबाबाद से दुहाई डिपो के बीच 17 किलोमीटर लंबे प्राथमिक खंड के उद्घाटन के साथ इस कारिडोर पर परिचालन की शुरुआत हुई थी। इसके बाद 16 मई 2025 को, यानी परिचालन आरंभ होने के 574 दिनों में एक करोड़ लोगों ने यात्रा की। उसके 211 दिनों बाद यात्रियों की संख्या दो करोड़, 143 दिनों में तीन करोड़ और 101 दिनों में चार करोड़ हो गई। उसके बाद 10 नवंबर को यात्रियों की संख्या बढ़कर हो गई पांच करोड़ हो गई। यानी मात्र 93 दिनों में एक करोड़ लोगों ने यात्रा की। अधिकारियों का कहना है कि संपूर्ण कारिडोर के परिचालित होने के कुछ ही महीनों में हासिल हुई यह उपलब्धि देश के प्रथम रीजनल रैपिड ट्रांजिट सिस्टम (आरआरटीएस) पर यात्रियों के लगातार बढ़ते विश्वास और इसकी तेज, आरामदायक एवं विश्वसनीय क्षेत्रीय कनेक्टिविटी की बढ़ती लोकप्रियता को दर्शाती है। नमो भारत ने दिल्ली, गाजियाबाद और मेरठ के बीच आवागमन को काफी सुगम बना दिया है। तेज कनेक्टिविटी, वातानुकूलित कोच, विश्वसनीय सेवा और मेट्रो, रेल व बस के साथ सुविधाजनक इंटरचेंज की वजह से नौकरी, शिक्षा, कारोबार और अन्य काम के लिए लोग इससे यात्रा को प्राथमिकता दे रहे हैं।

वॉटर ट्रीटमेंट प्लांट में मिले शव के टुकड़े...



क्षत-विक्षत मिला बच्चे का शव

नई दिल्ली, एजेंसी। देश की राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली के बापरोला इलाके में चार साल का मासूम बच्चा सीवर में गिर गया था, जिसे बचाने के लिए 24 घंटे तक राहत एवं बचाव कार्य जारी रहा। लेकिन, अंत में उस सीवर से बच्चे का शव बरामद हुआ, जिसे देखकर राहत एवं बचाव कार्य में जुटे सभी लोग मायूस हो गए। जल उपचार सयंत्र में बच्चे का शव क्षत-विक्षत अवस्था में मिला। प्राप्त जानकारी के मुताबिक, अब बच्चे की पहचान करने के लिए डीएनए प्रोफाइलिंग कराई जाएगी। वहीं, पुलिस ने आशंका जताई है कि सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट में गंदे पानी को छानने और साफ करने वाली बड़ी घूमने वाली मशीनों की वजह से शव के टुकड़े हो गए। बता दें कि मंगलवार दोपहर को बच्चा नांगली विहार एक्सटेंशन में खेरी बाबा पुल के पास एक मैनहोल में गिर गया था। इस घटना के बाद मंगलवार को परिवार के लोग चिंतित थे और अन्य लोग मासूम बच्चे के माता पिता को दिलासा दे रहे थे कि घबराओ मत, सब ठीक हो जाएगा। लेकिन, अफसोस की बात है कि चौबीस घंटे चले राहत एवं बचाव कार्य अभियान के बाद मासूम बच्चे के मिले शव ने सभी को दुखी कर दिया। सभी को पूरी उम्मीद थी कि राहत एवं बचाव अभियान के बाद सभी को उम्मीद थी कि बच्चा जिंदा मिलेगा। इसके बाद दिल्ली पुलिस, फायर ब्रिगेड के कर्मचारियों, स्थानीय गोताखोरों और नेशनल डिजास्टर रिस्पॉन्स फोर्स की मदद से बड़े पैमाने पर तलाशी अभियान चलाया गया। पुलिस के मुताबिक, बचाव दल ने सीवर और नाले के रास्ते का पीछा किया और आखिरकार निहाल विहार के निलोथी स्थित वाटर ट्रीटमेंट प्लांट तक पहुंच गए, जहां बच्चे का शव कई टुकड़ों में मिला। शव को पोस्टमार्मट के लिए अस्पताल भेज दिया गया है। वहीं, पुलिस ने बताया कि इस पूरे मामले की विभिन्न पहलुओं से जांच जारी है। इसके अलावा, अज्ञात लोगों के खिलाफ धारा 106(1) (लापरवाही से मौत का कारण बनना) के तहत शिकायत दर्ज की गई है।

सोनिया की पसंदीदा भारतीय डिश का हुआ खुलासा

बंगाली और गुजराती खाने की हैं दीवानी



नई दिल्ली, एजेंसी। इन दिनों सोनिया गांधी की किताब 'बिलॉन्गिंगः अ जर्नी ऑफ लव' की चर्चा काफी हो रही है। इस बीच सोनिया गांधी ने एक्स पर अपने निजी जीवन की कुछ बातें शेयर कीं।

उन्होंने अपनी किताब के रिलीज के एक दिन बाद भोजन से जुड़े अपने अनुभव साझा किए। उन्होंने बताया कि इटली से भारत आने के बाद खाने की आदत बदलना उनके लिए सबसे बड़ी चुनौती थी, लेकिन समय के साथ वे भारतीय व्यंजनों की दीवानी हो गई और खुद भी पकाना सीख गईं। सोनिया गांधी ने कहा कि उन्हें बंगाली और गुजराती (खासकर सूरत की) भोजन बहुत पसंद है। उनके घर की किचन का मुख्य हिस्सा अरहर की दाल है। बेटी प्रियंका गांधी के साथ एक वीडियो में उन्होंने बताया कि मुझे भारतीय खाना पसंद करने में समय लगा। अपने पसंदीदा व्यंजनों की बात करते हुए उन्होंने कबाब, चिकन टिक्का, तंदूरी चिकन, दाल मखनी, कश्मीरी कोफ्ता और हाख का जिक्र किया। प्रियंका ने याद दिलाया कि मां दाल-चावल की बात भूल गईं। इस पर सोनिया ने कहा कि जिस दिन मैं इस घर में आई थी उस दिन से लेकर आज तक हमारे घर में सिर्फ अरहर की दाल ही बनती है। कोई दूसरी दाल नहीं।

अपने एक्स पोस्ट में उन्होंने लिखा कि खाना हमेशा मेरी कहानी का खास हिस्सा रहा है। अच्छी भोजन की तलाश में ही मेरी मुलाकात राजीव से हुई और प्यार हो गया। सालों बाद भारत भी मेरे पास उसी तरह आया, एक-एक भोजन के साथ। पहले विविधता ने मुझे हैरान किया और मसालों ने डराया। अब दाल-चावल घर का स्वाद है और मैं एक दिन भी इसके बिना नहीं रह सकती। प्रियंका ने याद दिलाया कि मां बचपन में उनके लिए खांडवी बनाती थीं, जिसे सोनिया ने आसान बताया। बात इंदिरा गांधी तक पहुंची। प्रियंका ने कहा कि दादी खाना नहीं बना सकती थीं, लेकिन सोनिया ने बताया कि वे स्वाद बढ़ाने के लिए सही चीजें चुनने में माहिर थीं।

संस्मरण में सोनिया ने लिखा है कि 1969 में इंदिरा गांधी के साथ गुजरात यात्रा पर उन्होंने कुछ भी नहीं चखा और सिर्फ तरबूज व फलों पर चार दिन गुजारे। बाद में गुजराती खाने का स्वाद जानकर उन्हें अपनी उस गलती पर पछतावा हुआ। दिल्ली आने पर हरिवंश राय बच्चन के घर में मसालों की गंध उनके बाल और कपड़ों में समा जाती थी। शुरू में इतालवी खाने की याद सताती थी, लेकिन धीरे-धीरे वे पंजाबी सरसों का साग-मक्की की रोटी, इडली-डोसा, ककोरी कबाब, बंगाली और गोवा के व्यंजनों तक पहुंच गईं।

दिल्ली के सोनिया विहार में डंपर और ऑटो की टक्कर

● नवजात बच्ची समेत तीन की मौत और पांच घायल



नईदिल्ली, एजेंसी। पूर्वी दिल्ली के सोनिया विहार पुश्ता पर बुधवार रात डंपर और सवारियों से भरे ऑटो के बीच जोरदार टक्कर हो गई। हादसे में तीन लोगों की मौत हो गई, जबकि पांच लोग घायल हो गए। मृतकों में एक नवजात बच्ची भी शामिल है। वहीं, तीन साल की बच्ची हादसे में सुरक्षित बच गई। घायलों को उपचार के लिए जग प्रवेश चंद्र अस्पताल में भर्ती कराया गया है। हादसे के बाद स्थानीय लोगों और पुलिस की मदद से घायलों को अस्पताल पहुंचाया गया। दमकल विभाग के पहुंचने से पहले ही पुलिस और स्थानीय लोग घायलों को अस्पताल ले जा चुके थे। हादसे में राजा (32) और राखी (30) समेत पांच लोग घायल हुए हैं।

पांच लोग गंभीर रूप से घायल

पुलिस ने बताया कि बुधवार देर रात हादसे की सूचना मिली। ऑटो मानेसर की तरफ से आ रहा था और सभापुर गांव की तरफ से। डंपर (डीएल-1एलवाई-5990) और ऑटो (डीएल-1आरएबी-5531) की आपने सामने से टक्कर हुई थी। टक्कर इतनी जबरदस्त थी कि ऑटो में सवार लोग गंभीर रूप से घायल हो गए।

ट्रंप-नेतन्याहू के बीच तीखी बहस का दावा

फोन पर बातचीत चिल्लाने तक पहुंची, ईरान पर कार्रवाई को लेकर उभरे मतभेद



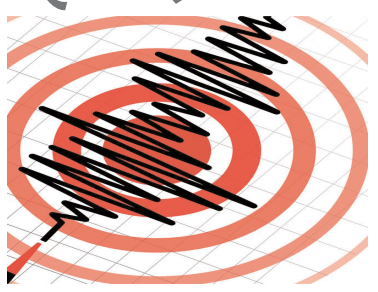
यरुशलम, एजेंसी। ईरान के खिलाफ युद्ध की आगे की रणनीति को लेकर अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप और इस्राइली प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू के बीच तनाव की खबरें सामने आई हैं। इस्राइली मीडिया रिपोर्टों के मुताबिक, पिछले कुछ दिनों में दोनों नेताओं के बीच फोन पर हुई बातचीत तीखी बहस में बदल गई। इस दौरान दोनों के बीच ईरान को लेकर अमेरिकी और इस्राइली रणनीति पर मतभेद सामने आए। इस्राइल के समाचार संस्थानों येनेट और येदियोत अहरोनोत की रिपोर्ट के अनुसार, नेतन्याहू ने ट्रंप पर ईरान के खिलाफ दोबारा सैन्य कार्रवाई शुरू करने का दबाव बनाया। वहीं, ट्रंप ने तेहरान के साथ चल रही शांति वार्ता को आगे बढ़ाने पर जोर दिया।

दोनों नेताओं के बीच किस बात पर मतभेद? – रिपोर्टों के मुताबिक, नेतन्याहू लगातार अमेरिका से ईरान पर फिर हमले शुरू करने और वहां सत्ता परिवर्तन की दिशा में कदम उठाने की मांग कर रहे हैं। दूसरी ओर, ट्रंप सैन्य कार्रवाई दोबारा शुरू करने के पक्ष में नहीं हैं। वह ईरान पर आर्थिक दबाव बनाए रखकर कूटनीतिक बातचीत के जरिए रियायतें हासिल करना चाहते हैं। दोनों मीडिया संस्थानों ने सूत्रों के हवाले से बातचीत को बेहद तीखी बताते हुए इसे 'शाउटिंग मैच फ्रॉम हेल' यानी तीखी बहस कहा। हालांकि, इस्राइल के एक वरिष्ठ अधिकारी ने दोनों नेताओं के बीच सप्ताहांत में बातचीत होने की पुष्टि की, लेकिन किसी टकराव से इनकार किया। नेतन्याहू के कार्यालय ने भी बातचीत के दौरान झगड़े की खबरों को खारिज किया। कार्यालय ने इन रिपोर्टों को 'फेक न्यूज' बताया।

पहले भी फोन पर हुई थी तीखी बातचीत – ट्रंप और नेतन्याहू के बीच ईरान संघर्ष को लेकर पहले भी फोन पर तीखी बातचीत हो चुकी है। जून में दोनों नेताओं के बीच कई मुद्दों पर असहमति सामने आई थी। उस दौरान ट्रंप ने द पोस्ट से बातचीत में कहा था कि एक फोन कॉल के दौरान उन्होंने नेतन्याहू को अपशब्द बोलते हुए पागल कहा था। फाइनेंशियल टाइम्स ने भी कुछ दिन पहले रिपोर्ट दी थी कि नेतन्याहू ट्रंप को रोजाना फोन कर ईरान के खिलाफ पूर्ण सैन्य कार्रवाई दोबारा शुरू करने के लिए मनाने की कोशिश कर रहे हैं। अक्तूबर चुनाव के बाद नेतन्याहू की स्थिति पर भी अनिश्चितता बनी हुई है। रिपोर्ट के मुताबिक, आम चुनाव में सीटें गंवाने के बाद उनकी राजनीतिक स्थिति को लेकर सवाल उठ रहे हैं।

ईरान में सत्ता परिवर्तन चाहते हैं नेतन्याहू –नेतन्याहू ने ईरान के खिलाफ दोबारा हमले शुरू करने और वहां सत्ता परिवर्तन की मांग जारी रखी है।

नेपाल में तड़के आया भूकंप, 4.9 मापी गई तीव्रता



काठमांडो, एजेंसी। नेपाल में गुरुवार सुबह भूकंप के तेज झटके महसूस किए गए। राष्ट्रीय भूकंप विज्ञान केंद्र की ओर से जारी जानकारी के मुताबिक, रिक्टर पैमाने पर भूकंप की तीव्रता 4.9 मापी गई। भूकंप सुबह 4 बजकर 30 मिनट पर आया। यह इस सप्ताह में नेपाल में आया दूसरा भूकंप है। इससे पहले शुक्रवार को सुबह सात बजे के आसपास भूकंप के झटके महसूस किए गए थे। गुरुवार सुबह आए भूकंप का केंद्र नेपाल में जमीन से 73 किलोमीटर नीचे था। राष्ट्रीय भूकंप विज्ञान केंद्र के अनुसार, भूकंप का केंद्र 27.671 डिग्री उत्तरी अक्षांश और 87.987 डिग्री पूर्वी देशांतर पर दर्ज किया गया। यह स्थान भारत के सिक्किम स्थित युकसोम से करीब 40 किलोमीटर उत्तर-पश्चिम में है। इससे पहले पिछले शुक्रवार को भी नेपाल में भूकंप के तेज झटके महसूस किए गए थे। नेपाल के हुम्ला जिले में पिछले शुक्रवार को सुबह 4.2 तीव्रता का भूकंप आया था। नेपाल के राष्ट्रीय भूकंप निगरानी एवं अनुसंधान केंद्र के मुताबिक, भूकंप सुबह 7 बजकर 10 मिनट पर आया। हुम्ला जिला कर्णाली प्रांत में स्थित है और राजधानी काठमांडू से करीब 700 किलोमीटर उत्तर-पश्चिम में पड़ता है। भूकंप के झटके आसपास के मुगु और बाजहांग जिलों में भी महसूस किए गए थे। धरती के भीतर सात प्लेट्स हैं, जो लगातार घूमती रहती हैं। जिस स्थान पर प्लेट्स की टक्कर होती है, उस जगह को फॉल्ट लाइन कहा जाता है। पृथ्वी के अंदर स्थित टेक्टोनिक प्लेटों के खिसकने, आपस में टकराने या रगड़ खाने से ऊर्जा उत्पन्न होती है। जब प्लेटों के टकराने से ज्यादा ऊर्जा निकलती है, तो धरती की सतह पर कंपन पैदा होता है। जिस स्थान पर प्लेट्स टकराती हैं, उस स्थान पर सबसे अधिक भूकंप का असर होता है। लेकिन जब भूकंप की तीव्रता अधिक होती है तो इसके झटके काफी दूर तक महसूस किए जाते हैं।

अमेरिका को ईरान की दो टूक, गालिबाफ बोले- अब पहले जैसी नहीं होगी स्थिति

तेहरान, एजेंसी। ईरान की संसद के स्पीकर और मुख्य वार्ताकार मोहम्मद बाघेर गालिबाफ ने कहा है कि ईरान पर अमेरिका-इस्राइल के हमले के बाद होर्मुज जलडमरूमध्य (स्ट्रेट ऑफ होर्मुज) कभी भी अपनी युद्ध-पूर्व स्थिति में वापस नहीं लौटेगा। उन्होंने बताया कि तेहरान और ओमान के बीच इस रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण जलमार्ग की देखरेख को लेकर एक सहमति बनी है। बुधवार को अल जजीरा के साथ एक साक्षात्कार में, गालिबाफ ने कहा कि ओमान के साथ यह सहमति, अमेरिका को दिए गए ईरान के सात-सूत्रीय प्रस्ताव का हिस्सा है।



इसका उद्देश्य आठ महीने से चल रहे उस संघर्ष को समाप्त करना है, जो इस साल 28 फरवरी को अमेरिका-इस्राइल के हमलों में ईरान के पूर्व सर्वोच्च नेता अली खमेनेई के मारे जाने के बाद शुरू हुआ था। संसदीय अध्यक्ष ने संकेत दिया कि होर्मुज जलडमरूमध्य (स्ट्रेट ऑफ होर्मुज) को नियंत्रित करने वाली भविष्य की व्यवस्थाएं युद्ध से पहले की व्यवस्थाओं से अलग होंगी। इस जलमार्ग तक बिना किसी रोक-टोक के अंतरराष्ट्रीय पहुंच के विचार को खारिज करते हुए, गालिबाफ ने तर्क दिया कि इसके नियम उन देशों के अधिकार क्षेत्र में आते हैं जिनकी सीमाएं इससे लगती हैं। उन्होंने अल जजीरा से कहा, 'वहां कोई 'मुक्त जल' (अंतरराष्ट्रीय जल) नहीं है, और 1982 का [समुद्री कानून पर संयुक्त राष्ट्र कन्वेंशन] इस जलडमरूमध्य पर लागू नहीं होता है। होर्मुज जलडमरूमध्य के नियम उन दो तटीय देशों के कानूनों द्वारा तय होते हैं जिनकी सीमाएं इससे लगती हैं। वाशिंगटन के साथ राजनयिक बातचीत की संभावनाओं पर, गालिबाफ ने कहा कि तेहरान ने मध्यस्थ की भूमिका निभा रहे कतर के जरिए संयुक्त राज्य अमेरिका को अपना जवाब भेज दिया है। शांति वार्ता शुरू करने के लिए सात शर्तें रखी हैं।

यूएस-रूस और चीन की बैठक

ट्रंप-जिनपिंग से मुलाकात को राजी हैं पुतिन? रूबियो-वांग यी की बातचीत में बनी योजना

वाशिंगटन, एजेंसी। अमेरिका के विदेश मंत्री और राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार मार्को रूबियो ने बुधवार को चीन के विदेश मंत्री वांग यी से फोन पर बातचीत की। इस दौरान दोनों पक्षों ने एशिया-प्रशांत आर्थिक सहयोग (एपीईसी) शिखर सम्मेलन के लिए अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की आगामी चीन यात्रा, जी20 शिखर सम्मेलन के लिए चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग की प्रस्तावित फ्लोरिडा यात्रा और शांति तथा परमाणु निरस्त्रीकरण को बढ़ावा देने के लिए रूस को शामिल करते हुए एक त्रिपक्षीय बैठक की संभावना पर चर्चा की। अमेरिकी विदेश मंत्रालय की ओर से जारी बयान के मुताबिक, यह बातचीत 11 नवंबर को चीन के अनुरोध पर हुई। इसमें द्विपक्षीय संबंधों और दोनों देशों के राष्ट्राध्यक्षों की आगामी यात्राओं पर मुख्य रूप से चर्चा की गई। अमेरिकी विदेश मंत्रालय ने अपने बयान में कहा कि विदेश मंत्री और निदेशक ने रणनीतिक स्थिरता पर आधारित रचनात्मक संबंध बनाए रखने की दोनों देशों के नेताओं की प्रतिबद्धता को दोहराया। यह संबंध सम्मान, निष्पक्षता और पारस्परिकता के सिद्धांतों पर आधारित होंगे। बयान में कहा गया कि दोनों पक्ष साझा उद्देश्यों को आगे बढ़ाने के लिए शीर्ष नेतृत्व के स्तर पर सार्थक बातचीत के महत्व पर सहमत हुए। इन उद्देश्यों में शांति और परमाणु निरस्त्रीकरण शामिल हैं। इसके लिए रूस की भागीदारी वाली संभावित त्रिपक्षीय नेताओं की बैठक भी आयोजित की जा सकती है।

बातचीत को लेकर चीन ने क्या कहा? – चीन के विदेश मंत्रालय ने भी इस बातचीत को लेकर अलग बयान जारी किया। इसमें बातचीत को सकारात्मक और रचनात्मक बताया गया। मंत्रालय के मुताबिक, वांग यी और मार्को रूबियो ने चीन-अमेरिका संबंधों और दोनों देशों के राष्ट्राध्यक्षों के बीच होने वाली बातचीत पर विस्तार से विचारों का आदान-प्रदान किया। चीनी विदेश मंत्रालय के बयान के अनुसार, वांग यी ने कहा कि अमेरिका के प्रति चीन की नीति स्थिर और निरंतर बनी रहेगी। चीन अमेरिका के साथ संवाद और सहयोग मजबूत करने, मतभेदों और संवेदनशील मुद्दों को उचित तरीके से सुलझाने तथा एक-दूसरे का समर्थन करने के लिए तैयार है। उन्होंने कहा कि दोनों देशों को 2026 में होने वाली एशिया-प्रशांत आर्थिक सहयोग (एपीईसी) नेताओं की अनौपचारिक बैठक और जी-20 नेताओं के शिखर सम्मेलन की सफल मेजबानी में एक-दूसरे का सहयोग करना चाहिए। साथ ही चीन-अमेरिका के बीच रचनात्मक रणनीतिक और स्थिर संबंधों को प्रभावी ढंग से लागू करने की दिशा में काम करना चाहिए।

एपीईसी सम्मेलन में ट्रंप जाएंगे चीन, शी जिनपिंग आएंगे अमेरिका – यह बातचीत ऐसे समय हुई है, जब ट्रंप के आगामी एपीईसी शिखर सम्मेलन में शामिल होने के लिए चीन दौरे की तैयारियां चल रही हैं। वहीं, चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग के जी-20 शिखर सम्मेलन में हिस्सा लेने के लिए अमेरिका के फ्लोरिडा आने की उम्मीद है। इन दोनों यात्राओं के दौरान वैश्विक मुद्दों पर दोनों नेताओं की बातचीत को अहम माना जा रहा है। इसी बीच ट्रंप, शी जिनपिंग और रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के बीच त्रिपक्षीय बैठक की संभावना भी सामने आई है।

पीट हेगसेथ पर फिर लटकी महाभियोग की तलवार, प्रमिला जयपाल बोलीं- अगले साल लाएंगे प्रस्ताव

वॉशिंगटन, एजेंसी। भारतीय मूल की अमेरिकी सांसद प्रमिला जयपाल ने रक्षा मंत्री पीट हेगसेथ के खिलाफ अगले साल महाभियोग की प्रक्रिया आगे बढ़ाने का संकल्प लिया है। इसके साथ ही उन्होंने प्रतिनिधि सभा में डेमोक्रेटिक पार्टी के नेता हकीम जेफ्रीज को भी स्पष्ट संदेश दिया कि नई कांग्रेस के गठन के बाद उनके पास अपने नेतृत्व का प्रभाव साबित करने के लिए बहुत कम समय होगा। वॉशिंगटन की डेमोक्रेट सांसद जयपाल ने बुधवार को सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा, ''रिपब्लिकन सांसदों ने मंगलवार रात प्रक्रियागत कदम उठाकर हेगसेथ के महाभियोग को रोक दिया, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है



कि वह जवाबदेही से बच गए हैं। हम अगले साल उनके खिलाफ महाभियोग लाएंगे।'' जयपाल की यह टिप्पणी ऐसे समय आई है जब उन्होंने डेमोक्रेटिक नेता जेफ्रीज को लेकर अपनी पिछली टिप्पणी पर सफाई दी। उन्होंने शुक्रवार को 'टॉकिंग पॉइंट्स मेमो' को दिए साक्षात्कार में कहा था कि जेफ्रीज के पास अपनी सक्रियता और नेतृत्व क्षमता साबित करने के लिए 'अपेक्षाकृत कम समय' होगा। यह साक्षात्कार मंगलवार को प्रकाशित हुआ। बुधवार को उन्होंने स्पष्ट किया, 'शॉर्ट रोप' कहने का मेरा आशय कार्रवाई के लिए सीमित समय से था। मेरे शब्दों को अमेरिका में अश्वेत समुदाय के खिलाफ लिंचिंग और नस्लीय हिंसा के भयावह इतिहास से जोड़कर पेश करना बेहद आपत्तिजनक है। मैंने नस्लीय हिंसा और उसके प्रतीकों के इस्तेमाल की कड़ी निंदा की।' जयपाल ने कहा कि पिछले सप्ताह मध्यावधि चुनावों में डेमोक्रेटिक पार्टी का समर्थन करने वाले मतदाताओं की नाराजगी और अपेक्षाओं का जवाब पार्टी को ठोस नीतियों के जरिए देना होगा। उन्होंने कहा कि प्रगतिशील नेताओं को डेमोक्रेटिक संसदीय समूह के भीतर बदलाव की ताकत बनना चाहिए। उन्होंने जेफ्रीज की तुलना सीनेट में डेमोक्रेटिक नेता चक शूमर से करते हुए कहा कि शूमर को उनके पद से हटाया जाना चाहिए। वहीं, उन्होंने सरकारी कामकाज बंद होने की स्थिति से निपटने और आव्रजन प्रवर्तन के लिए धन मुहैया कराने के रिपब्लिकन प्रयासों का विरोध करने के मामले में जेफ्रीज के रुख की सराहना की।

न्यूयॉर्क में तीन मंजिला इमारत ढही

वाशिंगटन, एजेंसी। अमेरिका के न्यूयॉर्क शहर में बुधवार को तीन मंजिला इमारत अचानक ढह गई। हादसा ब्रुकलिन के फ्लैटबुश इलाके में हुआ। इमारत एक निर्माण स्थल के किनारे बनी थी। इसमें कम से कम दो लोगों की मौत हुई है। वहीं, कई लोग मलबे में दब गए। सूचना मिलते ही दमकलकर्मी मौके पर पहुंचे और लोगों को निकालने के लिए बचाव अभियान शुरू किया। यह हादसा शाम करीब चार बजे हुआ। हादसे के बाद दमकलकर्मियों ने मलबे में फंसे लोगों की तलाश शुरू की। घटनास्थल के ऊपर से लिए गए वीडियो में बड़ी संख्या में दमकलकर्मी मलबा हटाते दिखाई दिए। एक जगह पर कई बचावकर्मी जुटे थे और मलबे को काटने के लिए आरी का इस्तेमाल करते नजर आए। अधिकारियों के अनुसार, दो लोगों की मौत हो गई और कम से कम चार अन्य लोगों को गंभीर हालत में अस्पताल ले जाया गया। छह अन्य लोगों को मामूली चोटों के साथ अस्पताल पहुंचाया गया। जिस इमारत के ढहने का हादसा हुआ, उसके बगल में एक दूसरी एक मंजिला इमारत को निर्माण कार्य के लिए पहले ही गिरा दिया गया था। वहां खुदाई का काम चल रहा था। इसी निर्माण स्थल के किनारे बनी तीन मंजिला इमारत गिरकर खुदाई वाले गड्ढे में जा गिरी। इसके कारण गड्ढा ईंटों और लकड़ियों के मलबे से भर गया।

संपादकीय | कंक्रीट के जंगल निगल रहे पक्षियों का आशियाना

विकास की दौड़ में मनुष्य ने अपने रहने के लिए बड़े-बड़े मकान बना लिए, लेकिन इस निर्माण के बीच प्रकृति के दूसरे जीवों के हिस्से की जगह लगातार कम होती गई. कभी घरों के सामने खुले आंगन, छायादार पेड़, मिट्टी के चबूतरे और पानी के पात्र हुआ करते थे. सुबह गौरैया की चहचहाहट से होती थी. छतों और मुंडेरों पर कबूतर, मैना और बुलबुल दिखाई देते थे.

अब इन दृश्यों की जगह कांक्रीट के मकानों, बंद बालकनियों और सीमित हरित क्षेत्रों ने ले ली है. सवाल है कि विकास की इस तस्वीर में पक्षियों के लिए जगह कहां बची है?

'बर्डमैन ऑफ इंडिया' के नाम से प्रसिद्ध सलीम अली ने अपना जीवन पक्षियों के अध्ययन और संरक्षण के लिए समर्पित किया. उन्होंने देश के विभिन्न हिस्सों में भ्रमण कर पक्षियों की प्रजातियों, व्यवहार और प्राकृतिक आवासों का वैज्ञानिक अध्ययन किया. उनका जीवन प्रकृति के प्रति जिज्ञासा, प्रेम और जिम्मेदारी का उदाहरण है. आज पक्षियों के तेजी से बदलते संसार में सलीम अली जैसी संवेदनशील दृष्टि की पहले से कहीं अधिक आवश्यकता है.

भारत में पक्षियों की स्थिति का वैज्ञानिक आकलन करने वाली 'स्टेट ऑफ इंडियाज बर्ड्स 2023' रिपोर्ट चिंताजनक तस्वीर प्रस्तुत करती है. 30 हजार से अधिक पक्षी प्रेमियों के लगभग तीन करोड़ अवलोकनों पर आधारित इस अध्ययन में 942 प्रजातियों का विश्लेषण किया गया. रिपोर्ट के अनुसार, दीर्घकालिक आंकड़े उपलब्ध 348 प्रजातियों में लगभग 60



प्रतिशत की आबादी में गिरावट दर्ज हुई. वहीं, हाल के रुझानों में आकलित 359 प्रजातियों में लगभग 40 प्रतिशत की संख्या घटी पाई गई. कुल 178 प्रजातियों को उच्च संरक्षण प्राथमिकता वाली श्रेणी में रखा गया. ये आंकड़े बताते हैं कि पक्षियों का संकट अब केवल कुछ दुर्लभ प्रजातियों तक सीमित नहीं है.

शहरीकरण, पेड़ों की कटाई, जलाशयों का अतिक्रमण, घास के मैदानों का विनाश, कीटनाशकों का प्रयोग और जलवायु परिवर्तन इसके प्रमुख कारण हैं. राजस्थान में गोडावण जैसी गंभीर रूप से संकटग्रस्त प्रजाति का अस्तित्व भी प्राकृतिक घास के मैदानों के संरक्षण पर निर्भर है. दूसरी ओर, गौरैया की घटती उपस्थिति हमारे बदलते घरेलू और शहरी परिवेश की ओर संकेत करती है.

विकास का अर्थ केवल ऊंची इमारतें, चौड़ी सड़कें और आधुनिक सुविधाएं नहीं हो सकता. ऐसा विकास अधूरा है जिसमें मनुष्य के लिए आवास तो हों लेकिन पक्षियों के लिए पेड़ और घोंसले तक न बचें. घरों में खुले स्थान, छायादार पेड़, जलस्रोत और स्थानीय पौधों को महत्व देना होगा. छतों और बालकनियों में पानी रखना तथा घोंसलों को सुरक्षित रखना भी संरक्षण के उपयोगी प्रयास हैं.

आज बच्चों को प्रकृति से जोड़ने और पक्षियों के प्रति संवेदनशील बनाने की जरूरत है. जिस आकाश में पक्षियों की उड़ान कम होती जाती है, वहां पर्यावरण का संतुलन भी प्रभावित होता है. इसलिए विकास की योजनाओं में मनुष्य के साथ दूसरे जीवों के अस्तित्व के लिए भी स्थान सुरक्षित रखना होगा.

सांसों पर संकट न बने बढ़ता प्रदूषण

प्रदूषण अब केवल पर्यावरण की समस्या नहीं, बल्कि लोगों की सेहत के लिए भी बड़ी चुनौती बनता जा रहा है. खासकर बुजुर्गों के लिए जहरीली हवा में सांस लेना कई तरह की स्वास्थ्य समस्याओं को बढ़ा सकता है. उम्र के साथ शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता और फेफड़ों की कार्यक्षमता में बदलाव आने लगता है. ऐसे में प्रदूषित हवा का असर फेफड़ों और दिल की सेहत पर अधिक पड़ सकता है. अस्थमा, डायबिटीज, हृदय रोग और सांस संबंधी परेशानियों से जूझ रहे वरिष्ठ नागरिकों को इस मौसम में विशेष सावधानी बरतने की जरूरत है. लगातार प्रदूषण के संपर्क में रहने से खांसी, सांस लेने में परेशानी, आंखों में जलन और थकान जैसी समस्याएं बढ़ सकती हैं. अक्सर बुजुर्ग सुबह की सैर को अपनी दिनचर्या का जरूरी हिस्सा मानते हैं, लेकिन प्रदूषण बढ़ने पर यही आदत परेशानी का कारण बन सकती है. इसलिए सेहत को ध्यान में रखते हुए अपनी दिनचर्या में कुछ बदलाव करना जरूरी है. बाहर निकलने से पहले अपने क्षेत्र का वायु गुणवत्ता सूचकांक जरूर जांचें. प्रदूषण का स्तर अधिक होने पर पार्क या सड़क पर टहलने



के बजाय घर के अंदर हल्की एक्सरसाइज करें. जरूरी काम से बाहर जाना पड़े तो अच्छी फिटिंग वाला एन 95 मास्क पहनें. यह हवा में मौजूद बारीक प्रदूषण कणों के संपर्क को कम करने में मदद करता है. प्रदूषण केवल बाहर ही नहीं, घर के अंदर भी पहुंच सकता है. इसलिए अधिक प्रदूषण के समय खिड़कियां और दरवाजे बंद रखें. धूम्रपान, अगरबत्ती और धुआं पैदा करने वाली चीजों से दूरी बनाएं. घर में सफाई करते समय धूल उड़ने से बचें. जरूरत के अनुसार एयर प्यूरीफायर का इस्तेमाल भी किया जा सकता है. इसके अलावा घर में हवा की उचित आवाजाही का ध्यान रखना भी जरूरी है. इस दौरान खानपान पर ध्यान देना भी जरूरी है. मौसमी फल, हरी सब्जियां, दालें और पौष्टिक भोजन अपनी डाइट में शामिल करें. पर्याप्त पानी पीते रहें. संतुलित आहार शरीर को जरूरी पोषण देने में मदद करता है. हालांकि केवल खानपान से प्रदूषण के नुकसान से बचाव संभव नहीं है, इसलिए दूसरी सावधानियां भी जरूरी हैं. पहले से किसी बीमारी से परेशान बुजुर्ग लोग डॉक्टर की सलाह के अनुसार दवाएं लेते रहें. बिना चिकित्सकीय सलाह के दवाओं में बदलाव न करें. लगातार खांसी, सांस फूलने या सीने में दर्द जैसी परेशानी होने पर तुरंत चिकित्सकीय सहायता लें. बढ़ते प्रदूषण के बीच बुजुर्गों की सेहत की जिम्मेदारी परिवार की भी है. परिवार के सदस्य उनकी नियमित स्वास्थ्य जांच, दवाओं और दिनचर्या पर ध्यान दें. प्रदूषण के दिनों में उन्हें अनावश्यक रूप से बाहर जाने से रोकें. थोड़ी-सी सावधानी और जागरूकता बुजुर्गों को स्वस्थ और सुरक्षित रखने में अहम भूमिका निभा सकती है. आखिर उम्र के इस पड़ाव पर अच्छी सेहत ही सबसे बड़ी पूंजी है.

आज का कार्टून



प्रत्यर्पण संधिः कानूनी जिम्मेदारियां बनाम राजनीतिक वजहें

पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना के प्रत्यर्पण की बांग्लादेश की मांग को कानूनी मामला मानने का भारत का फैसला, न कि उनके संभावित हैंडओवर पर कोई राजनीतिक प्रतिबद्धता करना, नई दिल्ली की अपनी संधि दायित्वों, घरेलू कानूनी बातों और अपने पड़ोस में बड़े रणनीतिक हितों के बीच संतुलन बनाने की कोशिश को दिखाता है. अगस्त 2024 में ढाका में राजनीतिक उथल-पुथल के बाद से यह मुद्दा भारत-बांग्लादेश संबंधों के सामने सबसे संवेदनशील चुनौतियों में से एक बनकर उभरा है. विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल की मंगलवार को यहां नियमित मीडिया ब्रीफिंग में की गई टिप्पणी इस संदर्भ में महत्वपूर्ण है. जायसवाल ने नियमित ब्रीफिंग के दौरान एक सवाल के जवाब में कहा, 'शेख हसीना के प्रत्यर्पण पर, मैंने आपको बताया है कि यह एक लीगल मामला है और इस मुद्दे से उसी हिसाब से निपटा जाएगा.' यह दोहराकर कि हसीना के प्रत्यर्पण को लागू कानूनी फ्रेमवर्क के अनुसार निपटाया जाएगा, नई दिल्ली ने बांग्लादेश की मांग को स्वीकार करने या उसे सीधे खारिज करने से परहेज किया है. यह समय खास तौर पर महत्वपूर्ण है.

अरुनिम भुइयां

हसीना, जो अगस्त 2024 में बांग्लादेश से भागने के बाद से भारत में रह रही हैं, ने दिसंबर में अपने देश लौटने का इरादा जताया है. नया बांग्लादेशी पासपोर्ट और राष्ट्रीय पहचान पत्र पाने की उनकी कथित कोशिशों ने उनकी वापसी और उससे जुड़ी प्रत्यर्पण की मांग को फिर से द्विपक्षीय कूटनीति के केंद्र में ला दिया है. इसलिए, अभी का मुद्दा अब सरकार के पूर्व प्रमुख के कानूनी दर्जे तक ही सीमित नहीं है. यह इस बात का टेस्ट बन गया है कि क्या भारत और बांग्लादेश किसी राजनीतिक रूप से आरोपित व्यक्तिगत मामला को अपने बड़े रिश्ते की दिशा तय करने से रोक सकते हैं. इस विवाद की जड़ में भारत-बांग्लादेश प्रत्यर्पण संधि है, जिस पर जनवरी 2013 में हस्ताक्षर हुआ था और जो उसी साल अक्टूबर में लागू हुई थी. इसके बाद 2016 में प्रत्यर्पण प्रक्रिया को आसान बनाने और आपराधिक गतिविधि और आतंक के खिलाफ कोऑपरेशन को मजबूत करने के लिए एग्रीमेंट में बदलाव किया गया. इस संधि में उन लोगों के आपसी प्रत्यर्पण का प्रावधान है जिन पर किसी भी देश में प्रत्यर्पणीय अपराधों के आरोप लगे हों, उन पर मुकदमा चला हो या उन्हें दोषी ठहराया गया हो.

आर्टिकल 2 के तहत, एक प्रत्यर्पणीय अपराध में आम तौर पर ऐसा काम शामिल होता है जिसके लिए दोनों देशों के कानूनों के तहत कम से कम एक साल की जेल हो सकती है. लेकिन, संधि प्रत्यर्पण को ऑटोमैटिक नहीं बनाती है. यह कुछ ऐसे आधार बताती है जिन पर अनुरोध किया गया देश किसी व्यक्ति को सरेंडर करने से मना कर सकता है. आर्टिकल 6 में राजनीतिक तरह के अपराधों के लिए छूट शामिल है, हालांकि यह खास तौर पर कई गंभीर अपराधों को, जैसे मर्डर, गैर-इरादतन हत्या, अपहरण और कुछ आतंकवाद से जुड़े अपराधों को राजनीतिक अपराधों की परिभाषा से बाहर रखता है. इससे भी जरूरी बात यह है कि आर्टिकल 8 में ऐसे मामलों में प्रत्यर्पण से इनकार करने का आधार दिया गया है, जहां यह गलत या दबाने वाला हो, जिसमें यह भी शामिल है कि आरोप न्याय के हित में अच्छी नीयत से नहीं लगाया गया हो. आर्टिकल 7 में यह भी बताया गया है कि अगर किसी व्यक्ति पर मुकदमा चलाया जा सकता है, तो उस देश की अदालतों में मुकदमा चलाने से मना किया जा सकता है, और फिर केस को मुकदमा चलाने के लिए संबंधित अधिकारियों के पास भेजा जाएगा. ये नियम हसीना के मामले में खास तौर पर काम के हैं, क्योंकि उनके खिलाफ कानूनी कार्रवाई में जुलाई-अगस्त 2024 में छात्रों के नेतृत्व वाले विद्रोह को हिंसक तरीके से दबाने से जुड़े आरोप शामिल हैं.

बांग्लादेश के अंतरराष्ट्रीय अपराध न्यायाधिकरण ने नवंबर 2025 में कार्रवाई से जुड़े एक मामले में उनकी गैरमौजूदगी में उन्हें मौत की सजा सुनाई. हसीना ने गलत काम करने से इनकार किया है और कार्रवाई की वैधता को खारिज कर दिया है. संयुक्त राष्ट्र ने अनुमान लगाया है कि विरोध प्रदर्शनों को दबाने के दौरान करीब 1,400 लोग मारे गए. इसलिए, नई दिल्ली के सामने न सिर्फ बांग्लादेशी न्यायिक आदेश के होने की जांच करने का मुश्किल काम है, बल्कि कार्रवाई से जुड़े कानूनी हालात, लागू संधि के नियम और भारतीय कानून की जरूरतों की भी जांच करनी है. यह अंतर जरूरी है. भारत का यह कहना कि इस मामले को कानूनी मुद्दे के तौर पर देखा जाएगा, यह भरोसा नहीं देता कि हसीना को प्रत्यर्पित किया जाएगा. इसी तरह, यह बांग्लादेश के अनुरोध को अस्वीकार करने का भी मतलब नहीं है. 10 नवंबर की टिप्पणी हसीना की नए बांग्लादेशी यात्रा दस्तावेज हासिल करने की कथित कोशिश के बैकग्राउंड में आई. रिपोर्ट्स के मुताबिक, उनके वकीलों ने नया पासपोर्ट और राष्ट्रीय पहचान पत्र मांगने के लिए नई दिल्ली में बांग्लादेश उच्चायोग से संपर्क किया. खबर है कि अगस्त 2024 में देश छोड़ने के बाद बांग्लादेशी अधिकारियों ने उनके पहले के डॉक्यूमेंट्स रद्द कर दिए थे. हसीना ने दिसंबर में



बांग्लादेश लौटने का इरादा जताया है, और कहा जा रहा है कि वह लौटने के कानूनी नतीजों का सामना करने के लिए भी तैयार हैं. हालांकि, ढाका ने पासपोर्ट अनुरोध को रिजेक्ट कर दिया है और दोहराया है कि भारत को प्रत्यर्पण संधि के तहत उसे सौंप देना चाहिए.

जायसवाल से यह भी पूछा गया कि क्या वैध पासपोर्ट के बिना प्रत्यर्पण हो सकता है. उन्होंने इस सवाल को टेक्निकल और लीगल बताया और कहा कि लोगों को ट्रैवल करने के लिए ट्रैवल डॉक्यूमेंट की जरूरत होती है, जबकि पासपोर्ट अनुरोध पर कमेंट करने से मना कर दिया और मामले को बांग्लादेश उच्चायोग को भेज दिया. यह अंतर महत्वपूर्ण है. प्रत्यर्पण और ट्रैवल डॉक्यूमेंट्स जारी करना अलग-अलग कानूनी और प्रशासनिक प्रक्रिया हैं. पासपोर्ट अपने आप में यह तय करने वाला फैक्टर नहीं है कि प्रत्यर्पण का अनुरोध स्वीकार किया जाएगा या नहीं. जरूरी सवाल यह है कि क्या प्रत्यर्पण संधि और लागू घरेलू कानूनों की जरूरतें पूरी की गई हैं. इसलिए, अभी के हालात में तीन आपस में जुड़े लेकिन अलग-अलग मुद्दे शामिल हैंः हसीना की वापस लौटने की कथित इच्छा, बांग्लादेशी सरकार का उन्हें नए डॉक्यूमेंट्स देने से मना करना और भारत से उनके प्रत्यर्पण की लगातार मांग. 5 अगस्त 2024 को उनकी सरकार गिरने के बाद हसीना का मुद्दा नई दिल्ली और ढाका के बीच टकराव का एक बड़ा कारण बन गया है. एक दशक से भी ज़्यादा समय तक, हसीना के नेतृत्व में भारत और बांग्लादेश के बीच सहयोग बढ़ता रहा. उनकी सरकार ने सुरक्षा, आतंकवाद, संपर्क और आर्थिक सहयोग पर नई दिल्ली के साथ मिलकर काम किया.

भारत अपने उत्तर-पूर्वी क्षेत्र में स्थिरता बनाए रखने और अपनी पड़ोस पहले और एक्ट ईस्ट नीतियां को आगे बढ़ाने में बांग्लादेश को एक महत्वपूर्ण साझेदार मानता है. इस रिश्ते में सीमा पार रेलवे संपर्क, सड़क अवसंरचना, अंतर्देशीय जलमार्ग, बिजली ट्रांसमिशन और व्यापार सुविधा में भी काफी तरक्की हुई. लेकिन, हसीना के जाने और ढाका में राजनीतिक बदलाव ने उस राजनीतिक माहौल को पूरी तरह बदल दिया जिसमें यह साझेदारी चल रही थी. मुहम्मद यूनुस की नेतृत्व वाली अंतरिम सरकार ने भारत के प्रति ज़्यादा आलोचनात्मक दृष्टिकोण अपनाया, जिसमें हसीना की नई दिल्ली में लगातार मौजूदगी बार-बार झगड़े का मुद्दा बन गई.

बांग्लादेश ने भारतीय इलाके से उनके पब्लिक बयानों पर भी चिंता जताई और कहा कि इससे घरेलू राजनीतिक घटनाक्रम पर असर पड़ सकता है. इसके बाद हुए चुनाव और तारिक रहमान के नेतृत्व में सरकार बनने से दोनों देशों के रिश्तों में एक और अध्याय शुरू हुआ है. फिर भी, प्रत्यर्पण का सवाल राजनीतिक आत्मविश्वास को फिर से बनाने में एक बड़ी रुकावट बना हुआ है. ढाका में नई सरकार के लिए हसीना की वापसी के कानूनी और घरेलू राजनीतिक दोनों पहलू हैं.

पूर्व प्रधानमंत्री पर प्रदर्शनकारियों पर हिंसक कार्रवाई की जिम्मेदारी लेने का आरोप है, और उन पर केस चलाना बांग्लादेश के 2024 के बाद के राजनीतिक माहौल में एक अहम मुद्दा बन गया है. लेकिन, भारत के लिए प्रत्यर्पण पर कोई भी फैसला ढाका की मौजूदा सरकार के साथ उसके सीधे रिश्ते से कहीं ज़्यादा असरदार होता है. इसमें कानूनी प्रक्रिया, कूटनीतिक विश्वसनीयता, राजनीतिक स्थिरता और भारत की पड़ोस नीति के दीर्घकालिक हितों के सवाल शामिल हैं. भारत की मुख्य कूटनीतिक चुनौतियों में से एक है बांग्लादेश में नए राजनीतिक नेतृत्व के साथ अच्छे रिश्ते बनाना, और हसीना मुद्दे को पूरे द्विपक्षीय एजेंडा पर हावी नहीं होने देना. नई दिल्ली ने ऐतिहासिक रूप से बांग्लादेश को अपने सबसे महत्वपूर्ण पड़ोसियों में से एक माना है. दोनों देश लगभग 4,096 किलोमीटर का बॉर्डर शेयर करते हैं, जिससे बॉर्डर सुरक्षा, गैर-कानूनी तस्करी, स्मगलिंग, प्रवासन और सीमा पार आपराधिक नेटवर्क पर सहयोग उनके अपने-अपने देश के हितों के लिए जरूरी हो जाता है. हसीना के कार्यकाल के दौरान, बांग्लादेश ने भारत के उत्तर-पूर्व में सक्रिय विद्रोही नेटवर्क से निपटने में सहयोग बढ़ाया. इससे नई दिल्ली को इस इलाके में सुरक्षा की स्थिति सुधारने में मदद मिली और नॉर्थईस्ट और बड़े उपमहाद्वीप के बीच ज़्यादा आर्थिक एकीकरण आसान हुआ. जाहिर है, भारत ढाका में राजनीतिक नेतृत्व चाहे जो भी हो, इन सुरक्षा फायदों को बनाए रखना चाहेगा. साथ ही, बांग्लादेश की नई सरकार उम्मीद करेगी कि भारत उसकी राजनीतिक अधिकार को पहचाने और प्रत्यर्पण अनुरोध समेत उसकी चिंताओं पर जवाब दे. चुनौती यह है कि मांग को पूरी तरह से खारिज करने से ढाका में अविश्वास बढ़ सकता है, जबकि बिना शर्त हैंडओवर नई दिल्ली के लिए कानूनी और कूटनीतिक मुश्किलें पैदा कर सकता है. इससे भारत की साख पर भी असर पड़ सकता है, क्योंकि वह एक ऐसा देश है जो अंतरराष्ट्रीय मामलों में सही प्रक्रिया, न्यायिक सुरक्षा और कानूनी संस्थाओं के सम्मान पर जोर देता है.

क्या ट्रम्प भारत को लेकर अपनी नीतियां बदलेंगे?

हिंदुस्तान का एक बड़ा वर्ग मुदित है कि अमेरिका के मध्यावधि चुनाव में राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प की पराजय हुई और वे पहले की तुलना में ज्यादा बौने हो गए. अनेक भारतीय जानकार ट्रम्प की हार के बाद इस आधार पर विश्लेषण कर रहे हैं कि अब भारत के ऊपर छाया घटाटोप अंधकार जैसे दूर हो गया है और यह विश्व-चौधरी भारत को लेकर अपनी नीतियां बदल देगा. पर शायद वे गहराई से मंथन नहीं कर रहे हैं. राष्ट्रपति के रूप में अभी भी डोनाल्ड ट्रम्प के दो बरस बाकी हैं. अपने शेष कार्यकाल में ट्रम्प भारत को लेकर अधिक खूंखार नहीं हो जाएंगे, इसकी क्या गारंटी है?

राजेश बादल

भले ही चुनाव के बाद उनके नाखून और दांत तोड़ दिए गए हों, पर अमेरिकी संविधान के मुताबिक अभी भी उनके पास शक्तियों का एक अथाह भंडार सुरक्षित है. ईरान के साथ जंग रोकने से और यूरोपीय यूनियन से दूरी से अमेरिका की आर्थिक बदहाली पर निश्चित रूप से अंकुश लगता है. लेकिन हिंदुस्तान के प्रति उनकी कोप दृष्टि अमेरिका को कोई ज्यादा नुकसान नहीं पहुंचाती. अलबत्ता आने वाले दिनों के लिए भारत को स्पष्ट चेतावनी देती है कि उसे ट्रम्प की नीतियों से अधिक सतर्क और सावधान रहना होगा. अब भारत के पड़ोस में अमेरिका, पाकिस्तान और बांग्लादेश का उभरता त्रिकोण खतरे की घंटी बजा रहा है. चीन तो सिर पर एक तटस्थ शत्रु की भूमिका में है ही. अमेरिकी इशारे पर ही पाकिस्तान ने मक्का गठबंधन बनाया है.

ऐसा कोई गठबंधन अभी भारत के पास नहीं है, जो यह कहता हो कि भारत पर इन देशों ने आक्रामक कार्रवाई की तो कोई अन्य देश उसे अपने पर आक्रमण मानेगा. ले-देकर भूटान, नेपाल और श्रीलंका ही ऐसे देश हैं, जिनके बल पर भारत उछल सकता हो. मगर इन देशों की संयुक्त ताकत का क्या अर्थ है. म्यांमार का फौजी शासन भी चीन के ज्यादा करीब है.

आपको याद होगा कि एक जमाने में भारत ने पाकिस्तान के चारों ओर अफगानिस्तान, ईरान, इराक, रूस और दूसरे छोर पर बसे बांग्लादेश के माध्यम से ऐसी घेराबंदी की थी कि पाकिस्तान के लिए उससे बाहर आना कठिन था. वह इस घेराबंदी से घबराया हुआ था. इसीलिए उसने चीन और अमेरिका की गोद में बैठना हमेशा पसंद किया.

वैसे भारत के विरुद्ध अमेरिका का पाकिस्तान को समर्थन तो 1947 से ही मिलता रहा है. उसने हमेशा अंतरराष्ट्रीय मंचों पर पाकिस्तान को समर्थन देना जारी रखा. भारत उसके लिए एक ऐसी ताकत था जो कभी भी उसके समानांतर खड़ा होकर आंखों में आंखें डालकर बात करने का साहस कर सकता था.

भारत को इस कुटिल गठबंधन का मुकाबला करने के लिए रूस (तत्कालीन सोवियत संघ) से मैत्री की एक स्वाभाविक परंपरा डालनी पड़ी थी. यह स्थिति एशिया में एक ऐसा शक्ति संतुलन बनाती थी कि कोई भी देश एक-दूसरे की सार्वभौमिकता पर चढ़ाई नहीं कर सकता था. मगर इन दिनों हालात बदले हुए हैं. पलड़ा अमेरिका के पक्ष में झुका है.

पाकिस्तान में इमरान खान और बांग्लादेश में शेख हसीना वाजेद की सरकारों का तख्तापलट अमेरिकी इशारे पर हुआ था - यह तथ्य छिपा हुआ नहीं है. अब दोनों मुल्कों की हुकूमतें अमेरिका के पक्ष में खड़ी दिखाई देती हैं. इन दोनों राष्ट्रों की भौगोलिक, सामाजिक और अंदरूनी सियासी स्थितियों का लाभ भी उसे



मिल रहा है.

इसीलिए भारत में भी जब-तब वह अस्थिरता पैदा करने की अप्रत्यक्ष कोशिश करता रहा है. यह अलग बात है कि उसके कथित प्रयास कामयाब नहीं हुए. अब घायल ट्रम्प अपनी छवि बेहतर बनाने के लिए शेष कार्यकाल में क्या कर बैठेंगे - कोई नहीं जानता. अमेरिका, पाकिस्तान, बांग्लादेश का त्रिकोण आने वाले दिनों में क्या आकार लेगा, कोई नहीं जानता.

मगर यह अनुमान लगाने में कोई हिचक नहीं होनी चाहिए कि कारोबारी नजरिये से भारत के साथ कोई बहुत रियायत नहीं बरती जाने वाली है. इसके अलावा रूस और ईरान के साथ उसे संबंध सुधारने का अवसर मिल सकता है. तेल खरीद और अन्य क्षेत्रों में आयात-निर्यात में उदारता की स्थिति बन सकती है. यह भी हो सकता है कि ट्रम्प भारत पर टैरिफ का बोझ और नहीं डालें.

पर तुलनात्मक रूप से बांग्लादेश और पाकिस्तान को राहत यकीनन मिलेगी. बांग्लादेश ने भारत से संबंधों में कड़वाहट घोली है और पाकिस्तान के साथ उसके रिश्ते मधुर हुए हैं. इसलिए भारत से उसे जो आर्थिक प्राणवायु प्राप्त होती थी, वह अब नहीं मिल रही है. इस कारण वहां के लोगों को पाकिस्तान की तरह रोजमर्रा की वस्तुओं के लिए परेशान होना पड़ रहा है.

पाकिस्तान पहले से ही बुरे दौर से गुजर रहा है. वह बांग्लादेश को भारत के विरुद्ध भड़का तो सकता है, मगर राहत देने की स्थिति में वह नहीं है. ऐसे में दोनों मुल्क अमेरिका और ट्रम्प की ओर आशा भरी निगाहों से देख रहे हैं. अमेरिका के लिए पाकिस्तान और बांग्लादेश के बाजार भारत की तुलना में कितने फायदेमंद हैं, यह तो वक्त ही बताएगा.

पर भारत के इन पड़ोसियों के लिए आत्मविश्वास का इंजेक्शन तो अमेरिका से ही आएगा. भारतीय नीति-नियंताओं को अपनी नीतियां इसे ध्यान में रखकर बनानी होंगी. सबसे खास बात तो यह है कि भारत को इस त्रिकोण से बड़ी चुनौती सामरिक और रक्षा के क्षेत्र में मिलेगी. भारतीय सेना और अर्धसैनिक बलों को उत्तर, पूरब और पश्चिम सीमाओं पर अधिक चौकस रहना होगा.

चूंकि ईरान-अमेरिका-इजराइल और रूस-यूक्रेन युद्ध में आधुनिक तकनीक और प्रयोगों का उपयोग बढ़ा है और चीन तथा अमेरिका पाकिस्तान और बांग्लादेश को यह तकनीकी सहयोग दे रहे हैं. ताजा सूचना यह है कि पाकिस्तान ने भारतीय सीमा पर पचास से अधिक केंद्र एंटी ड्रोन इकाइयां स्थापित की हैं.

तुर्किये भी इस काम में पाकिस्तान को सहायता दे रहा है. अमेरिका आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के आधुनिकतम संस्करण पाकिस्तान को मुहैया करा रहा है. उधर बांग्लादेश भी चीन से सैनिक साजो-सामान के लिए समझौते कर रहा है. यह स्थिति हिंदुस्तान के लिए बेहद गंभीर चेतावनी दे रही है.

आईबीएसएफ विश्व स्नूकर चैंपियनशिप शुरु

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर में पहली बार बड़े अंतरराष्ट्रीय स्तर की स्नूकर प्रतियोगिता का रोमांच देखने को मिलेगा। आज 12 से 21 नवंबर तक यशवंत क्लब में आईबीएसएफ विश्व स्नूकर चैंपियनशिप 2026 का आयोजन किया जाएगा।इसमें दुनिया के 30 से अधिक देशों के खिलाड़ी खिताब के लिए मुकाबला करेंगे।



चैंपियनशिप में भारत की 22 सदस्यीय टीम भी हिस्सा लेगी। इसमें देश के दिग्गज स्नूकर खिलाड़ी पंकज आडवाणी और महिला चैंपियन अनुपमा रामचंद्रन शामिल हैं। प्रतियोगिता में अंतरराष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ियों के बीच कड़े मुकाबले देखने को मिलेंगे।

13 नवंबर से शुरू होंगे मुकाबले

12 नवंबर को शाम 7 बजे खिलाड़ियों और रेफरियों की बैठक होगी। इसके बाद 13 नवंबर से क्वालिफाइंग मुकाबलों की शुरुआत होगी। प्रतियोगिता 21 नवंबर तक चलेगी। इस दौरान विभिन्न देशों के खिलाड़ी विश्व चैंपियन बनने के लिए अपनी चुनौती पेश करेंगे।

इंदौर को मिलेगी अंतरराष्ट्रीय पहचान- इस चैंपियनशिप के आयोजन से इंदौर को अंतरराष्ट्रीय खेल मानचित्र पर नई पहचान मिलने की उम्मीद है। देश-विदेश के खिलाड़ियों, अधिकारियों और खेल प्रेमियों की मौजूदगी से शहर में खेल गतिविधियों को भी बढ़ावा मिलेगा।

न्यूजीलैंड ने फुटबॉल मैच में भारत को 5-0 से हराया

ऑकलैंड (एजेंसी)। न्यूजीलैंड दौरे पर भारतीय फुटबॉल टीम को पहले इंटरनेशनल फ्रेंडली मैच में 0-5 से हार मिली।ऑकलैंड के गो मीडिया स्टेडियम में गुरुवार को खेले गए मुकाबले में मेजबान टीम ने पहले हाफ में ही 3 गोल की बढ़त बना ली थी। दूसरे हाफ में दो और गोल कर न्यूजीलैंड ने मुकाबला अपने नाम कर लिया।

वर्गीस से गेंद अपने ही गोलपोस्ट में गई

न्यूजीलैंड को पांचवें मिनट में बढ़त मिली, जब भारत के डिफेंडर बिजॉय वर्गीस से गेंद अपने ही गोलपोस्ट में चली गई।इसके बाद जेसी रैंडल ने 34वें और 43वें मिनट में



गोल कर न्यूजीलैंड की बढ़त 3-0 कर दी।

दूसरे हाफ में वुड और बेलिस ने किए गोल- दूसरे हाफ में भी न्यूजीलैंड का दबदबा जारी रहा। क्रिस वुड ने 57वें मिनट में गोल कर स्कोर 4-0 कर दिया। इसके बाद 74वें मिनट में लाचलन बेलिस ने पांचवां गोल दागकर भारत की वापसी की उम्मीदें खत्म कर दीं।

भारतीय गोलकीपर विशाल कैथ ने कई मौकों पर गोल बचाए, लेकिन न्यूजीलैंड के हमलों को रोक नहीं सके।दूसरे हाफ में क्रिस वुड ने गोल कर न्यूजीलैंड की बढ़त 4-0 कर दी।

रविवार को क्राइस्टचर्च में दूसरा मैच

भारतीय टीम अब न्यूजीलैंड के खिलाफ दूसरा इंटरनेशनल फ्रेंडली मैच रविवार को क्राइस्टचर्च में खेलेगी। पहले मुकाबले में मिली हार के बाद भारतीय टीम की कोशिश दूसरे मैच में बेहतर प्रदर्शन करने की होगी।

10 साल की ईरा ने बनाए 6 वर्ल्ड रिकॉर्ड

दुनिया की सबसे कम उम्र की क्वलिफाइड स्कूबा डाइवर बनीं, माता-पिता नेवी में कमांडर



मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र के बुलढाणा की 10 साल की ईरा आदित्य राउत ने स्कूबा डाइविंग में एक दिन में 6 वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाए हैं। उन्होंने 10 साल, 17 घंटे और 35 मिनट की उम्र में दुनिया की सबसे कम उम्र की क्वालिफाइड स्कूबा डाइवर बनने का रिकॉर्ड बनाया। ईरा ने यह उपलब्धि अंडमान-निकोबार के शहीद द्वीप स्थित डाइव ट्राइब सेंटर में हासिल की। उनके माता-पिता दोनों भारतीय नौसेना में कमांडर हैं।

- **एसएसआई ने डाइविंग योग्यता प्रमाणित की, 6 रिकॉर्ड की पुष्टि हुई-** ईरा की स्कूबा डाइविंग योग्यता को अंतरराष्ट्रीय संस्था स्कूबा स्कूल्स इंटरनेशनल (एसएसआई) ने प्रमाणित किया है। वहीं, इंटरनेशनल बुक ऑफ रिकॉर्ड्स के निर्णायक अरविंदर सिंह भाटी ने मौके पर उनके सभी 6 रिकॉर्ड की जांच कर पुष्टि की।
- **पानी के अंदर 1 मिनट में सबसे ज्यादा हैंड सिग्नल दिखाए-** ईरा ने सबसे कम उम्र की क्वालिफाइड स्कूबा डाइवर बनने के अलावा पानी के अंदर कई रिकॉर्ड बनाए। इनमें तीन रिकॉर्ड टीनएज से कम उम्र के प्रतिभागियों की कैटेगरी में दर्ज हुए।

हैंड सिग्नल- पानी के अंदर 1 मिनट में सबसे ज्यादा स्कूबा डाइविंग हैंड सिग्नल दिखाने का रिकॉर्ड।

डाइविंग उपकरणों की पहचान- पानी के नीचे सबसे ज्यादा डाइविंग उपकरणों की पहचान करने का रिकॉर्ड।

सबसे ज्यादा दूरी- पानी के अंदर 1 मिनट में सबसे ज्यादा दूरी तय करने का रिकॉर्ड।

समुद्री जीवों की पहचान- स्कूबा डाइविंग के दौरान सबसे ज्यादा समुद्री जीवों की प्रजातियों की पहचान करने का रिकॉर्ड।

एक दिन में 6 रिकॉर्ड:

एक ही दिन में 6 अलग-अलग वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाने का कीर्तिमान।ईरा ने एक ही दिन में तीन रिकॉर्ड अपने नाम किया।

पिता-मां नेवी में कमांडर, दादा भी रह चुके नौसेना अधिकारी



ईरा के पिता कमांडर आदित्य राउत और मां कमांडर स्नेह बुडाकोटी भारतीय नौसेना में सेवाएं दे रहे हैं। उनके दादा अशोक राजाराम राउत भी नौसेना में कमांडर रह चुके हैं। ईरा का परिवार मूल रूप से महाराष्ट्र के बुलढाणा जिले का रहने वाला है।ईरा फिलहाल कर्नाटक के कारवार स्थित नेवल चिल्ड्रन स्कूल में कक्षा 5वीं की छात्रा हैं। नौसेना से जुड़े परिवार में पली-बढ़ीं ईरा ने कम उम्र में ही स्कूबा डाइविंग जैसे एडवेंचर स्पोर्ट्स में रुचि दिखाई।

सीरीज जीतने के इरादे से उतरेगी टीम इंडिया

आज पहली बार कप्तानी करेंगे श्रेयस अय्यर



माउंट माउंगानुई (एजेंसी)। भारत और न्यूजीलैंड के बीच पांच मैचों की वनडे सीरीज का चौथा मुकाबला शुक्रवार को माउंट माउंगानुई में खेला जाएगा। टीम इंडिया फिलहाल सीरीज में 2-0 से आगे है और उसकी नजर इस मुकाबले को जीतकर सीरीज अपने नाम करने पर होगी। वहीं, न्यूजीलैंड के लिए यह मुकाबला करो या मरो जैसा है। इस मैच में भारतीय टीम की कप्तानी श्रेयस अय्यर करते नजर आएंगे, क्योंकि शुभमन गिल टेस्ट सीरीज की तैयारियों के लिए टीम से बाहर हो गए हैं।

पहली बार वनडे कप्तानी श्रेयस के लिए सबसे बड़ी चुनौती - चौथे वनडे में श्रेयस अय्यर के लिए सबसे बड़ी चुनौती कप्तानी के साथ बल्लेबाजी में भी खुद को साबित करने की होगी। वह पहली बार भारतीय वनडे टीम की कप्तानी संभालेंगे। हालांकि, इस सीरीज में उनकी बल्लेबाजी चर्चा का विषय रही है और शॉर्ट गेंदों के खिलाफ उनकी परेशानी एक बार फिर सामने आई है।

शुभमन गिल समेत ये खिलाड़ी टीम से हुए बाहर- न्यूजीलैंड के खिलाफ बाकी दो वनडे मुकाबलों के लिए भारतीय टीम में कई बदलाव किए गए हैं। शुभमन गिल टेस्ट सीरीज की तैयारियों पर ध्यान देने के लिए टीम से बाहर हो गए हैं। उनके अलावा केएल राहुल और अंशुल कंबोज भी रेड बॉल क्रिकेट की तैयारी के लिए टीम छोड़ चुके हैं। इन खिलाड़ियों की गैरमौजूदगी में रुतुराज गायकवाड़, ईशान किशन और मोहम्मद सिराज जैसे खिलाड़ियों को अपनी प्रतिभा दिखाने का मौका मिल सकता है।

रोहित शर्मा के साथ कौन करेगा ओपनिंग- शुभमन गिल के टीम से बाहर होने के बाद सबसे बड़ा सवाल यह है कि चौथे वनडे में रोहित शर्मा के साथ पारी की शुरुआत कौन करेगा। इसके लिए ईशान किशन और रुतुराज गायकवाड़ दो प्रमुख दावेदार माने जा रहे हैं। रोहित शर्मा भी इस दौरे पर अब तक बड़ी पारी नहीं खेल पाए हैं। उन्होंने सीरीज में अब तक 0 और 23 रन बनाए हैं।

17 दिसंबर से शुरू होगा विश्व टेनिस लीग का पांचवां सीजन

बेंगलुरु में सजेगा टेनिस का महाकुंभ



बेंगलुरु- (एजेंसी)। भारतीय टेनिस प्रेमियों के लिए बड़ी खुशखबरी है। विश्व टेनिस लीग (डब्ल्यूटीएल) के पांचवें सीजन का आयोजन इस साल दिसंबर में बेंगलुरु में किया जाएगा। चार दिवसीय इस टूर्नामेंट में भारत और विदेश के कई दिग्गज टेनिस खिलाड़ी कोर्ट पर अपना दमखम दिखाएंगे। भारतीय खिलाड़ियों में सुमित नागल, माया राजेश्वरन रेवती और दक्षिणेश्वर सुरेश जैसे नाम शामिल हैं। टूर्नामेंट का आयोजन 17 से 20 दिसंबर तक किया जाएगा।

- **बेंगलुरु में शुरू होगा विश्व टेनिस लीग का पांचवां सीजन-** विश्व टेनिस लीग का पांचवां संस्करण 17 दिसंबर से 20 दिसंबर तक बेंगलुरु में आयोजित होगा। इस चार दिवसीय प्रतियोगिता के सभी मुकाबले एसएम कृष्णा टेनिस स्टेडियम में खेले जाएंगे। इस टूर्नामेंट में अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ियों के साथ भारतीय टेनिस सितारों को भी अपनी प्रतिभा दिखाने का मौका मिलेगा। आयोजकों को उम्मीद है कि इस बार भी दर्शकों को रोमांचक मुकाबले देखने को मिलेंगे।
- **सुमित नागल और माया राजेश्वरन समेत भारतीय खिलाड़ी दिखाएंगे दम-** विश्व टेनिस लीग के पांचवें सीजन में भारतीय खिलाड़ियों की मौजूदगी खास रहने वाली है। सुमित नागल, माया राजेश्वरन रेवती और दक्षिणेश्वर सुरेश जैसे खिलाड़ी एक बार फिर कोर्ट पर नजर आएंगे। इन खिलाड़ियों के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ियों के साथ मुकाबला करना अपनी प्रतिभा दिखाने का अच्छा अवसर होगा। इसके अलावा भारतीय टेनिस फैंस को अपने पसंदीदा खिलाड़ियों को घरेलू मैदान पर खेलते देखने का मौका मिलेगा।
- **भारतीय टेनिस को मिलेगा बड़ा मंच-** विश्व टेनिस लीग का पांचवां सीजन भारतीय खिलाड़ियों के लिए अंतरराष्ट्रीय सितारों के साथ खेलने का अहम मंच साबित हो सकता है। घरेलू दर्शकों के सामने खेलने से खिलाड़ियों को अपने प्रदर्शन में सुधार करने और अनुभव हासिल करने का अवसर मिलेगा। 17 से 20 दिसंबर तक चलने वाले इस टूर्नामेंट पर टेनिस प्रेमियों की नजरें रहेंगी। खासतौर पर सुमित नागल और युवा भारतीय खिलाड़ियों के प्रदर्शन को देखने के लिए फैंस उत्साहित होंगे।

पाउला बडोसा समेत कई अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी भी होंगे शामिल

इस टूर्नामेंट में स्पेन की स्टार टेनिस खिलाड़ी पाउला बडोसा भी हिस्सा लेंगी। उनके अलावा युकी भांबरी और श्रीवल्ली भामिदिपति जैसे खिलाड़ी भी पिछले सीजन की तरह इस बार अपनी चुनौती पेश करेंगे। पिछले सीजन में हिस्सा लेने वाले कई खिलाड़ियों की वापसी से टूर्नामेंट का रोमांच बढ़ने की उम्मीद है। अंतरराष्ट्रीय और भारतीय खिलाड़ियों की मौजूदगी से दर्शकों को कई शानदार मुकाबले देखने को मिल सकते हैं।

ब्रेट रैंडेल को पहली बार न्यूजीलैंड टीम में मौका

भारत के खिलाफ आखिरी 2 वनडे में शामिल; 5वें मैच में क्लार्कसन भी खेलेंगे



आकलैंड (एजेंसी)। न्यूजीलैंड ने भारत के खिलाफ वनडे सीरीज के आखिरी दो मुकाबलों के लिए 31 साल के तेज गेंदबाज ब्रेट रैंडेल को टीम में शामिल किया है। रैंडेल को पहली बार सीनियर इंटरनेशनल टीम में जगह मिली है। वहीं, ऑलराउंडर जोश क्लार्कसन पांचवें और आखिरी वनडे के लिए टीम से जुड़ेंगे। न्यूजीलैंड क्रिकेट ने गुरुवार को इसकी घोषणा की।जोश क्लार्कसन पांचवें और आखिरी वनडे के लिए टीम से जुड़ेंगे।

चौथा वनडे शुक्रवार को, भारत सीरीज में 2-0 से आगे- सीरीज का चौथा मुकाबला शुक्रवार को माउंट माउंगानुई में खेला जाएगा, जबकि पांचवां और आखिरी मैच रविवार को होगा।5 मैचों की सीरीज में भारतीय टीम 2-0 से आगे है। तीसरा वनडे बारिश के कारण रद्द हो गया था।

145 प्रोफेशनल मैच खेल चुके, डर्बीशायर से भी खेले

ब्रेट रैंडेल न्यूजीलैंड के घरेलू क्रिकेट में अनुभवी तेज गेंदबाज हैं। वह अब तक 145 प्रोफेशनल मैच खेल चुके हैं। इनमें न्यूजीलैंड्र के लिए खेले गए 5 मुकाबले भी शामिल हैं रैंडेल हाल ही में इंग्लैंड की काउंटी चैंपियनशिप में डर्बीशायर की ओर से खेलकर लौटे हैं।

श्रीलंका ने पहली पारी में 446 रन बनाए

डी सिल्वा ने 167 और मेंडिस ने 119 रन बनाए; साकिब खान ने 7 विकेट लिए

रावलपिंडी (एजेंसी)। पाकिस्तान के खिलाफ रावलपिंडी में खेले जा रहे पहले टेस्ट के चौथे दिन श्रीलंका पहली पारी में 446 रन पर ऑलआउट हो गया। इस तरह टीम ने पाकिस्तान के 434 रन के जवाब में 12 रन की बढ़त हासिल की। श्रीलंका की ओर से धनंजय डी सिल्वा ने 167 और कप्तान कुसल मेंडिस ने 119 रन बनाए। पाकिस्तान के साकिब खान ने 7 विकेट लिए।



धनंजय डी सिल्वा और कुसल मेंडिस ने संभाली श्रीलंका की पारी- श्रीलंका ने चौथे दिन अपनी पहली पारी 404/4 के स्कोर से आगे बढ़ाई। धनंजय डी सिल्वा 167 और कुसल मेंडिस 117 रन बनाकर नाबाद थे। दोनों ने पांचवें विकेट के लिए 249 रन की साझेदारी की। धनंजय डी सिल्वा 246 गेंदों पर 167 रन बनाकर आउट हुए। उनकी पारी में 20 चौके शामिल रहे। वहीं, कप्तान कुसल मेंडिस ने 202 गेंदों पर 119 रन बनाए। उन्होंने 10 चौके और 4 छक्के लगाए। इन दोनों के अलावा कामिंदु मेंडिस ने 58 और लाहिरू उदारा ने 42 रन बनाए। श्रीलंका की पूरी टीम 117.2 ओवर में 446 रन बनाकर आउट हुई।

साकिब खान ने 7 विकेट लिए- पाकिस्तान की ओर से साकिब खान सबसे सफल गेंदबाज रहे। उन्होंने 34 ओवर में 130 रन देकर 7 विकेट लिए।

लक्ष्य सेन और किदांबी श्रीकांत ने प्री-क्वार्टर फाइनल में बनाई जगह

जापान (एजेंसी)। कुमामोटो मास्टर्स जापान 2026 बैडमिंटन टूर्नामेंट में भारतीय खिलाड़ियों ने शानदार प्रदर्शन किया है। भारत के स्टार शटलर लक्ष्य सेन और किदांबी श्रीकांत ने पुरुष सिंगल्स में अपने-अपने मुकाबले जीतकर प्री-क्वार्टर फाइनल में जगह बना ली है। लक्ष्य ने चीनी ताइपे के खिलाड़ी को सीधे गेम में हराया, जबकि पूर्व वर्ल्ड नंबर-1 श्रीकांत ने डेनमार्क के खिलाड़ी के खिलाफ पिछड़ने के बाद शानदार वापसी करते हुए जीत दर्ज की।



लक्ष्य सेन ने सीधे गेम में दर्ज की शानदार जीत- भारतीय बैडमिंटन स्टार लक्ष्य सेन ने कुमामोटो प्रीफेक्चरल जिम्नेजियम में खेले गए मुकाबले में चीनी ताइपे के ची यू जेन को 21-19, 21-18 से हराया। यह मुकाबला 49 मिनट तक चला, जिसमें लक्ष्य ने दोनों गेम में शानदार खेल दिखाया। लक्ष्य ने दबाव के बावजूद अपना संयम बनाए रखा और लगातार दो गेम जीतकर अगले दौर में जगह पक्की की। उनकी इस जीत से टूर्नामेंट में भारतीय उम्मीदों को मजबूती मिली है।

किदांबी श्रीकांत ने वापसी कर जीता मुकाबला- पूर्व वर्ल्ड नंबर-1 किदांबी श्रीकांत ने भी शानदार प्रदर्शन करते हुए प्री-क्वार्टर फाइनल का टिकट हासिल किया। हालांकि, उनका मुकाबला आसान नहीं रहा। डेनमार्क के रासमस गेमके ने पहला गेम 21-18 से जीतकर श्रीकांत पर दबाव बना दिया था। इसके बाद भारतीय खिलाड़ी ने जोरदार वापसी की और दूसरा गेम 21-16 से अपने नाम किया। निर्णायक तीसरे गेम में दोनों खिलाड़ियों के बीच कड़ी टक्कर देखने को मिली, लेकिन श्रीकांत ने 24-22 से गेम जीतकर मुकाबला अपने नाम कर लिया। यह मैच कुल 1 घंटे 8 मिनट तक चला।

स्वामी मुद्रक व प्रकाशक अन्नपूर्णा गुप्ता द्वारा भास्कर प्रिंटिंग प्रेस प्लांट नं. 535 एवं 1272, लालगुटवा रातू पुलिस स्टेशन रांची में मुद्रित तथा विजय जनरल स्टोर, हिनू चौक रांची-834002 से प्रकाशित समस्त दिवानी विवाद न्यायोचित एवं दंडित परिवादों के लिए न्यायाधिकारी रांची न्यायालय में रहेगा। पीआरबी एक्ट के तहत खबरों के चयन के जिम्मेदार। **प्रधान संपादक**-अन्नपूर्णा गुप्ता, कार्यालय नं.0651-2253830,मो.9471717919, 7895244551 ईमेलः alagpahchan@gmail.com, www.alagpahchan.com पोस्टल रजिस्ट्रेशन 2013 JHAHINO0575 RNI No.JHAHIN(2013) 66670